महात्मा गाधी

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् जब श्रद्धेय विजयसिंह पथिक, गांधीजी से मिलने गये तब सन् १९४७ में भारत विभाजन से दु:खी होकर दिल्ली के बिड़ला भवन में गांधीजी उदास होकर लेटे हुए थे।

चर्चा के दौरान गांधीजी ने कहा पथिकजी! अब तो सारे देश में तु... कार्यक्रम के अनुसार काम करना होगा।

श्री विजयसिंह पथिक

बिजौलिया किसान आन्दोलन के प्रणेता श्री विजयसिंह पथिक का जन्म सन् १८८२ में धुलण्डी के दिन (होली के दूसरे रोज) यद्यपि उत्तरप्रदेश के गुठावली ग्राम मे एक गुर्जर किसान परिवार में हुआ लेकिन उनका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत, विशेष रूप से राजस्थान रहा। देश की नरम और गरम दोनों ही क्रान्तियों मे आपका ऐतिहासिक योगदान रहा।

सन् १८५७ की सशस्त्र-क्रांति में आपके परिवार ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और देशभक्ति की भावना आपको पैतृक-विरासत में मिली।

राजस्थान केसरी पथिकजी का सारा जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा एवं २८ मई १९५४ को राजस्थान के ऐतिहासिक केन्द्र नगर अजमेर में इस धरती-पुत्र को धरती-माता ने सदा के लिए अपनी गोद में सुला लिया।

इतिहास का स्वर्ण पृष्ठ

बिजौलियां किसान-सत्याग्रह

[सर्व प्रथम सफल भारतीय किसान-आन्दोलन]

मोहनराज भण्डारी

पत्रकार

भूमिका लेखक :

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी

स्वतन्त्रता सेनानी

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक की पाण्डुलिपि, मैंने बहुत ही ध्यानपूर्वक देखा और पाया कि सारी ही सामग्री प्रामाणिक होने के साथ ही सारगर्भित है।

चूंकि बिजौलिया के ऐतिहासिक किसान-आन्दोलन से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कुछ सीमा तक में स्वयं भी जुड़ा हुआ था इसलिए मैं अधिकार पूर्वक कह सकता हूँ कि क्रान्तिकारी नेता स्व. विजयसिंहजी पथिक की संगठन और नेतृत्व-शक्ति गजब की थी जिसके आगे तत्कालीन अत्याचारी सत्ताधारियों को जिसमें ब्रिटिश-सरकार भी सम्मिलित थी, विवश होकर झुकना पड़ा।

श्रद्धेय पथिकजी ने सर्व प्रथम दुःखी-पीड़ित किसानों के लिए जितनी विपत्ति उठाई और कष्ट सहे उनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। साथ ही धन्य हैं बिजौलिया के वे तत्कालीन किसान जिन्होंने पथिकजी की आवाज को ईश्वर की आवाज मानकर अपने को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक भाई श्री मोहनराज भण्डारी एक पुराने और अनुभवी पत्रकार होने के साथ ही कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्ता भी हैं। इन्हें पथिकजी के निकट सम्पर्क में रहने का भी अच्छा अवसर मिला है।

मुझे प्रसन्नता है कि स्व. देशभक्तों की स्मृति को बनाये रखने की धुन को लेकर चलने वाले मेरे सुपरिचित सहयोगी और साथी भाई भण्डारीजी ने बिजौलिया के किसान-आन्दोलन को इस पुस्तक मे सजीव रूप से प्रस्तुत किया है।

विश्वास है, ऐतिहासिक बिजौलिया किसान-सत्याग्रह में किसी भी रूप में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी प्रामाणित होगी।

मैं हृदय से भाई भण्डारीजी के इस सद् प्रयत्न की सफलता चाहता हूँ।

नवज्योति कार्यालय
केसरगंज, अजमेर
दिनांक १५ अप्रेल '८४

(कप्तान) दुर्गाप्रसाद चौधरी
स्वतंत्रता सेनानी
एवं
प्रधान सम्पादक—
दैनिक–"नवज्योति" अजमेर,
जयपुर एवं कोटा

लेखक की ओर से—

दोहरी गुलामी से जकड़े राजस्थान में उन दिनों राजनीति की चर्चा करना भी खतरे से खाली नहीं था तब श्रद्धेय विजयसिंहजी पथिक ने दबे-पिसे और कुचले किसानों को ऐसा संगठित किया कि बिजौलिया-क्षेत्र के किसान (स्त्री-पुरुष) सिर पर कफन बांध कर शोषण, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध निकल पड़े।

बिजौलिया किसान-आन्दोलन के दौरान ब्रिटिश-सरकार, महाराणा और ठिकाने के ठाकुर ने अपनी उद्दण्ड शक्ति का जी भरकर प्रयोग किया लेकिन किसान लोग टस से मस नहीं हुए। शादी-विवाह, ओसर-मोसर सभी बन्द रखे तथा अपनी जमीनों को भी पड़त रखा। हार-थक कर इन उद्दण्ड शक्तियों को आखिर अपने हथियार डालकर समझौते के लिए विवश होना पड़ा। भारत के इतिहास में किसानों की यह प्रथम और अद्वितीय विजय थी जो सदा-सदा स्मरण रहेगी।

यद्यपि सत्याग्रह का मंत्र देश को महात्मा गांधी ने दिया था लेकिन सबसे पहले उसे क्रियात्मक रूप राजस्थान केसरी श्री विजयसिंहजी पथिक ने राजस्थान के बिजौलिया (मेवाड़) में दिया।

विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक बिजौलिया किसान-सत्याग्रह अपने समय में ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में भी खूब गूंजा और विदेशी समाचार-पत्र भी इससे अछूते नहीं रह पाये।

इस आन्दोलन के सूत्रधार थे सुप्रसिद्ध लेखक, कवि, पत्रकार, विचारक, प्राच्य विद्या विशेषज्ञ, प्रमुख शोधकर्ता एवं क्रान्तिकारी नेता स्व. विजयसिंहजी पथिक।

धुन के धनी पथिकजी को बिजौलिया आन्दोलन के समय अपने फरारी (भूमिगत) जीवन मे जितने भयंकर कष्ट उठाने पड़े तथा जिन्दगी और मौत के बीच जिस तरह सांसें लेनी पड़ीं उसकी आज हम आसानी से कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। और तो और उन्हें कई बार शौच और मूत्र-त्याग की हाजत पर भी काबू रखना पड़ा एवं हिंसक पशुओं से भरे जंगलों में डरावनी-अंधेरी और बरसाती रातें गुजारनी पड़ीं।

पथिकजी उन दिनों हिन्दी में डिप्लोमेटिक भाषा लिखने में जितने प्रवीण थे उतने ही विलक्षण बुद्धि और सामयिक सूझबूझ के धनी थे।

एक बार फरारी जीवन में पथिकजी को पुलिस ने एक मकान में चारों ओर से ऐसा घेर लिया कि बचने का कोई मार्ग ही शेष नहीं रहा तब पथिकजी जनाने (औरतों के) कपड़े पहिनकर घट्टी पीसने बैठ गये। पुलिस ने सारे मकान को छानमारा लेकिन उन्हें पथिक कहीं दिखलाई नहीं दिया और वह निराश होकर लौट गई।

इसी तरह एक बार पथिकजी अपने फरारी जीवन में दिनभर लगातार पैदल चलने की थकान के कारण कुछ विश्राम करने के लिए हिंसक पशुओं से भरे जंगल में एक चट्टान पर लेटे कि उन्हें निद्रा आ गई और इसी बीच एक चीता उनकी टांग पकड़ कर घसीटने लगा कि उनकी आंख खुल गई। बस फिर क्या था, पथिकजी ने तत्काल रिवाल्वर निकाला और चीते का काम तमाम कर पुनः चीते का सिराहना लगा कर सो गये। दूसरे दिन भोर (सबेरा) होने पर जब ग्रामीणों ने यह दृश्य देखा तो वे पथिकजी को चमत्कारी पुरुष समझने लगे।

देश की गरम और नरम दोनों ही क्रान्तियो में पथिकजी का जो सक्रिय योगदान रहा है वह निश्चय ही आज भी शोध और खोज का विषय है।

हमें खेद है कि साधनों के अभाव में पथिकजी के क्रान्तिकारी जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक में नहीं कर पा रहे हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही राजस्थान की राजनीति में आपाधापी का एक भयंकर दौर चला जिसमे पुरानों को धक्का देकर नयो ने अपने खम्भे गाड़ने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी और बिजौलिया-आन्दोलन को पर्दे के पीछे धकेले जाने के भरसक प्रयत्न हुए।

राजस्थान को जगाने वाले राष्ट्रीयता के जन्मदाता स्व. पं. अर्जुनलाल सेठी, राजस्थान को संगठित कर आगे बढ़ानें वाले श्री विजयसिंह पथिक और राजस्थान में कूट-कूट कर बलिदान की भावना भरने वाले ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के शुभ नामों से आज की पीढ़ी प्रायः परिचित नहीं है और आने वाली पीढ़ी के लिए ये नाम नये हो सकते हैं लेकिन जिन लोगों ने इनका कार्यकाल

देखा है वे आज भी इस त्रिमूर्ति के त्याग, बलिदान और सेवा के आगे नत-मस्तक हैं।

क्या हम सेठी, पथिक, बारहठ, स्वामी कुमारानन्द आदि देशभक्तों को विस्मृति की ओट मे रखकर कृतघ्न ही बने रहेंगे ?

देश में विशेषकर राजस्थान में आजादी के ३७ वर्षों पश्चात् भी आम किसानों की स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है। शोषण और अत्याचारों से पीड़ित असंगठित किसानों के लिए बिजोलिया का किसान-आन्दोलन एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज है जिससे किसानों एवं किसान-कार्यकर्ताओं को नई प्रेरणा और आत्म-विश्वास प्राप्त होगा।

यह दावा तो हम नहीं करेंगे कि प्रस्तुत पुस्तक सभी दृष्टियों से पूर्ण है लेकिन अत्यन्त नम्रता के साथ इतना अवश्य कहना चाहेंगे कि बिजोलिया किसान-आन्दोलन से सम्बन्धित अधिक से अधिक और प्रामाणिक सामग्री देने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

सच बात तो यह है कि पथिकजी का सम्पूर्ण जीवन उन्हीं के द्वारा रचित कविता के इस छन्द को पूरी तरह समर्पित था—

यश वैभव सुख की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन रहे, न रहे।
यदि इच्छा है तो यह है, जग में स्वेच्छाचार, दमन न रहे॥

मोहनराज भण्डारी
समाचार-सम्पादक—
दैनिक "नवज्योति"

६२, महावीर कॉलोनी
पुष्कर रोड, अजमेर (राज.)
दिनाक १ मई १९८४

"बिजौलिया किसान-सत्याग्रह"

| प्रथम संस्करण : कुछ प्रतिक्रियाएं |

☐ पण्डितरत्न जैन मुनि अभयमुनिजी

[दर्जनों धार्मिक पुस्तकों के लेखक
एवं आचार्य स्व. श्री हगामीलालजी
महाराज के उत्तराधिकारी]

☐ श्रीमती जानकीदेवी पथिक

[धर्मपत्नी स्व. श्री विजयसिंह पथिक]

☐ श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

[वयोवृद्ध सुप्रसिद्ध लेखक-पत्रकार
एवं
भू. पू. सदस्य—राज्य सभा, दिल्ली]

☐ श्री रामनारायण चौधरी

[वयोवृद्ध गांधीवादी नेता, प्रसिद्ध पत्रकार,
स्वतंत्रता सेनानी एवं स्व० पथिकजी के प्रमुख साथी]

☐ श्री शोभालाल गुप्त

[भू. पू. सहायक सम्पादक—"हिन्दुस्तान" दैनिक,
स्वतंत्रता सेनानी एवं बिजौलिया किसान-सत्याग्रह
के प्रमुख कार्यकर्ता]

☐ श्री बालकृष्ण गर्ग

[संयोजक–राजस्थान प्रदेश
कांग्रेस कमेटी (आई)—
स्वतंत्रता सेनानी प्रकोष्ठ, जयपुर]

■

☐ श्री राजेश पाइलट

संसद-सदस्य (कांग्रेस-आई)
नई दिल्ली

■

☐ श्री नरेन्द्रकुमार बडाना

[व्याख्यता–राजकीय महाविद्यालय, अजमेर]

■

☐ श्री ओंकार पारीक

[सचिव–राजस्थानी भाषा
साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर]

■

☐ श्री रामस्वरूप गर्ग

[संयोजक–प्रेम-पत्र, प्रचार-प्रकाशन
जैन विश्व भारती, लाडनू]

■

☐ श्री भेरूसिंह गुर्जर

विधायक [कांग्रेस आई]
मारवाड जक्शन

अजमेर,
१० दिसम्बर '८४

सुविज्ञवर श्री भण्डारीजी,

धर्मवृद्धि के सन्देश के साथ।

यद्यपि मैं श्रमण भगवान श्री महावीर प्रभु के धर्म से सम्बद्ध श्रमण हूँ। मेरा जीवन निवृत्ति प्रधान है फिर भी मैं मानता हूँ कि राजनीति का धर्मनीति से अनन्याश्रित सम्बन्ध है। "शस्त्र चिन्ता से मुक्त हुए बिना शास्त्र चिन्तन नहीं किया जा सकता।" यह एक सैद्धान्तिक सत्य है। इसी सन्दर्भ में आप द्वारा प्राञ्जल भाषा में लिखी गई "बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" पुस्तिका पढ़ी।

वर्तमान भारत का यह पहला अहिंसक सफल किसान-आन्दोलन था जो महान क्रान्तिकारी नेता श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व एवं दिशा-निर्देशन में लड़ा गया था। उसी का परिणाम आज का स्वतंत्र भारत है।

मैं चाहूँगा कि समाज भण्डारीजी के सार्वजनिक जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित हो। समाज में आप जैसे रत्न बिरले ही होते हैं। मैंने आपको निकट से देखा है, आप सहृदय है, ऐसा मेरा आत्म-विश्वास है।

सच्ची स्वतन्त्रता तभी मानी जायेगी कि भारत का प्रत्येक नागरिक बिना किसी हिचकिचाहट के अपने अधिकारों का उपयोग करने में किसी प्रकार के भय की आशंका नहीं करे।

आपके प्रति मेरे आकर्षण का एक प्रमुखतम कारण यह रहा कि मैं आप में, दिव्यदेवलोकों को प्राप्त मेरे आचार्य भगवन्त श्री हगामीलालजी म. सा के प्रति निर्व्याज रूप मे भक्तिभाव देखता रहा हूँ।

मैं अधिकार पूर्वक भाषा में कह सकता हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री मोहनराजजी भण्डारी 'एक तपे हुए' वरिष्ठ पत्रकार होने के साथ-साथ सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ता भी हैं।

मेरी हार्दिक कामना है कि पाठक बन्धु प्रस्तुत पुस्तक द्वारा सच्चे अर्थों में स्वतन्त्रता प्राप्ति का रसास्वादन प्राप्त कर सच्चे और अच्छे भारत का नवनिर्माण करें।

—अभयमुनि

मथुरा
१-७-८४

प्रिय भण्डारीजी,

प्रसन्न रहो। पत्र व दो पुस्तकें मिली। मैंने पूरी पढी। पुस्तक बहुत बढिया व रोचक है। अधिकतर किसानो के लिए।

पुस्तक पक्षपात रहित व न्याय सगत है। घटनाएं ज्यों की त्यों दी है।

जिन पथिकजी को लोग भूल गये थे उनके भक्तों ने उन्हे फिर प्रकाश में ला दिया है। श्री दुर्गाप्रसादजी ने पुस्तक की भूमिका भी अच्छी लिखी है।

आपकी मेहनत सफल हुई है।

—जानकीदेवी पथिक

●

फीरोजाबाद
२५ अगस्त '८४

प्रिय भाई भण्डारीजी,

प्रणाम।

आपका भेजा हुआ ग्रन्थ "बिजौलिया-किसान-सत्याग्रह" मिला। तदर्थ मैं आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूं। निस्सदेह इस पुस्तक को छापकर आपने जनता की महत्वपूर्ण सेवा की है। आपको शायद यह पता न होगा कि महात्मा जी ने दीनबन्धु ऐण्ड्रूज से पथिकजी के बारे मे जो कुछ कहा था—"*Pathik is a worker, others are talker*" इत्यादि, उसे मैंने ही चौधरी साहब को लिख भेजा था। महात्माजी उस समय सी. आर. दास के मकान पर ठहरे हुए थे और वहीं दीनबन्धु ऐण्ड्रूज ने उनसे पथिकजी के बारे मे पूछा था। मैं वहीं उस समय मौजूद था। शान्ति निकेतन मे पथिकजी को ऐण्ड्रूज साहब से मैंने मिलाया था। जब पथिकजी मुकुटबिहारीलाल भार्गव के चुनाव के लिए मौलाना आजाद से मिलने कलकत्ता आये थे तब वह मेरे पास ही ठहरे थे।

विनीत—
बनारसीदास चतुर्वेदी

दिल्ली,
१९-६-८४

प्रिय भाई भण्डारीजी,

सस्नेह वन्दे। "बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" की दो प्रतियाँ भोजन करते समय मिली, देखने को इतनी बेसब्री हुई कि जल्दी-जल्दी हाथ मुंह धोकर एक बार तो सरसरी नजर से देख गया। फिर अन्त से शुरू कर के आध तक आया। फिर शुरू से आखिर तक पढ़ी और चौथी बार ध्यान से पढ़कर इतनी बेसब्री हुई कि यह पत्र लिखने बैठ गया।

इस में तुमने अपनी पत्रकारिता के कौशल को सुन्दर ढंग से संजोया है। भाई की भूमिका जितनी छोटी उतनी ही बढ़िया है। तुम्हारे और "दीपक" के मन्तव्य भी सुन्दर हैं। परन्तु सबसे उत्कृष्ट तुम्हारी सम्पादन-कला है।

एक जगह तुम कंजूसी कर गये और वह है भाई के बारे में। यूं तो हम चौधरी परिवार के साथ राजस्थान के सार्वजनिक जीवन मे अन्याय ही किया है क्योंकि तुम्ही बताओ एक ही परिवार का इतना योगदान राजस्थान के निर्माण मे और किसका हुआ है? मेरे और अंजनादेवी के प्रति तो तुम्हारा पक्षपात ही नजर आया। पथिकजी पर तुमने विविध व्यक्तियों के जो उद्गार उध्दृत किये हैं उनमे सबसे सुन्दर भाई शोभालालजी के है।—————

बिजौलिया समझौते का चित्र है तो काल्पनिक मगर अच्छा है। ———

बिजौलिया आन्दोलन और उसके समझौते का हालेण्ड पर इतना अच्छा असर पड़ा था कि वे जब रिटायर होकर विलायत लौटे तो गांधीजी के दर्शन के लिए सेवा ग्राम भी आये और मेरे कमरे मे आकर मुझ से भी मिले थे।

पथिकजी पर विभिन्न व्यक्तियों की सम्मतियां देकर अच्छा किया। कुल मिलाकर पुस्तक अच्छी है।

मंगलाकांक्षी—
रामनारायण चौधरी

नई दिल्ली,
२ जुलाई '८४

प्रिय भाई भण्डारीजी,

सप्रेम वन्दे। आपका पत्र एवं "बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" पर आपकी लिखी पुस्तिका मिली। आपके इस सद्प्रयास के लिए मैं आपको और आपके सभी सहयोगियों को बधाई देता हूँ। आप थोड़े से उन लोगों में हैं जो राजस्थान के पुराने देशभक्त नेताओं—सेठीजी, पथिकजी, बारहठजी आदि की सेवाओं का समुचित स्मरण करते रहते हैं। ये लोग हमारी आजादी की नींव के पत्थर थे और उनकी कुर्बानियों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।————

आपका स्नेही—
शोभालाल गुप्त

●

जयपुर,
दिनांक २९.६.८४

भाई मोहनराजजी,

"बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" नामक पुस्तक मिली। आपने इसका प्रकाशन करा कर एक बहुत बड़ा उपकार किया है। बिजौलिया का किसान-सत्याग्रह अपने ढंग का एक अनोखा जन-आन्दोलन था। इस पुस्तिका का प्रचार खूब होना चाहिए बल्कि स्कूलों के पाठ्यक्रमों में भी इसका समावेश होना चाहिए।

अ. भा. कांग्रेस कमेटी की ओर से कांग्रेस शताब्दी वर्ष पर, देश की आजादी के समय हुए आन्दोलनों का एक बहुत बड़ा इतिहास कई खण्डों में प्रकाशित किया जा रहा है। राजस्थान के सभी जिलों से जितनी भी सामग्री उपलब्ध हो सकी हमने एकत्रित करके वहाँ भेजी है। मैं चाहता हूँ कि इस पुस्तिका को भी वहाँ भेज कर उपरोक्त इतिहास में इसका महत्वपूर्ण ढंग से प्रकाशन हो सके, इसका प्रयत्न किया जाय। आप उचित समझें तो इसकी दो प्रतियाँ देहली भेजने के लिए मुझे अजमेर के पते पर भिजवा देने की कृपा करें। इसी सम्बन्ध में मैं दिनांक ४ जुलाई की रात्रि की ट्रेन से देहली जा रहा हूँ। यदि इसके पूर्व ही मुझे ये पुस्तिकाएं मिल जाय तो मैं समक्ष में भी चर्चा कर लूंगा।

भवदीय—
बालकृष्ण गर्ग

New Delhi,
Date 11.7.84

Dear Shri Bhandari,

I have gone through your booklet "Bijaulia Kisan Satyagrah" your attempt in depicting the heroic role played by Shri Vijay Singh Pathik during freedom struggle is indeed laudable. It is only through such literature that the work of veteran leaders *remain alive in the minds of the masses and they can realise* the sacrifice made by them in achieving the independence which they enjoy.

I Congratulate you and hope that you will continue with this good work and enlighten the public.

With regards.

Yours Sincerely
Rajesh Pilot
Member of Parliament

•

अजमेर,
२४ अक्टूबर, १९८४

आदरणीय भण्डारीजी,

"बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" पुस्तक आज के वातावरण में प्रासंगिक व उपादेय है। स्वर्गीय पथिकजी जैसे महान् स्वतन्त्रता सेनानी के कृतित्व को प्रकाश में लाने के लिये समाज आपका ऋणी रहेगा। यह पुस्तक युवा-पीढ़ी के चिन्तन को नई दिशा देगी और उनकी अथाह शक्ति को समाज के उत्थान हेतु प्रयुक्त करने के लिये प्रेरित करेगी। देशभक्तों को प्रकाश में लाने का आपका यह प्रयास आपको भी सदा के लिये स्मरणीय बना देगा।

स्नेहाकांक्षी —
नरेन्द्रकुमार बढाना
व्याख्याता :
राजकीय महाविद्यालय

बीकानेर,
११.९.८४

आदरजोग मोहनराजजी,

आपकी महर मोटी । आपकी लिखी थकी "बिजोलिया किसान-सत्याग्रह" की पोथी भणी । राजस्थान रै सपूतां रो स्वतन्त्र्य युगीन आन्दोलन रो आगो चितराम निजरां घूम ग्यो ।

आजादी रै आन्दोलन रा गांधीवादी कार्यकर्तावां अर नेतावां रा घणा खरा चेहरा आज जद राजनीति की कालमिस सूं पुत गया है, आपरी पोथी मायला पूज्य पथिकजी, वर्माजी, हरिभाईजी, अर्जुनलालजी सेठी, रामनारायणजी चौधरी अर आप स्वयं एक बेलाग, बेलोस, बेदाग चरित्र री छाप लियां सीधा ऊभा दीसै ।

आ ऊभ आ सीध बणी रेवै । गन्दै साहित्य अर कामुकता भरचै प्रकाशनां रै इयै चिन्ताकारी हिंसक वातावरण री मानसिक संतापणा रै इण जुग में आपरी पोथी सूं म्हारै सरीखै सुतंतर स्वाभिमानी सहज लेखक-कवि-पत्रकार धर्मी नागरिक री आत्मा नै घणी सोरप मिली अर आस बधी है क आपरी व्हाली लेखणी सूं आपणे देस-प्रदेस रा लाडला आजादी रा सिपाही सदा पोखीजता रैसी । आपने म्हारी विनय !

आपरो हीज—
ओंकार पारीक
सचिव—राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं
संस्कृति अकादमी, बीकानेर

लाडनूं,
१८ जुलाई ८४

बन्धुवर भण्डारी जी,

सादर नमस्कार। आप द्वारा प्रेषित "बिजौलिया किसान-सत्याग्रह" पुस्तिका प्राप्त कर परम प्रसन्नता है। राजस्थान के मुख्यमंत्रीजी के साथ विमोचन-समय का आपका चित्र देखा तब से ही इसे देखने की उत्सुकता थी, आपने सस्नेह इसे भिजवाने की कृपा की इसके लिए आपका हार्दिक आभारी हूँ। आपकी पुस्तक को देख अनेक स्मृतियां जाग उठी, अनेक साथियों का स्मरण सजग हो उठा। इसका लेखन, मुद्रण तथा प्रमुख पृष्ठ सभी घटना के महत्व के अनुरूप गौरवपूर्ण है। छोटी सी पुस्तिका में आपके भावनाशील हृदय और अनुभवी पत्रकार ने "गागर में सागर" भर दिया है। आपने राष्ट्रीय बुजुर्गों के प्रति आपका श्रद्धाभाव समर्पण की सेवावृत्ति अत्यन्त सराहनीय है, जो अब दुर्लभ होती जा रही है। इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों को चित्रों से सज्जित कर आपने "सोने में सुगंध" ला दी है। तत्कालीन राष्ट्रगीतों का समावेश भी सराहनीय है।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर से प्रकाशित सन् १९७७ में श्री शंकरसहायजी सक्सेना तथा डॉ० कु० पदमजा शर्मा लिखित बिजौलिया किसान आन्दोलन का इतिहास हमने देखा है, पर आपकी यह छोटी रचना कई दृष्टियों से अपना एक अलग महत्व रखती है। इस सुन्दर रचना के लिए मेरा हार्दिक सत्कार स्वीकार करें।

आपका भाई—
रामस्वरूप गर्ग

मारवाड़ जंक्शन
२३.९.८४

आदरणीय श्रीमान् भण्डारी साहब,

———पुस्तक अच्छी लगी, जीवन में उमंगें लाने वाले विचार संकलित है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक मेरी ही तरह के नौजवानों का मार्ग प्रशस्त करेगी।

कृपया स्नेह पूर्ववत बनाये रखें एवं मार्ग-दर्शन कराते रहें।

आदर के साथ—

आपका अपना
भैरूंसिंह गुर्जर
विधायक (कांग्रेस आई)

द्वितीय संस्करण की भूमिका

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि बिजोलिया किसान-सत्याग्रह पुस्तक का द्वितीय संस्करण बहुत थोड़े से अन्तराल में प्रकाशित हो रहा है।

देश की पहली सफल बिजोलिया किसान-क्रान्ति और उसके प्रणेता सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री विजयसिंहजी "पथिक" को लगातार पर्दे के पीछे धकेल कर राजस्थान ने खोया ही खोया है। ऐसी स्थिति में मेरे निकटतम सहयोगी और साथी भाई श्री मोहनराज भण्डारी ने बिजोलिया किसान-सत्याग्रह और क्रान्तिकारी किसान-नेता श्रद्धेय विजयसिंहजी पथिक के सम्बन्ध मे विचारोत्तेजक और जानदार पुस्तक लिखकर राजस्थान पर लगे कृतघ्नता के कलंक को धोने का वस्तुतः एक छोटा-सा किन्तु सफल प्रयास किया है जो निश्चय ही प्रशंसनीय है।

प्रस्तुत द्वितीय संस्करण में भाई भण्डारीजी ने काफी सामग्री और जोड़कर पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने का सराहनीय प्रयत्न किया है।

पूर्व की भांति यह द्वितीय संस्करण भी उत्तरोत्तर लोकप्रिय हो, यही मंगल कामना है।

नवज्योति कार्यालय
केसरगंज, अजमेर
२५ दिसम्बर १९८४

(कप्तान) दुर्गाप्रसाद चौधरी
स्वतंत्रता सेनानी
एवं
प्रधान सम्पादक—
दैनिक-"नवज्योति" अजमेर,
जयपुर एव कोटा

द्वितीय संस्करण : दो शब्द लेखक की ओर से

देश की स्वतंत्रता और दु:खी-पीड़ित एवं बिखरे किसानों के लिए श्रद्धेय विजयसिंहजी "पथिक" ने जितने भयंकर कष्ट उठाये और पीड़ाएं सहन की उनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता सुभाष बाबू से पूर्व ही पथिकजी ब्रिटिश-सरकार के लिए सिर-दर्द बन चुके थे और देशी रजवाड़े पथिकजी के नाम से थर-थर कांपते थे। यह पथिक जैसे जादूगर का ही काम था जिसने दबे-पीसे और कुचले बिजौलिया के किसानों को फिर से संगठित किया और देश में सर्व प्रथम उन्हें विजयी बनाया।

बिजौलिया की इस पहली सफल किसान-क्रान्ति ने देश को एक नई दिशा दी।

श्रद्धेय पथिकजी मौलिक प्रतिभावान चिन्तक थे। वे बहुत ही दूरदर्शी एवं सुविख्यात साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की भाँति मानव-स्वभाव के अच्छे ज्ञाता थे। उनके हर कार्य और कार्य-प्रणाली को आसानी से नहीं समझा जा सकता है। कौन सा कार्य कब, कहाँ और कैसे किया जाये इसके पथिकजी अपने समय के श्रेष्ठ विशेषज्ञ थे। अन्यथा बिजौलिया किसान-सत्याग्रह तीन काल में भी सफल नहीं हो सकता था।

वैसे तो बिजौलिया किसान सत्याग्रह की कहानी बहुत लम्बी और जानदार है जिसमें स्थान-स्थान पर पथिकजी के चमत्कारी कार्यों के दर्शन होते हैं लेकिन सीमित साधनों के कारण प्रस्तुत पुस्तक में कुछ ही घटनाओं का समावेश किया गया है।

देश आजाद हुआ। आपाधापी की जबरदस्त दौड़ चली। विश्व प्रसिद्ध बिजौलिया किसान-सत्याग्रह और उनके प्रणेता पथिकजी को पर्दे की ओट में

धकेला गया। फलस्वरूप स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व की भांति ही स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी लगभग ७ वर्ष तक (जब तक वे जीवित रहे) उन्हें निर्वासित सा जीवन बिताना पड़ा और सन् १९५४ की २८ मई को इसी ऐतिहासिक नगरी अजमेर में अल्पकालीन बीमारी के दौरान वे चल बसे। सच बात तो यह है कि पथिकजी ने समाज और राष्ट्र को दिया ही दिया, लिया कुछ नहीं।

कितनी बड़ी विडम्बना है कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी पथिकजी को तिल-तिल कर जलने को मजबूर किया और मृत्यु के बाद भी हम उनके साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के रूप में उस महान् आत्मा को पुनः सादर श्रद्धांजलि।

मोहनराज भण्डारी
समाचार-सम्पादक—
दैनिक "नवज्योति"

६२, महावीर कॉलोनी,
पुष्कर रोड, अजमेर (राज.)
१ जनवरी, १९८५

——बिजौलिया–ठिकाना——

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में एक ऊंचे पठारी प्रदेश का नाम है—ऊपरमाल। और इसी ऊपरमाल प्रदेश में स्थित है बिजौलिया का ठिकाना।

राव शुभकरण सवाई के स्वर्गवासी होने पर उनका पुत्र केशवदास बिजौलिया की गद्दी पर बैठा लेकिन उस समय मेवाड़ की स्थिति बड़ी कमजोर हो गई थी। आपसी झगड़े–टेंण्टों के कारण मेवाड़ शक्तिहीन हो गया था अतः दौलतराव सिंधिया ने मेवाड़ का बहुत सा क्षेत्र दबा लिया। बिजौलिया का ठिकाना चूंकि मेवाड़ की पूर्वी सीमा पर था और ग्वालियर राज्य से मिला हुआ था अतएव दौलतराव सिंधिया ने विक्रम संवत् १८४८ में बिजौलिया पर अधिकार कर लिया। बिजौलिया के राव केशवदास उस समय बालक थे इसलिये चुनौतीपूर्ण विरोध भी न किया जा सका लेकिन जब केशवदास बड़े हुए तो विक्रम संवत् १८५६ में बिजौलिया पर उन्होंने पुनः कब्जा कर लिया। राव केशवदास की इस विजय में बिजौलिया के किसानों ने भरपूर सहायता की और सहयोग दिया।

इतना ही नहीं, राव केशवदास ने जब पुनः बिजौलिया पर कब्जा किया तब ठिकाने की आर्थिक हालत बहुत ही कमजोर थी। अतः किसानों ने ठिकाने की स्थिति को सुदृढ करने हेतु (राव केशवदास की मांग पर) ठिकाने द्वारा निर्धारित माल गुजारी के अतिरिक्त राजस्व देना सहर्ष स्वीकार किया। स्मरण रहे कि उस समय पैदावार पर माल गुजारी के अलावा अन्य कोई कर (टैक्स) नहीं था।

राव केशवदास के कार्यकाल में किसानों और ठिकाने में इतने मधुर सम्बन्ध थे कि ठिकाने या किसानों के दुःख–सुख में एक–दूसरे का पूरा–पूरा सहयोग रहता था।

खेती की उपज का हिस्सा भोग (राजस्व) गांव के पंच मिल कर जितना निश्चित कर देते थे, ठिकाने के कर्मचारी उतना ही मान लेते थे। जब किसान पैदावार की निर्धारित राशि (भोग–उपज का एक

हिस्सा) जमा कराने जाता और जागीरदार को यदि यह ज्ञात हो जाता कि उस किसान के उस वर्ष लड़के या लड़की की शादी हुई या अन्य कोई बड़ा खर्च हो गया है तो वे उस वर्ष उससे निर्धारित राजस्व भी नही लेते। इतना ही नहीं, कुएं खोदने और बैल खरीदने हेतु ठिकाने की ओर से किसानों को रिण एवं सहायता मिलती थी।

इसी प्रकार जब कभी ठिकाने में शादी-विवाह या मुसीबत का समय आता तो बिजोलियावासी आर्थिक सहयोग के साथ सभी प्रकार की बेगार भी स्वेच्छा से देना अपना कर्त्तव्य एवं धर्म समझते थे। इस प्रकार दोनों ओर से अपनेपन की भावना के सहज ही दर्शन हो जाते थे।

राव केशवदास के स्वर्गवास होने पर श्री गोविन्ददास ने ठिकाने की बागडोर सम्भाली। चूंकि ठिकाने की आर्थिक स्थिति सुधर गई तो किसानों ने स्वेच्छा से अतिरिक्त सहायता करना बन्द कर दिया। इधर ठिकाने ने राजस्व में बढ़ोतरी कर उपज का चतुर्थांश लेना प्रारम्भ कर दिया। फिर भी ठिकाने और किसानों के सम्बन्ध अच्छे बने रहे।

राव गोविन्ददास का स्वर्गवास वि. सं. १९५० के आस-पास हुआ और राव कृष्णदास ठिकाने के मालिक हुए। आपके शासनकाल में ठिकाने की नीति में भारी परिवर्तन आया। किसानों से अधिक से अधिक धन बटोरने की नई नीति अपनाई गई और इस नई नीति को क्रियान्वित करने हेतु ठिकाने के अनुभवी और पुराने कर्मचारियों को हटा कर नये अहलकार और कर्मचारी नियुक्त किये गये। इन लोगों ने नये-नये कर लगाने के अलावा राव केशवदास के समय किसान निर्धारित राजस्व के अतिरिक्त स्वेच्छा से जो अधिक आर्थिक सहयोग एवं बेगार-सहायता करते थे उसे अनिवार्य करों का रूप दे दिया। यहीं से ठिकाने और किसानों के बीच चल रहे अपनेपन का अन्त होना प्रारम्भ हुआ और आगे चल कर किसानों और ठिकानों के बीच संघर्ष की शुरूआत हुई। जब-जब किसानों ने अपने पर बढ़ रहे अन्याय और अत्याचारों का विरोध करने का साहस किया तो उन्हे तिहरी उद्दण्ड शक्ति—जागीरदार, महाराणा और ब्रिटिश-सरकार ने कुचल कर रख दिया।

श्री शंकरसहाय सक्सेना एवं कु० डा० पद्मजा शर्मा द्वारा लिखित "बिजौलिया किसान आन्दोलन का इतिहास" के अनुसार *बिजौलिया में उस समय साधू सीतारामदास एक ऐसे उत्साही, शिक्षित युवक थे जिनके हृदय में देश-सेवा और किसान-सेवा की गहरी लगन थी। वाराणसी से शिक्षा प्राप्त कर वे "वेंकटेश्वर" समाचार-पत्र मे पत्रकारिता का कार्य करने के लिए बम्बई जा रहे थे तो बड़ौदा में एक होटल में सहसा उनकी "सरस्वती" के यशस्वी सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी से भेंट हो गई। श्री द्विवेदी ने उन्हें प्रेरणा दी कि उन जैसे शिक्षित और भावना वाले युवक को अपने निवास-क्षेत्र मेवाड़ में ही कार्य करना चाहिए। आचार्य द्विवेदी से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने बिजौलिया में ही कार्य करने का निश्चय किया। *

साधू सीतारामदास ने बिजौलिया में नायब मुंसरिम मोही के ठाकुर डूंगरसिंह भाटी एवं श्री ईश्वरदान आसिया के सहयोग से सम्वत् १९७२ में विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की। इस संस्था का नियमित साप्ताहिक अधिवेशन होता था जिसमें देश की दशा और समाज सुधार आदि विषयों पर भाषण एवं चर्चाएं होती थी। अधिवेशन में ठिकाने और राज्य की समस्याओं पर भी खूब चर्चा होती। प्रारम्भ में जो भी जागृति का कार्य बिजौलिया में हुआ उसमें साधू सीतारामदास का प्रमुख हाथ था तथा वे ही बिजौलिया की जनता के मार्ग-दर्शक थे।

बिजौलिया के किसानों ने सामूहिक रूप से २-४ बार अन्याय और शोषण के विरुद्ध छोटे-मोटे संघर्ष किये मगर तिहरी उद्दण्ड शक्ति के कारण किसान वांच्छित सफलता प्राप्त करने में असफल रहे।

विद्या प्रचारणी सभा के अध्यक्ष एव नायब मुंसरिम मोही के ठाकुर डूंगरसिंह भाटी जो पहिले ही श्री विजयसिंह पथिक के गहरे सम्पर्क में आ चुके थे ने साधू सीतारामदास को पथिकजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए सलाह दी कि यदि वे किसी तरह पथिकजी को बिजौलिया ला सके तो यहाँ किसानों का प्रभावशाली सबल संगठन खड़ा हो सकता है।

संयोग की बात है कि थोड़े समय पश्चात् ही चित्तौड़गढ़ की

विद्या प्रचारिणी सभा के वार्षिक अधिवेशन के लिए बिजौलिया की विद्या प्रचारिणी सभा को अपने प्रतिनिधि भिजवाने का निमंत्रण मिला और बिजौलिया की ओर से साधू सीतारामदास एवं श्री मगनलाल शर्मा चित्तौड़ पहुंचे। इससे पूर्व इधर श्री विजयसिंह पथिक ने टाड़गढ़ (अजमेर) की नजरबन्दी से फरार होकर तथा परिस्थितियों की गम्भीरता को मद्दे नजर रखते हुए निश्चय कर लिया था कि अब राजस्थान में रह कर ही कार्य करना उपयुक्त होगा। राजस्थान के अपने प्रवास के दौरान पथिकजी कई छोटे-मोटे जागीरदारों के सम्पर्क मे आ चुके थे जिन में देशभक्ति और क्रान्ति के प्रति लगाव था।

कांकरोली में एक छोटासा क्रान्तिकारी दल दाणी (चुंगी अधिकारी) के नेतृत्व में सक्रिय था और जब इस दल को पथिकजी के बारे में जानकारी मिली तो इसने पथिकजी को कांकरोली पधार कर दल का मार्ग-दर्शन करने का आग्रह किया। फलस्वरूप पथिकजी कांकरोली आ गये और राजसमन्द से दूर एक भाणा नामक गांव में रह कर उन्होंने एक पाठशाला स्थापित कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। पथिकजी का नेतृत्व पाकर कांकरोली का क्रान्तिकारी दल अधिक सक्रिय हो गया। सरकार को क्रान्तिकारी दल की भनक मिलते ही गुप्तचरों का आवागमन इस क्षेत्र में बढ़ गया। जब पथिकजी ने देखा कि अब इस गांव में रहना खतरे से खाली नहीं है तब वे वहां से खिसक कर मोही ग्राम पहुंचे और पूर्व परिचित श्री डूंगरसिंह भाटी के यहाँ रहते हुए एक पाठशाला चलाने लगे। थोड़े समयग बाद मोही से अधिक सुरक्षित स्थान की खोज करते पथिकजी जहाजपुर पहुंचे और वहाँ भी उन्होंने एक पाठशाला चलाई। यह स्थान भी उन्हें सुरक्षित प्रतीत नहीं हुआ और यहाँ से पथिकजी चित्तौड़ चले गये। चित्तौड़ में उन्होंने विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की एवं पुठोली ठाकुर रामप्रताप-सिंह को प्रेरणा देकर क्षत्रिय सभा की स्थापना करवाई जिसके पीछे पथिकजी का उद्देश्य था कि राजपूतों को संगठित कर क्रान्ति के लिए उनको भी साथ लिया जाये। पथिकजी जो भी संगठन, सभा या पाठ-शाला आदि स्थापित करते-कराते उसके पीछे सदा उनका यही उद्देश्य रहता था कि विभिन्न स्तरों पर देशवासियों को संगठित कर उन्हे क्रान्ति के लिए तैयार किया जाये। विद्या प्रचारिणी सभा की पथिक-जी ने कई शाखाएं भी आस-पास के क्षेत्र में स्थापित करवा दी थी।

चित्तौड़ विद्या प्रचारिणी सभा के अधिवेशन में जब प्रथम बार साधू सीतारामदास श्री पथिकजी के सम्पर्क में आये तो पथिकजी के रोबीले एवं विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व से बहुत ही प्रभावित हुए और उन्हें बिजौलिया पधारने के लिए मना लिया। पथिकजी ने जल्दी ही बिजौलिया पहुंचने का आश्वासन दिया।

श्री विजयसिंह पथिक का पूर्व नाम भूपसिंह था। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले में मालागढ़ कस्बे के समीप गुठावली ग्राम में सन् १८८२ में धूलण्डी (होली के दूसरे दिन) एक गुर्जर किसान परिवार में हुआ। आपके दादा सन् १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य-युद्ध में मालागढ़ नवाब की सेना के सेनापति के रूप में ब्रिटिश-सरकार से युद्ध करते हुए शहीद हुए। आपके ताऊ आदि भी बाद में छापामार युद्ध करते रहे।

श्री भूपसिंह (विजयसिंह पथिक) की माता श्रीमती कमल कुंवर भी बड़ी साहसी और वीर महिला थीं। सन् १८५७ के स्वतंत्रता-युद्ध के दौरान जब परिवार के अन्य लोग छापामार युद्ध में लगे हुए थे तब श्रीमती कमलकुंवर ने भी कई अंग्रेजों को बन्दी बनाया। दुर्भाग्य की बात है कि १८५७ की क्रान्ति असफल हो गई।

इसके बाद भूपसिंह का परिवार पुन. अपने ग्राम गुठावली में आ बसा।

एक दिन अचानक भूपसिंह के पिता श्री को गिरफ्तार करने पुलिस उनके घर पहुंची। एक ओर पिता श्री बीमार थे तो दूसरी ओर उस समय घर पर कोई मर्द नहीं था। ऐसी विकट स्थिति में श्रीमती कमल कुंवर ने अद्भूत साहस का परिचय दिया और कुछ महिलाओं को साथ लेकर लाठियों से पुलिस-दल पर आक्रमण कर दिया फलस्वरूप किराये के टट्टू प्राण बचा कर भाग गये।

यह भी विधि की विडम्बना है कि जब भूपसिंह गर्भ में थे तब उनके पिता श्री का देहावसान हो गया और जब वे ५ वर्ष के हुए तब माता भी चल बसी।

माता-पिता की छत्र-छाया से वंचित ५ वर्षीय बालक भूपसिंह

का बचपन अपने बहनोई तथा चाचा के साथ बिताने का छुटपुट उल्लेख तो मिलता है लेकिन विस्तृत विवरण नही। साथ ही बालक भूपसिह की शिक्षा-दीक्षा का भी प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नही है। लेकिन इतना निश्चित है कि भूपसिह किसी कालेज या यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी नही रहे फिर भी हिन्दी, सस्कृत, अंग्रेजी और फारसी आदि भाषा का उन्हे पर्याप्त ज्ञान था। अपनी लगन और प्रतिभा से वे आगे चल कर कट्टर देशभक्त, क्रान्तिकारी नेता, सफल संगठक, प्रसिद्ध लेखक-कवि, सम्पादक एवं पुरात्व विषयक प्रमुख शोधकर्ता बन गये।

इन्दौर प्रवास के समय वे अपने चाचा श्री बलदेवसिह के पास रहते थे और आपके चाचा सेना में सुबेदार थे। बतलाया जाता है कि यही पर युवक भूपसिह ने कड़ा परिश्रम कर विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया तथा वे यही पर सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता शचीन्द्र सान्याल के सम्पर्क मे आये। श्री सान्याल के माध्यम से ही भूपसिह महान् क्रान्तिकारी नेता रासविहारी बोस से मिले और उनके क्रान्तिकारी दल मे सम्मलित हो गये।

भूपसिह की क्रान्तिकारी गतिविधियों का पूरा विवरण कही पर भी उपलब्ध नही है क्योकि क्रान्तिकारी कभी भी अपने क्रियाकलापों का जिक्र नही करते थे। अत. भूपसिह के क्रान्तिकारी जीवन का इतिहास आज भी प्रायः अज्ञात है।

क्रान्तिकारी दल के नेता श्री रासविहारी बोस ने भूपसिह को राजस्थान मे क्रान्ति का कार्य करने हेतु भिजवाया।

क्रान्ति के कार्य को तेजी से राजस्थान में फैलाने हेतु भूपसिह ने सर्व प्रथम अजमेर आकर यहाँ के रेलवे वर्क शॉप में नौकरी की और वर्कशॉप के एक अनुभवी मिस्त्री की सहायता से, बम, बन्दूक एव रिवाल्वर बनाना सीख लिया।

इधर खरवा (अजमेर) ठाकुर राव गोपालसिह भी ब्यावर के प्रसिद्ध उद्योगपति एव देशभक्त दामोदरदास राठी के माध्यम से श्री रासबिहारी बोस के सम्पर्क मे आकर क्रान्तिकारी दल मे शामिल हो चुके थे।

श्री भूपसिंह को खरवा ठाकुर ने अपना निजी सचिव बना लिया। दोनों मिलकर देश व्यापी सशस्त्र क्रान्ति की तैयारियों में जुट गये।

श्री रासबिहारी बोस की योजना के अनुसार सन् १९१४ में २१ फरवरी को उत्तर भारत की सैनिक छावनियों में सेना विद्रोह करे और कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर युद्ध प्रारम्भ करे तब देश भर में विद्रोह हो जाये। राजस्थान में विद्रोह कराने की व्यवस्था खरवा ठाकुर राव गोपालसिंह तथा भूपसिंह के जिम्मे थी।

दुर्भाग्य की बात है कि उक्त विद्रोह की योजना क्रियान्वित होने के पूर्व ही इसकी जानकारी सरकार को हो गई। इधर राव गोपालसिंह एवं श्री भूपसिंह को निश्चित समय पर निर्धारित संकेत नहीं मिला इसलिए उन्होंने २१ फरवरी को कोई कदम आगे नही बढ़ाया तथा दूसरे दिन गुप्त संदेश वाहक ने यहाँ आकर इन्हें बतलाया कि लाहौर में विद्रोह का सरकार को पता चल गया और क्रान्ति असफल हो गई है।

भारी मात्रा में एकत्रित अस्त्र-शस्त्र और गोला-बारूद को गुप्त स्थानों में छिपाकर यहाँ के क्रान्तिकारी वीरों का दल बिखर गया। इस दल में कुल कितने सदस्य थे और उनके नाम क्या थे आज भी अज्ञात है।

जब क्रान्ति असफल हो गई और सरकार को पता लगा कि राजस्थान में क्रान्ति का नेतृत्व राव गोपालसिंह और भूपसिंह कर रहे थे तो उन्हें टाड़गढ़ में नजरबन्द कर दिया गया।

थोड़े ही दिनों बाद श्री भूपसिंह को पता चल गया कि लाहौर एवं फीरोजपुर षडयंत्र के सम्बन्ध में उनकी गिरफ्तारी का वारन्ट निकल चुका है तो वे अंग्रेज-सरकार की आँखों में धूल झोंक कर टाड़गढ़ से निकल भागे।

साधू सीतारामदास को चित्तौड़ में दिये गये आश्वासन के अनुसार श्री पथिकजी एक माह बाद बिजौलिया पहुँचे और विद्या प्रचारिणी सभा के भवन में ठहरे।

पथिकजी के रोबीले और आकर्षण व्यक्तित्व एवं वीर-वेष को देखकर लोग आश्चर्य चकित हो गये और साधू सीतारामदास से पूछा कि यह कौन है तो उन्होंने बतलाया कि यह विद्या प्रचारिणी सभा की पाठशाला के नये अध्यापक हैं ।

पाठशाला का कार्य हाथ में लेकर पथिकजी स्वयं प्रतिदिन विद्यार्थियों को पढाने लगे । साथ ही साथ उनमें देशभक्ति की भावना भरने लगे । विद्यार्थियों का शारीरिक विकास करने हेतु बकायदा परेड, आसन एवं व्यायाम कराते तथा अखाडे में कुश्ती लड़वाते ।

पथिकजी अपने शिष्यों में ज्ञान के साथ वीरता, साहस, शौर्य, स्वाभिमान और देशसेवा की भावना कूट–कूट कर भरने लगे । उन्होंने विद्यार्थियों की एक सैनिक (खाकी) वर्दी भी बनवाई और उनकी एक सेना भी तैयार कर ली । इस सेना ने आगे चल कर बिजौलिया किसान-आन्दोलन में काफी सराहनीय कार्य किये ।

दिन में पथिकजी पाठशाला चलाते और रात्रि में साधू सीताराम दास तथा अन्य कार्यकर्ताओं के साथ गांव–गाव घूम कर किसानों को सगठित करने लगे । यहीं श्री माणिक्यलाल वर्मा को देशसेवा के लिए दीक्षित किया और श्री वर्मा ने पथिकजी की प्रेरणा से उन्ही के नेतृत्व मे देश सेवा एव किसान सेवा का व्रत लिया । स्मरण रहे कि जब श्री वर्मा की उम्र करीब सवा साल की थी तब ही उनके पिता श्री का देहावसान हो गया था । आपके दादा और पिता बिजौलिया राव के यहाँ कर्मचारी थे तथा वर्मा के परिवार का सारा वातावरण बिजौलिया ठिकाने के प्रति स्वामी भक्ति पूर्ण और सेवा-भावना से ओत-प्रोत था । श्री माणिक्यलाल वर्मा भी साधारण-लिख-पढ कर ठिकाने में ही नौकरी करने लगे ।

जब पथिकजी बिजौलिया में विद्या प्रचारिणी सभा और पाठशाला के माध्यम से जनता मे कार्य करने लगे तब श्री माणिक्यलाल वर्मा ठिकाने के कर्मचारी थे । चू कि नायब मुन्सरिम श्री डूंगरसिंह भाटी आदि के सहयोग से विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई थी इसलिए बिजौलिया ठिकाने के कर्मचारी भी इसके साप्ताहिक अधिवेशनों में सम्मिलित होते थे । साप्ताहिक अधिवेशन में पथिकजी के

प्रभावशाली भाषणों से श्री वर्मा बहुत अधिक प्रभावित हुए और वे पथिकजी के उत्तरोत्तर समीप आते गये। पथिकजी ने श्री वर्मा को विश्वसनीय और योग्य समझ कर सभा का मंत्री बना लिया तथा अपने साथ रखकर किसानों और जनता को सगठित करने की अपनी कला भी क्रियात्मक रूप से सिखाते रहे। जब सब तरह से वर्मा तैयार हो गये तब पथिकजी ने बिजोलिया के समीप ही स्थित श्री पार्श्वनाथ मन्दिर के धार्मिक स्थान पर श्री वर्मा को लेजाकर आजन्म देश-सेवा करने की विधिवत शपथ दिलाते हुए दीक्षा भी दे दी।

श्री वर्मा ने पथिकजी की प्रेरणा से बिजोलिया ठिकाने की नौकरी छोड़ कर पूरी तरह अपने को पथिकजी के समर्पित कर दिया।

पथिकजी जब साधु सीतारामदास, श्री माणिक्यलाल वर्मा तथा प्रचारिणी सभा के अन्य कार्यकर्ताओं को साथ लेकर गाव-गाव घूमते तब वहाँ के किसान उन्हें अपनी कष्ट-गाथायें सुनाते। उत्तर में पथिक जी उन्हे कहते :—

"संसार में निर्बलों के लिए कोई स्थान नहीं है। सभी उनका शोषण करते हैं। अतएवं सबल और तेजवान बनने की आवश्यकता है। तुम लोग यदि संगठित हो जाओ तो बिजोलिया के इस छोटे से ठिकाने की तो कोई हस्ती ही नहीं है, राजे-महाराजों और उनकी प्रभुशक्ति ब्रिटिश-साम्राज्य को भी समाप्त किया जा सकता है। अस्तु यदि हृदय से चाहते हो कि ठिकाने के अत्याचारों तथा शोषण से तुम्हें मुक्ति मिले तो संगठित हो जाओ, अपना पंचायत बोर्ड बनालो। उचित समय पर ठिकाने से मोर्चा लिया जायेगा।"

यद्यपि ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी प्रदेश और मार्गो का अभाव साथ ही वन से आच्छादित सारे प्रदेश में रात्रि को घूम-घूम कर किसानों में जागरण और उन्हें संगठित करने का कार्य भारी मुसीबतों और जोखिम से भरा था फिर पथिकजी न तो कही रुके और न कही झुके। निरन्तर अपने कार्य में जुटे रहे। रात्रि में ही पहाड़ी प्रदेश के किसानों में सम्पर्क करना इसलिए आवश्यक था कि ठिकाने और मेवाड राज्य को यह पता न चल पाये कि किसानो को सगठित किया जा रहा है। लेकिन आखिर यह रहस्य कब तक छिपा रह सकता था ?

बिजौलिया ठिकाने को पता लग गया कि विजयसिंह पथिक ठिकाने के विरुद्ध किसानों को संगठित कर रहा है। अतः पथिकजी की गिरफ्तारी का वारन्ट निकला लेकिन इसकी जानकारी वारन्ट निकलते ही पथिकजी को हो गई। पथिकजी ने कुछ ऐसी व्यवस्था बिठा रखी थी कि उनके विरुद्ध उठने वाले सरकारी कदमों की जानकारी उनके क्रियात्मक रूप लेने के पूर्व ही हो जाये।

यही हाल उक्त वारन्ट का हुआ और पथिकजी पूर्व सूचना मिलते ही चित्तौड़ छोडकर चले गये। चित्तौड़ और आस-पास के इलाके को सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पूरी तरह छान डाला मगर उन्हें विजयसिंह पथिक कहीं दिखलाई नहीं दिया। हार-थक कर उनकी भाग-दौड ढिली पड़ी।

इधर पथिकजी छिपे तौर पर ऊपरमाल के किसानों के संगठन का कार्य और तेजी से करने लगे। थोड़े समय पश्चात् श्री माणिक्यलाल वर्मा ने पथिकजी से गुप्त रूप से भेंट कर जानकार दी कि अब किसान पूरी तरह सगठित हो गये है और आन्दोलम के लिए हर कुर्बानी देने को तैयार है।

पथिकजी ने सारी स्थिति का बारीकी से अध्ययन कर एव प्रमुख कार्यकर्ताओ को बुलाकर विचार-विमर्श किया और आदेश दिया कि एक संगठन बनाकर सघर्ष प्रारम्भ कर दिया जाये।

ऊपरमाल के हर गांव में स्थायी संगठन बनाने और आन्दोलन छेड़ने की सूचना मेरी निम्न पंक्तियों के साथ पहुंचाओ—

"हरियाली अमावस सुखद शुभ मुहूर्त मानलो
स्वतंत्रता के अर्थ सब धर्म युद्ध को ठानलो।"

इसके साथ ही योगी के नाम से पथिकजी ने अपना निम्न सन्देश भी प्रसारित करवाया :—

"यदि तुम पढ़े-लिखे हो और देश की स्थिति के जानकार होकर भी इतने निर्बल हृदय हो कि कुछ नहीं कर सकते अथवा इतने घोर स्वार्थी हो कि देशहित के लिए कुछ भी त्याग नहीं कर सकते, या ऐसे मोह-ग्रस्त हो कि आपत्तियों का भय तुम्हें कर्त्तव्य-पथ से ढ़केल कर सड़े प्रहस्थ में डाल देता है तो यह उचित

ही है कि तुम गुलामी की जंजीरों में जकड़े नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे हो और ऐसी अवस्था में वे भूल करते हैं, जो तुम्हें देश-हित का पवित्र मंत्र सुनाते हैं, क्योंकि तुम उसके अधिकारी नहीं हो। याद रखो कि यदि तुम इस अवसर पर भी कायर ही बने रहे तो फिर कभी तुम्हारा उद्धार इतनी सरलता से नहीं होगा।"

हरियाली अमावस के ४ दिन पूर्व ऊपरमाल आंचल की समस्त जनता को बैरीलाल नामक ग्राम में एकत्रित किया गया और पथिकजी के आदेश से परिचित कराया। इस अवसर पर पंचायत बोर्ड का गठन किया गया मगर बोर्ड का सरपंच बनने के लिए उपस्थित पटेलों में से कोई भी तैयार नहीं हुआ क्योंकि सभी ठिकाने के आतंक से भय खाते थे। इस सभा की सारी कार्यवाही पड़ौस के एक मकान में छिपे स्वयं पथिकजी देख रहे थे और अपने विश्वसनीय कार्यकर्ताओं के माध्यम से सभा का संचालन कर रहे थे। सभा में सरपंच पद को लेकर व्याप्त निराशा को दूर करने हेतु उन्होंने सभा में उपस्थित मन्नाजी पटेल को बुलावाया और उनमें त्याग और साहस की ऐसी भावना भरी कि उन्होंने पुनः सभा में आकर घोषणा की कि मैं सरपंच बनने के लिए तैयार हूं। इतना सुनते ही किसानों में भारी जोश और उत्साह उमड़ पड़ा।

यहीं से जोरदार संघर्ष की शुरुआत हुई और इस शुरुआत का मुख्य कारण ठिकाने द्वारा थोपी गई लागतें और बेगार थी।

ठिकाने की लागतें एवं बेगारें

ठिकाने द्वारा किसानों पर कुछ छोटी-मोटी लागतों एवं बेगारों के अतिरिक्त निम्न लिखित ७४ लागतें एवं बेगारें थीं जिन पर सम-झौते के समय विचार किया गया :—

१. घुमची याने काचे करा—४ सेर ११ छटांक प्रति मन।

२. सेरूणा—२ सेर ८ छटांक प्रति मन।

३. तुलाई—३ सेर प्रति माणी यानी ६ मन फी।

४. नकाई—३ सेर प्रति माणी।

५. जल पिलाई—१ सेर प्रति गाड़ी।

६. सरे भुट्टे प्रति कुंआ—१०० ।

७. सैकड़े ज्वार के—प्रति गांव २ मण (अर्थात ६ मन)।

८. होला—(चना) २ मण।

६ डांगिया—जो गेहूं प्रति गांव २ मण।

१०. सांठे—(गन्ने) प्रति खेत ६५।

११. रस गन्ने का प्रति टापा यानी खेत—एक घड़ा।

१२. अमल (अफीम प्रति बीघा—२ आने भर।

१३ दागा पोस्ट (पोस्त)—प्रति बीघा ७–८ आने भर।

१४ कपास प्रति बीघा—७-८ आने भर।

१५ मण (सन)—प्रति बीघा ७–८ आने भर।

१६. नेग—प्रति गांव ६ रु. से ११ रु तक।

१७ खडलाखड़—पीवल जमीन (सिंचित भूमि) पर प्रति बीघा ६ आना।

१८. खडलाखड माल की जमीन पर प्रति बीघा ३ आना।

१६. मामद की छद्दन्द प्रति हल ५ रु. से ७ रु. तक।

२०. कुड़ा की छद्दन्दर ५ रु से ८ रु. तक।

२१ सीदरण यानी रस्सा सन का बना बनाया प्रति गांव ५।

२२. गुड़ प्रति बीघा ३२ सेर अन्दाजन।

२३. चारखी खूंट–बन्दी के पुराने रुपये के हिसाब से ६ आने के हिसाब से प्रति खूंट।

२४. वाडा बैल बांधने का प्रति बिस्वा १० आने।

२५. मिरचों का टैक्स—प्रति बिस्वा १० आने।

२६. रोप के मरे फेकड़े कम से कम सेर प्रति बीघा ५० फेकड़े।

२७. गेगरी की डाली प्रति खेत चने २ सेर नीलवे निकलने लायक।

२८. वटवाली बेचने वाले अनाज पर प्रति मन चार आने।

२९. कूता का गांव प्रति हल करीब ५ सेर धान निकलने लायक।

३०. गांव वलाई का धान प्रति हल ५ सेर।

३१. मापा माल का।

३२. मापा जानवरों का प्रति रु. एक आना।

३३. दरखास्त (प्रार्थना पत्र) की लिखाई दूसरी जगह से लिखाने पर भी दो आना।

३४. जमानत चार आने।

३५. पहरा कैद से छूटने पर कैदियों से जमादार को दिलाया जाता चार आने।

३६. रोजाना तलवाना एक आने से दो आने तक।

३७. घरू माल का मापा।

३८. पटेलों का भेला गुड़ ३२ सेर पहले १० सेर लेते थे।

३९. परना हल्दी, मिर्च, लहसण, घी, जितना ठिकाने को जरूरत हो बाजार से ड्योढी मात्रा पर लिया जाता है और न देने पर उसके दुगने दाम देने पड़ते हैं।

४०. नूता वराड़ फी प्रति हल—१० रु. से २०० रु. तक।

४१. तलवार बंधाई वराड़ १० रु. से २०० रु. तक।

४२. दमुंदी की चंवरी प्रत्येक विवाह में सवा सेर आटा, एक पांव घी, दाल, मसाला ५ टके भर।

४३. मेरों की घास चौमासे के चार महिनों तक दो भारे प्रति हल रोजाना।

४४. रहने की खुराक, बिछौना, ओढना, पलग, अमल (अफीम) तम्बाकू मकान वगैरह देना पड़ता है।

४५. कूंता करने वाले का व उनकी सवारियों को खुराक, बिछौना, ओढना, पलंग, अमल (अफीम) तम्बाकू, दाना-घास वगैरह दिया जाता है।

४६. सवारियां सब से ले जाते है।

४७ महूडे (महुआ) का तीसरा हिस्सा।

४८ आम्बे का तीसरा हिस्सा।

४९. बबूल, आम, महूड़े हमारे लगाये हुए और खेतों के भीतर होने वालों को भी ठिकाने के गिने जाते हैं। हमें काटने तथा फल खाने का अधिकार नही है।

५०. अमल बोवाई।

५१. थाढ़ों का दूध-दही जरूरत माफिक।

५२ घोड़ों के लिए रजका जितना जरूरत हो मुफ्त कटाया जाता है।

५३ होली का नजराना प्रत्येक पटेल से एक रुपया।

५४. दशहरे का नजराना प्रत्येक पटेल से एक रुपया

५५. परवाने का नजराना।

५६. परवाने की लिखाई।

५७. गावा-हासिल पर प्रति रुपया करीब एक आना।

५८. बन्ती बट्टा-प्रति रुपया तीन से पांच आना।

५९. गोपालजी के दो आने।

६०. गूंद।

६१. पाडों की सींगोटी के चार टके।

६२. घोड़ों के लिए जितनी जरूरत के हरे जब-तब काट मंगाते है।

६३. हमारे बबूलों की फलियों का ठेका भी ठिकाने वालों की तरफ से दिया जाता है।

६४. चौकी का प्रति मुसाफिर एक पैसा, प्रति गाड़ी एक टका।

६५. पहरा गूजर, मीना, भील वगैरह और भी जातियों के किसानों को कोई जरूरत पड़ने पर दिलाया जाता है।

६६. आटा पिसाई जितने आटे की जरूरत हो मुफ्त पिसाया जावे—श्राद्ध, विवाह-शादी के मौके पर।

६७. पटेलों के गाडे जब जरूरत हो पटेलों को गाड़ियां समेत बेगार में जाना पड़ता है और कभी-कभी उदयपुर तक जाना पड़ता है।

६८. घीमा—चौमासे में दो बैलों से जितनी लकड़ियां खींच सके काट कर जंगल से लानी पड़ती है।

६९. घास का गाड़ा लकड़ियों की तरह लाना पड़ता है।

७०. धौस—किसी भी अनिवार्य कारण और कायदे मुआफिक होने की वजह से अगर ठिकाने की बात किसी गांव के सब या कुछ आदमी न माने तो उनके यहाँ सवार बैठा दिए जाते हैं जो जबरन घोड़े के लिए दाना-घास, अपने लिए ओढना-बिछौना, भोजन, दूध, अमल (अफीम) तम्बाकू वगैरह उस वक्त तक लेते रहते है जब तब कि उनका हुक्म न मान लिया जावे।

७१. सरबरा बिल्लेदार बागर व हर एक आने वाले राज कर्मचारी, सिपाही आदि को खुराक, दाना, घास, ओढना-बिछौना मुफ्त देना पड़ता है।

७२. जेर तजवीज कैदियों से मशक्त ली जाती है। उसकी मजदूरी कुछ भी नहीं दी जाती।

७३. काश्तकारी की जमीन के पास रखत रखी जाती है।

राजस्थान सेवा संघ के तत्वावधान एवं पथिकजी के नेतृत्व

में चला बिजौलिया किसान आन्दोलन प्रारम्भ में बिजौलिया के समीप के क्षेत्रों मे विशेष कर जागीर-क्षेत्र—बेगूं, बसी, भैंसरोड़गढ व धागड़-मऊ आदि तक ही सीमित रहा लेकिन यहाँ जब आन्दोलन उग्र हुआ तो व्यापक भी हो गया और नीमड़ी, पारसोली, अमरगढ़, धरियावाद, भीडर, कुरांवड़, कछोला, कुआंखेड़ा, वड़ल्यास, सूरास, देलवाड़ा आदि जागीरी ग्रामों मे एवं मेवाड के खालसा के कपासन आदि जिलों तथा झाडोल से लगाकर ईडर तक पूरे भील-प्रदेश में फैल गया। इतना ही नही पूरे मेवाड़ में इस आन्दोलन का भारी प्रभाव पड़ा और जहाँ २ छोटे-मोटे रूपों में आन्दोलन हुआ वहाँ बिजौलिया-आन्दोलन का ही अनुकरण किया गया।

बिजौलिया किसान-आन्दोलन की आग जब पूरे मेवाड़ में फैलने लगी तो ठिकाने एव मेवाड़ राज्य के साथ ब्रिटिश-सरकार भी भयभीत सी हो उठी। ब्रिटिश-सरकार का विदेशी विभाग बिजौलिया किसान-सत्याग्रह के दूरगामी एवं भयंकर परिणाम से घबरा गया तथा स्वयं ए. जी जी. हालेण्ड, किसान पंचायत और राव साहब के बीच समझौता कराने हेतु बिजौलिया पहुंचे।

बिजौलिया किसान-सत्याग्रह से एक ओर जहाँ तिहरी उद्दण्ड-शक्तियाँ भयभीत हो उठीं वहाँ राष्ट्रीय नेता—लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, मदनमोहनजी मालवीय एवं गणेशशंकरजी "विद्यार्थी" आदि—भी इससे भारी प्रभावित हुए और आन्दोलन का सक्रिय समर्थन करते रहे।

इतना ही नहीं इस ऐतिहासिक सत्याग्रह के कारण ही कांग्रेस का प्रथम बार देशी राज्यों की समस्याओं की ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान आकर्षित हुआ।

श्रद्धेय पथिकजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अजमेर एवं आगरा आदि स्थानों से समय-समय पर साप्ताहिक पत्रों का सफल सम्पादन-सञ्चालन किया। इन पत्रों की शासकों पर जबरदस्त धाक थी और ये पत्र अपने समय में काफी लोकप्रिय रहे। इन पत्रों से देश में विशेष जागृति हुई। और तो और बीमारी की हालत में भी पथिकजी १६-१६ घण्टे प्रतिदिन देश-सेवा का कार्य करते थे। राजस्थान सेवा संघ अपने समय की एक ही ऐसी संस्था थी जिसके कर्मठ सदस्यों के त्याग,

साहस और सेवा की मिसाल ढूंढ़े नहीं मिलती है। यद्यपि पथिकजी इस संस्था के अध्यक्ष थे लेकिन संस्था के कार्यकर्ताओं एवं अध्यक्ष के जीवन-निर्वाह के लिए एक समान छोटी सी मासिक राशि १५) रुपये निर्धारित थी। एक बार हिसाब लगाकर जब देखा तो पाया गया कि पथिकजी स्वयं के लिए निर्धारित इस छोटी सी राशि में से भी बचत कर संस्था द्वारा चलाये जा रहे कार्यों के प्रचार-प्रसार में खर्च कर देते थे।

श्रद्धेय पथिकजी देश की गरम एवं नरम दोनों ही क्रान्तियों में जहाँ पूरी तरह सक्रिय रहे वहाँ साहित्य-साधना में भी तल्लीन रहे। देशी चिकित्सा के भी वे अच्छे जानकार थे और इस माध्यम से भी ग्रामीणों की उन्होंने अच्छी सेवा की। उनकी सारी जवानी जंगलों और जेलों में व्यतीत हुई। देश व किसानों के लिए उन्होंने जो महान् त्याग किया और भयंकर कष्ट सहा उसकी आज कल्पना मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते है।

पथिकजी द्वारा निम्न लिखित साहित्य-रचना की गई :—

१. गरीबों का स्वराज्य (प्रिंस क्रोपाटकिन की सुप्रसिद्ध पुस्तक "कौक्वेस्ट आव ब्रेड" का अनुवाद) २. प्रह्लाद विजय (खण्ड काव्य) ३. अजयमेरू (ऐतिहासिक उपन्यास) ४. कल्पना कल्लोल (गद्य काव्य) प्रथम भाग ५. पथिक प्रमोद (कहानी संग्रह) प्रथम भाग ६. पथिक प्रमोद द्वितीय भाग ७. आलोचना ८. वाछनीय जीवन (निबन्ध) ९. उलट-पुलट (हास्य गद्य) १० मुखिया-सुरेश (नाटक) ११. अध्यापक और अभिभावक (टाल्सटाय की प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद) १२. पथिक निबन्धावली प्रथम भाग १३. पथिक निबन्धावली द्वितीय भाग १४. स्वराज्य (राजनैतिक सिद्धान्त) १५. कल्पना कल्लोल द्वितीय भाग (गद्य काव्य) १६. पथिकजी का बयान (राजस्थान की राजनैतिक स्थिति का दिग्दर्शन) १७. पथिकजी के जेल के पत्र (राजनीति) १८. पथिक विनोद प्रथम भाग १९. पथिक विनोद द्वितीय भाग २०. पथिक विनोद तृतीय भाग (कविता-संग्रह) २१. गांव के हकीमजी (देशी चिकित्सा) २२. बिकरा भाई (राजनैतिक उपन्यास) २३. **What are Indian states** (देशी राज्यों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण राजनैतिक ग्रन्थ, अंग्रेजी में) २४. चुनाव पद्धतियां और जनसत्ता २५. भारतीय राजनीति के तत्व (राजनीति-

सिद्धान्त) २६. राजस्थान की मूल संस्कृति २७. गणराज्य पद्धति २८. वेदों मे विश्व इतिहास २९. गणपति (गणतांत्रिक ऐतिहासिक नाटक) और ३०. रामलाल (नाटक)।

उक्त पुस्तकों में से **What are Indian states** (अंग्रेजी) तो उनके जीवन-काल में प्रकाशित हो गई और प्रह्लाद विजय (खण्ड काव्य), पथिक प्रमोद (कहानी संग्रह) प्रथम भाग, सुखिया-सुरेश (नाटक) एवं पथिक विनोद (कविता-संग्रह) प्रथम भाग उनके देहावसान के बाद राज्य सरकार के आर्थिक-सहयोग से प्रकाशित हुईं। शेष पुस्तकें आज भी अप्रकाशित पड़ी हुई हैं जब कि राज्य सरकार ने राजस्थान साहित्य अकादमी स्थापित कर रखी हैं और लाखों रुपयों का अकादमी का हर वर्ष का बजट है।

□○□

बिजौलिया का किसान-सत्याग्रह

वैसे तो हमारे देश में कई आन्दोलन हुए लेकिन बिजौलिया का किसान-आन्दोलन अपनी किस्म और तरीके का पहिला आन्दोलन था। जिसने दोहरी गुलामी से जकड़े राजस्थान में एक ऐसी क्रान्ति के बीज बोये जो आगे चलकर ब्रिटिश-सरकार और तत्कालीन ठिकाने की उदण्ड शक्ति को घुटने टेक देने हेतु मजबूर होना पड़ा।

देश का यह पहिला अहिंसक सफल किसान-आन्दोलन था जो महान क्रान्तिकारी नेता श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व एवं दिशा-निर्देशन में लड़ा गया। बिजौलिया के शोषित और पीड़ित किसानों ने वैसे संघर्ष तो छोटे-मोटे रूप में कई बार किये, लेकिन सरकार और ठिकाने की उदण्ड शक्ति ने हर बार उन्हे कुचल कर रख दिया।

इन कुचले हुए किसानों को पथिकजी ने एक जादूगर की भांति ऐसा जबरदस्त संगठित किया कि किसान पथिकजी की आवाज को ईश्वर की आवाज समझ कर सब कुछ बलिदान करने पर उतर आये। ब्रिटिश सरकार और ठिकाने की उदण्ड शक्ति ने पूर्व की तरह पुनः इस आन्दोलन को भी कुचलने में कोई कसर बाकी नहीं रखी लेकिन इस बार सरकार की उदण्ड शक्ति किसानों के त्याग और बलिदान की भावना के आगे लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी टिक न सकी और उसे अन्त में किसानों से समझौता करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

यूं तो बिजौलिया का इलाका १० मील चौड़ा और १० मील लम्बा एक छोटा सा ही इलाका है जिसकी आबादी १५००० से अधिक नहीं है, मगर वहां के किसान शुरू से ही जानदार थे। इसका प्रथम प्रमाण संवत् १९७० के रामनवमी के दिन मिला, उन दिनों एक रावजी की मृत्यु हो गई थी, इसलिये शोक के कारण जुलूस की मनाही कर दी गई थी, परन्तु ऊपरमाल के निवासियों (कस्बे और गावों के लोगों) ने मिलकर जुलूस निकाला। इसे ठिकाने ने आज्ञाभंग माना और इस अपराध में जुलूस-कार्यक्रम के नेता साधू सीतारामदास और उनके साथियों को निर्वासित कर दिया। इसके विरोध में सारे ऊपर-माल की जमीन पड़त रखी गई और किसानों ने हिजरत (देश-त्याग) का भी आश्रय लिया। इस पर जागीरदार को झुकना पड़ा और नेताओं की निर्वासन की आज्ञायें रद्द करनी पड़ी।

लेकिन मुख्य संग्राम तो १९१८ से शुरू हुआ। उस समय तक किसानों के प्रधान नायक विजयसिंहजी पथिक ऊपरमाल की धरती पर पहुंच चुके थे। ये मूल में क्रान्तिकारी थे। बनारस षडयंत्र केस के फरारी के रूप में वे टाडगढ़ किले की नजरबन्दी को तोड़ कर कुछ समय तो चित्तौड़गढ़ के निकट ओछड़ी के देशभक्त ठाकुर के यहां छद्म-वेष में रहे। वहां जब बिजौलिया के आदि नेता साधू सीतारामदास विद्या प्रचारिणी सभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने पहुंचे तब उन्होंने एक व्यक्ति को देखा जिसका लम्बा कद, कानों पर बंधी हुई सिक्खों की सी दाढी, राजपूती ढंग का साफा कमर से लटकती हुई सुनहरी मूंठ की तलवार, गले में लटकता हुआ रिवाल्वर, चौड़ी पेशानी और तेजस्वी आँखों ने साधूजी को सहसा अपनी ओर आकर्षित कर लिया। बातचीत हुई तो उन्हें ऊपरमाल ले आये। ये विजयसिंह पथिक थे।

उन्हीं के पास ब्रह्मचारी हरि बैठे थे जिनका गौरवर्ण, हंसमुख चेहरा, विशाल ललाट, भोले और खुले नेत्र, लम्बी जटा, लहराती हुई दाढ़ी और क्रियाशील अंग-प्रत्यंग प्रथम दर्शन में ही दूसरे को लुभा लेता था। यह हरिभाई किंकर थे जिन्हें उन दिनों ब्रह्मचारीजी कहते थे। वे पथिकजी के साथी थे। वे भी बिजोलिया चले आये थे। पथिकजी की कार्य प्रणाली में क्रान्तिकारियों का साहस, लोकमान्य तिलक की कूटनीति और गांधीजी के सत्याग्रह का सामंजस्य था। किसानों को उन्होंने सब कष्ट सहकर भी मारपीट न करने और अपनी बात पर डटे रहने का पाठ पढाया। वे खुद छिपकर रहने लगे और ठिकाने के खिलाफ रियासत में शिकायतों का और अखबारो में प्रकाशन का दुधारा खांडा चलाने लगे। पंचायत का मजबूत संगठन कर लिया गया। उसकी एक केन्द्रीय कमेटी बनाई गई और गांवों में शाखाये स्थापित की गई उसमें सभी ग्रामवासी शरीक हुए। आन्दोलन के लिये बाहर से भीख न माग कर किसानो से ही कोष इकट्ठा कर लिया गया।

इस समय तक बिजोलिया की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो उठी थी। ठिकाने का दमनचक्र तेज गति से चलने लगा। फसलें खराब हो गई और ऊपरमाल में काल पड़ गया। एक तरफ किसानों की आर्थिक स्थिति बुरी तरह लड़खड़ा गई तो दूसरी ओर ठिकाना मनमाना लगान वसूल करने लगा। प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण ठिकाने द्वारा युद्ध का चन्दा और ऋण भी किसानों से जबरदस्ती वसूल किया जाने लगा। किसानों में भारी रोष व्याप्त हो गया।

साधू सीतारामदास, माणिक्यलाल वर्मा एवं मथुरालाल भट्ट छिपे तौर पर पथिकजी से मिले और मार्ग-दर्शन चाहा।

पथिकजी ने कहा कि किसानों से कह दो कि वे साफ-साफ कह दें कि फसले खराब हो गई है अतः युद्ध का चन्दा और रिण हम नही दे सकते हैं। इससे पूर्व हरियाली अमावस को आन्दोलन शुरू करने के लिए जो सभा बैरीसाल ग्राम में सम्पन्न हुई थी उसमे भी यह निश्चय कर लिया था कि किसान बेगार नही देगा।

जब राव साहब के रमोड़े के लिए लकड़ियां जंगल से काट कर लाने हेतु ठिकाने के कर्मचारियों ने गोविन्दनिवास ग्राम के नारायण पटेल को पकडा तो पटेल ने बेगार देने से साफ इंकार कर दिया। इस पर ठिकाने के कर्मचारी उसे बन्दी बना कर ले गये। देखते-देखते इस घटना की जानकारी तीव्र गति से किसानों में फैल गई। पथिकजी के आदेश से किसानों के जत्थे बिजौलिया पहुंचने लगे। लगभग दो हजार किसानों ने बिजौलिया पहुंच कर नारा लगाया कि हमारे पटेल को छोड़ो या हमें भी जेल भेजो। तत्कालीन मुसरिम ने स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए तत्काल नारायण पटेल को छोड़ दिया।

पथिकजी की सलाह से साधू सीतारामदास, माणिक्यलाल वर्मा, भंवरलाल स्वर्णकार एवं प्रेमचन्द भील खुले ग्राम किसानों में व्यापक प्रचार करने लगे कि युद्ध का चन्दा एवं रिण न दिया जाये। किसानों ने भी साफ-माफ मना कर दिया कि युद्ध का चन्दा और रिण हम नहीं देंगे।

ठिकाने के कर्मचारियों ने किसानों को भयभीत और आतंकित करने के भरसक प्रयत्न किये मगर एक भी किसान विचलित नहीं हुआ।

ठिकाने ने सर्वश्री पथिकजी, वर्माजी, साधू सीतारामदास तथा प्रेमचन्द भील के विरुद्ध देशद्रोह के अपराध मे वारन्ट निकाले।

चूंकि पथिकजी भूमिगत (अण्डर ग्राउन्ड) थे इसलिए पकड़े नहीं गये। श्री माणिक्यलाल वर्मा जमानत पर इसलिए छोड़ दिये गये कि उसी समय उनकी भाभी का देहावसान हो गया था। साधू सीतारामदास एव प्रेमचद भील को गिरफ्तार कर जेल मे बन्द कर दिया और इन दोनों पर युद्ध का चन्दा और रिण न देने के लिए किसानों को बहकाने के आरोप मे मुकदमा चलाया गया।

उक्त मुकदमे में तीन माह तक लगभग तेरह सौ व्यक्तियों के बयान लिये गये मगर किसी भी गवाह ने ठिकाने के पक्ष मे कोई बयान नही दिया। सभी ने एक ही बात कही कि हमे युद्ध का चन्दा और रिण न देने के लिए किसी ने नहो बहकाया। इन गवाहों को पथिकजी छिपे तौर पर गाव-गाव जाकर समझाते रहे अतः ठिकाने के सारे प्रयत्न असफल हो गये और अन्त में अदालत को विवश होकर बन्दी साधू सीतारामदास एव प्रेमचन्द भील को छोडना पडा।

उक्त घटना से ठिकाने वाले बुरी तरह बौखला उठे और किसानों पर नाना प्रकार के अत्याचार करने लगे। साथ ही सभाओं पर भी रोक लगा दी।

राज्य से पूरी तरह निराश होने के बाद पथिकजी के आदेशानुसार किसानों ने सत्याग्रह छेड़ दिया। ५१ किसान सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये जिनमें से अधिकांश के नाम ये हैं—

सर्व श्री मेघाजी (चांदजी का खेड़ा) खेरिंगजी, नारायनजी रावत, गोकुलजी, (गिरधरपुरा) गंगारामजी, पीथाजी, (छोटी विजोलिया) धूलाजी, अमरचन्दजी (तरोला), वरदाजी, कालूजी, मजाजी (बेरीसाल), नुरानजी, किसनाजी, रामाजी पटेल (सलावटिया) किसनाजी, (जोलास), नन्दाजी, धन्नाजी, टेकाजी, भारमलजी, किसनाजी (लक्ष्मी निवास), तुलसीरामजी (किसन निवास), हीरालालजी (जावदा), सेवाजी (विक्रमपुरा), नोलाजी (गोविन्द निवास), गोपालजी, रूपाजी (अमर निवास), जगन्नाथजी (मांजी साहब का खेड़ा), धनराजजी (मांजी साहब का खेड़ा), दौलाजी, नाथूजी, दल्लाजी (उमाजी का खेड़ा), मोतीचंदजी (उमाजी का खेड़ा), देवाजी (गोपाल निवास), लालजी कराड (गोपालपुरा), हरलालजी गूजर (मूती) कालूजी (अमृतपुरा), खेमाजी (गणेशपुरा), एवं किसनाजी (भगवानपुरा)।

कार्यक्रम को अंतिम रूप देने से पहले एक विशेष घटना हुई। पंचायत के निर्णय भारतीय लोकतंत्र के अनुसार सर्व सम्मत होते थे। सभी गांवों से एक-एक गृहस्वामी उपस्थित होता था, एक परिवार में कोई व्यस्क पुरुष न होने के कारण उसकी ओर से एक विधवा आई थी। कार्यक्रम उग्र था। उस पर अपनी सहमति प्रकट करने से पहले उसने लम्बे घूंघट मे खड़ी होकर चेतावनी दी कि मर्द लोग बात के पक्के नहीं होते। स्त्रियां ही सब कुछ सहकर अपना वचन पालन करती हैं, इन पर जब जागीरदार के डंडे पड़ेंगे तो ये डरकर घरों में घुस जायेंगे। इनके भरोसे इतना तेज कार्यक्रम मत बनाओ। कार्यक्रम पर सब सहमत थे, परन्तु इस विपरीत आवाज पर सब चौंक गये और किंकर्तव्य होकर देखने लगे। इस पर साधूजी ने यह कहकर स्थिति संभाली कि कार्यक्रम पर महात्माजी की मोहर लगी है। पथिकजी को उस समय इसी नाम से पुकारा जाता था। महिला ने यह कहकर कि महात्माजी का हुक्म है, तो मैं भी राजी हो हूं। इस प्रकार कार्यक्रम सर्व सम्मति से पास हुआ।

कार्यक्रम यह था कि ठिकाने की आज्ञायें न मानी जायें, उसे लगान, लागबाग और कोई कर न दिया जाय, उसकी स्कूलों और अदालत का बहिष्कार किया जाये, पुलिस से वास्ता न रखा जाये, बेगार और रसद न दी जाये। शराबबन्दी, छुआछूत का निषेध, आन्दोलन के दौरान शादी-गमी की रस्में बन्द रखी जायें। गरज यह कि प्रजा ने राज्य-शक्ति के विरुद्ध अहिंसक युद्ध की घोषणा कर दी।

यह सब साहस जनता में कैसे आया! यह उस तपस्या का फल था जो पथिकजी ने आन्दोलन के संचालन के लिये की थी। उन्हें गुप्त-जीवन की सभी असुविधायें सहनी पड़ीं, रूखी-सूखी रोटी, समय-असमय खाकर संतोष करना पड़ा और कई बार फाका-मस्ती में गुजारनी पड़ी। मेह बरसते, खेतों में और भयंकर हिंसक पशुओं से भरे जंगलों में उन्हें अंधेरी रातें बितानी पड़ीं और एक क्रूर सांमती शत्रु के घेरे में दांतों के बीच जीभ की तरह घूमना पड़ा। इसका चमत्कारी प्रभाव तो पड़ना ही था। किसानों ने उन्हें देवदूत माना और महात्मा की पदवी दी जिनका शब्द उनके लिये कानून बन गया। पथिकजी ने इस श्रद्धा में अपना कोई स्वार्थ कभी सिद्ध नहीं किया।

नतीजा यह हुआ कि ठिकाने के सभी दमन के हथियार भोंटे सिद्ध हुए। बूढे किसानो के साथ मारपीट की गई, उन्हें जेल में ठूसा गया, "खोड़" में उनके पैर लगाये गये, जुर्माने और जब्तियां हुई और अन्त मे उनकी खड़ी फसले तक नष्ट की गई। इस सारी अग्नि परीक्षा में एक भी किसान फिसला नही, वह शत्रु के खेमे में नही गया। वन्देमातारम्, सर्व साधारण का अभिवादन-स्वर बन गया। इसकी गूंज कौने-कौने से जब उठती थी तब ऐसा लगता था कि यहां कोई बंकिम बाबू के अमर उपन्यास 'आनन्दमठ' के राजनैतिक सन्यासी बिहार कर रहे है। पहले **इस प्रांत को राजपूताना कहते थे लेकिन पथिकजी ने ही सर्व प्रथम इस प्रांत का नाम राजस्थान रखा।**

इस आन्दोलन को राजस्थान के वयोवृद्ध गांधीवादी नेता श्री रामनारायण चौधरी ने तो पथिक जयन्ती के अवसर पर इस किसान-आन्दोलन को भारत मे ही अद्वितीय बताया लेकिन राजस्थान के वर्तमान मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर ने इसे विश्व में बेमिसाल की संज्ञा दी। सचमुच बिजोलिया ने गांधी के अहिंसक युद्ध को चरम सीमा

तक पहुंचा कर और उसे सफल सिद्ध करके गांधीजी को भी इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इसकी सराहना अनेक बार की। सन् १९२० की ऐतिहासिक नागपुर कांग्रेस में उन्होंने इस राष्ट्रीय संगठन के विधान में यह प्रावधान कराया कि कांग्रेस का लक्ष्य ब्रिटिश-भारत की ही आजादी न रहकर देशी राज्यों सहित समूचे भारत की स्वतंत्रता हो और देशी राज्यों के नागरिकों को भी कांग्रेस में प्रतिनिधि बनने का हक होगा। उसी अधिवेशन में जब पथिकजी महात्मा गांधी से मिले तो उन्होंने पूछा "क्या पथिकजी, आपको तो मैंने बिजौलिया-सत्याग्रह के संचालन का वचन पहले दिया था, अब यह असहकार आन्दोलन छेड़ दिया तो बताइये, उस वचन का पालन करूं या इस आन्दोलन को संभालूं।" उस भेंट के समय चौधरी रामनारायण भी साथ थे। पथिकजी ने गद्‌गद् होकर उत्तर दिया—नहीं, बापू, आप इस महान यज्ञ को संभालिये, छोटे-मोटे मामलों को तो हम आपके सिपाही ही निपटा लेंगे। दूसरी बार जब १९२१ में बेगार विरोधी अभियान के सिलसिले में दीनबन्धु एन्ड्रूज ने महात्माजी से पूछा कि पथिक कैसा आदमी है तो उनका उत्तर था—"पथिक सिपाही आदमी है, काम करने वाला है तथा तेज मिजाज है। उनके विरोधी सब बातूनी है। वह बहादुर है, सबसे बड़ी बात तो यह है कि बिजौलिया के किसानों का पथिक में पूरा विश्वास है।" इससे पहले महात्मा गांधी ने अपने निजी सचिव महादेव भाई देसाई को बिजौलिया भेजकर किसानों की शिकायतों की जांच करा ली थी और उन्हें सही पाकर मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह से शिकायतें दूर करने का अनुरोध किया था। साथ ही यह चेतावनी भी दी कि शिकायतें दूर नहीं हुई तो वे स्वयं बिजौलिया-सत्याग्रह का संचालन करेंगे। महात्मा गांधी की दृष्टि में बिजौलिया के किसानों के सत्याग्रह का इतना मूल्य था कि जब अहमदाबाद की कांग्रेस में पथिकजी के नेतृत्व में ऊपरमाल के किसानों के प्रतिनिधि मण्डल ने बापू से सन्देश मांगा तो उन्होंने कहा "मैं तुम्हें क्या सन्देश दूं? तुम तो मुझे संदेश देने आये हो कि बापू तू ने जो सत्याग्रह छेड़ा, वह असफल रहा, हम लोग अपने आन्दोलन को सफल करके आये हैं।" इतना ही नहीं, जब १९४७ में भारत विभाजन से दुःखी होकर दिल्ली के बिड़ला भवन में गांधीजी उदास होकर लेटे हुए थे तब पथिकजी उनसे मिलने गये। साथ में राजस्थान के पुराने सेवक चन्द्रभान शर्मा भी थे। उन्होंने बताया, कि बापू के उद्‌गार ये थे—

पथिकजी, अब तो सारे देश में तुम्हारे कार्यक्रम के अनुसार काम करना होगा।

इस आन्दोलन में स्त्रियों का योगदान भी विलक्षण था। उनका नेतृत्व तो श्री रामनारायण चौधरी की धर्मपत्नी श्रीमती अजनादेवी ने किया, परन्तु श्री माणिकलाल वर्मा की विधवा माता जिन्हें सब लोग माजी कहते थे, अजनादेवी की मुख्य सहायिका थी और प्रचार कार्यक्रम के लिये जहां भी देवीजी जाती थी माजी उनके साथ रहती थी। उनका विशेष कार्य था पथिकजी को गुप्त जीवन में भोजन पहुंचाना और पंचायत के सन्देश वाहक का काम करना। श्री वर्मा की पत्नी नारायणदेवी बाहर से आने वाले नेताओं का आतिथ्य-सत्कार करती थी। वैसे तो नागपुर कांग्रेस के अवसर पर सामतशाही के नृशस अत्याचारों की जो प्रदर्शनी लगी थी उसका संगठन सत्याग्रही महिलाओ ने ही किया था। परन्तु सत्याग्रह-क्षेत्र में विजोलिया का—महिलाओं का सबसे प्रमुख प्रदर्शन ब्राह्मणों के खेड़े में हुआ। एक दिन जागीर के छुटभैयों ने कुछ किसानों को मनमाने ढंग पर रावले में बन्द कर लिया। उनके परिवारों की स्त्रियां अंजनादेवी के पास आई और बहुत कुछ समझाने पर भी छुटभैयों ने बंदियों को नहीं छोड़ा तो अजनादेवी के आह्वान पर उन्ही की अगवानी में ५०० से अधिक स्त्रियां छुटभैयों के द्वार पर जा डटी। इस अनोखी नारी-शक्ति के सामने इन छुटभैयों को झुकना पड़ा। और ये वीरांगनायें वन्देमातरम के गगनभेदी नारे लगाती और विजय-पताका लहराती हुई जब बंदियों को छुड़ा कर जुलूस के रूप मे आ रही थी तब ऊपरमाल में एक अद्‌भुत दृश्य उपस्थित हुआ था।

बेगूं ऊपरमाल का पड़ोसी क्षेत्र आंतरी कहलाता है। वहाँ के रावजी का छोटा सा सामंत आपे से बाहर होकर स्त्रियो पर अत्याचार करने लगा। उसने एक भीलनी को उल्टा लटका दिया और एक मालिन को सरे बाजार घसीटा गया। कुछ घटनायें अन्यत्र भी हुई। किसानों ने अन्य जुल्म तो सह लिये मगर स्त्रियो पर होने वाले अत्याचार को बर्दाश्त नही कर सके। इसके प्रतिकार स्वरूप. तिलस्वां नामक तीर्थस्थान पर एक 'कांग्रेस' हुई। विभिन्न क्षेत्रों के इकट्ठे लोगों के सम्मेलन को इसी नाम से पुकारा जाता था। अंजनादेवी की अध्यक्षता में सम्मेलन हुआ क्योंकि चर्चा का विषय महिलाओं के सम्मान का था।

इसके संगठन में साधू सीतारामदास का प्रमुख योगदान था। वहां जो प्रस्ताव पास हुआ उसमें निरंकुश तत्वों को स्पष्ट चेतावनी दे दी गई कि नारी की बेइज्जती की गई तो किसान आत्मरक्षार्थ बल प्रयोग का आश्रय ले सकते हैं इस चेतावनी के बाद किसी दुर्घटना के समाचार नही मिले।

इस कांग्रेस के पहले विजौलिया से बाहर परन्तु उससे प्रभावित दो अन्य क्षेत्रों में भी नारी-जागृति की घटनायें हुईं। उनमें से बड़ी थी बूंदी के बरड़ परगने में जहां पुरुषों की भांति स्त्रियों ने भी रियासत के महाराजा की रिश्वतखोरी के खिलाफ आवाज बुलन्द करने को सभा बुलाई। उस पर राज्य के घुड़सवारों ने अपने घोड़े दौड़ाकर किसी का सर कुचल दिया, किसी के हाथ-पांव तोड़ दिये और किसी को बुरी तरह कुचल दिया। ये समाचार अंजनादेवी को मिले तो वे माजी और अन्य स्त्रियों को साथ लेकर घटनास्थल पर जांच और राहत कार्य के लिये पहुंची। परन्तु पुलिस ने उन्हें यह पुनीत कार्य नहीं करने दिया और उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया। तब पथिकजी ने राजस्थान सेवासंघ के मंत्री रामनारायण चौधरी और भारत में साम्यवादी दल के संस्थापक सदस्य भरतपुर निवासी श्री सत्यभक्त को बरड़ इलाके में भेजा। उन्होंने जांच करके अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की और घायलों को अजमेर अस्पताल में भिजवाया।

दूसरी घटना मेवाड़ की अमरगढ़ जागीर में हुई। यह इलाका मीणों का है। इन लोगों को लागबाग, लगान और बेगार के अलावा दोनों समय पुलिस में हाजिरी देने का कष्ट मुख्य था। विजौलिया-सत्याग्रह से प्रभावित होकर उन्होने भी राजस्थान सेवासंघ को सहायता के लिये पुकारा। उस समय श्री मणिक्यलाल सिरोही के भीलों मे और चौधरीजी, साधूजी तथा प्रेमचन्द भील तीनों धांगणमोबोराव के जागीरी इलाके में गिरफ्तार थे। इसलिये अंजनादेवी को ही माजी और कुछ युवतियों को साथ लेकर अमरगढ़ पहुंचना पड़ा। वहां पहुंचते ही पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार करके रात को अलग-अलग कोठरियो में बन्द करना चाहा। इन्होने एक ही कोठरी मे सबको साथ बन्द करने का आग्रह किया तो थानेदार ने बन्दूक तान ली। ये वीरांगनाये डटकर सामने खड़ी हो गईं। थानेदार को गोली चलाने का साहस नहीं हुआ।

दूसरे दिन इनको छोड़कर निर्वासित कर दिया।

बिजौलिया के सत्याग्रह का केवल मेवाड़ के ही आस-पास के इलाके में असर नहीं हुआ, राजस्थान की अन्य रियासतों में भी प्रभाव फैला। उसी की प्रेरणा से भील-नेता मोतीलाल तेजावत पथिकजी से अजमेर आकर मिले और उन्होंने भील-क्षेत्र में जन-जागरण का काम शुरू कर दिया। वहां तो स्थिति इतनी गम्भीर हो गई कि उन दरिद्रनारायण के अवतारों पर रियासती और अंग्रेजी सेना ने आक्रमण करके करीब बारह सौ के प्राण ले लिये। उनकी झोंपड़ियां जला दी गई और उनके स्वल्प अन्न-भण्डारों को भस्मसात कर दिया गया। इन अत्याचारों से बिजौलिया के किसानों में रोष फैला, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति पैदा हुई और बड़ी पचायत का जलसा करके अत्याचारियों की निन्दा की गई, श्री माणिक्यलाल को उनके भीतर रहकर सांत्वना देने भेजा गया और चौधरीजी एवं सत्यभक्तजी को जांच और राहत कार्य के लिये नियुक्त किया गया। साथ ही पीड़ितों की सहायतार्थ बिजौलिया की सत्याग्रही पचायत कोष से २०००/- रुपया भेजा गया।

स्मरण रहे कि सन् १६२१ में राजस्थान में सर्व प्रथम आजादी का शख बजाने वाले स्व अर्जुनलाल सेठी भी बिजौलिया पहुंचे और किसानों व ठिकाने में आपसी समझौता कराना चाहा पर ठिकाने की हठधर्मी से समझौता नहीं हुआ।

इस प्रकार सत्याग्रही किसानों का दृष्टिकोण अपनी सफलताओं से उदार होता गया और वे राष्ट्रीय-आन्दोलन में भी भाग लेने लगे। उनके प्रतिनिधि अमृतसर, नागपुर और अहमदाबाद के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने पहुंचे। उनकी पुकार तो भारत के बाहर भी गुंजने लगी थी। ब्रिटिश-संसद में तो आन्दोलन के सम्बन्ध में बराबर प्रश्न पूछे जाते थे और पूछने वाले भी कोई छोटे लोग नहीं थे। मजदूर सरकार के भारत मंत्री पेथिक लारेंस ही मुख्य प्रवक्ता थे। आन्दोलन के संवाद अमरीका और जर्मनी के कुछ पत्रों में भी छपते थे। भारत के समाचार-पत्रों में तो उनका प्रकाशन खूब होता था। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी अपने अखबार "प्रताप", कानपुर मे बिजौलिया व अन्य ठिकानों के समाचार बराबर छापते रहते थे। बम्बई के "वेंकटेश्वर" समाचार, कलकत्ते के "बंगवासी", काशी के "आज" तथा "प्रभा" भी बिजौलिया

किसान-सत्याग्रह के समाचार खूब छापते रहते थे। लोकमान्य तिलक भी "केसरी', पूना में सत्याग्रह के बारे में लिखते रहते थे।

इन सब घटनाओं से ब्रिटिश-सरकार आंखे नहीं मूंद सकती थीं। उसने अपनी दोहरी नीति के अनुसार जहाँ जरासी भी हिंसा होती वह रिसायती सेनाओं से मिलकर अपनी सेना के द्वारा बल प्रयोग करती। मगर जहां आन्दोलन बिलकुल अहिंसक होता वहां उसे ऐसा बहाना नहीं मिलता था। इसलिये बिजौलिया-सत्याग्रही जनता के साथ जागीरदार का समझौता कराने पहुंचती थी। ऊपरमाल में यही प्रयोग किया गया। ब्रिटिश-सरकार की तरफ से ए. जी. जी. हालैण्ड, उनके सेक्रेटरी ओगल्वी और मेवाड़ के रेजीडेण्ट विल्किनसन; रियासत की ओर से प्रकाशचन्द्र चटर्जी दीवान और बिहारीलाल डांड (सायर) अधिकारी तथा ठिकाने के कामदार फौजदार की मंडली जून १९२२ में बिजौलिया कस्बे के बाहर एक मैदान में जमा हुई। किसानों को बुलाया गया तो उन्होने सूचित कर दिया कि हम राजस्थान सेवासंघ के मार्ग-दर्शन और अनुशासन में हैं, उस संस्था के मंत्री चौधरी राम-नारायण यहां आये हुए है, आप उन्हें बुलायें तो हम आ जायेंगे। हालैण्ड साहब की ओर से चौधरीजी को लिखित निमंत्रण भेजा गया कि साहब, ठिकाने और किसानों के बीच समझौता कराने आये हैं। आप इसमें मदद देंगे तो साहब को खुशी होगी। तदनुसार किसानों की ओर से चौधरीजी, साधूजी, वर्माजी और पंचायत के सरपंच मोतीचन्दजी संधिवार्ता में शरीक हुए। यह दृश्य बिजौलिया के ही नहीं शायद राजस्थान के इतिहास में अभूतपूर्व था। यह पहला मौका था जब किसान जैसी दबी हुई जाति जो पैरों में बिठाई जाती थी, उसी के प्रतिनिधियों को बराबर कुर्सियां मिलीं, जिन बड़े साहबों के दर्शन दुर्लभ होते थे, उन्हें एक दिन के बजाय आठ दिन ठहरना पड़ा और जिन आन्दोलनकारियों को भयंकर प्राणी समझकर दूर रखने के लिये सौ जतन किये जाते थे उनकी सहायता मांगी गई। उस दिन तो ऐसा दिखाई दिया मानो नेतृत्व राज्य सत्ता के हाथ से निकलकर जनता-जनार्दन के हाथ में आ गया है। सारे इलाके की जनता उमड़ आई थी। भीड़ को व्यवस्थित रखने का काम भी ठिकाने की पुलिस के बजाय पंचायत का बूढ़ा कोतवाल देवाजी कर रहा था।

इस वायुमंडल में समझौते की बातचीत शुरू हुई। किसानों का

शिकायत-नामा पेश हुआ। हालेण्ड साहब एक-एक मुद्दा पढ़कर सुनाते और दोनों पक्ष की दलीलें सुनते। छोटी-मोटी लागतों पर बहस नहीं हुई और वे माफ कर दी गईं। ठिकाने के प्रतिनिधियों के उत्तर अक्सर लम्बे और वाद-विवाद से भरे होते थे। इस पर हालैण्ड साहब ने अनेक बार टोका, मुझे लेक्चर नहीं चाहिये। उधर किसानों के उत्तर छोटे से और निश्चित होते थे। साहब ने उनकी तारीफ की और विपक्षियों को उनसे सबक लेने का संकेत किया। समानता का प्रदर्शन भी दर्शनीय था। साहब ने अपना पाइप जलाया तो सरपंच महोदय ने चिलम सुलगा ली। साहब ने मुस्करा कर उनकी कद्र की। किसान-पक्ष के सबल होने की अधिकारियों पर छाप पड़ चुकी थी। उन्हें व्यापक दृष्टि से राजस्थान के असंतोष की इस जड़ को मिटाना ही था।

अन्त में बेगार का प्रश्न आया चौधरीजी और हालैण्ड साहब पास ही आमने-सामने बैठे थे। साहब बोले "HERE IS THE RUB" (बड़ी घाटी तो यह है) चौधरीजी ने यह कहकर समाधान किया—"न्याय और सद्भावना के सहारे इसे भी पार किया जा सकता है।" साहब ने एक मसौदा बनाकर सरपंच को दिया। वह नामंजूर होकर लौट आया, साहब ने चौधरीजी की राय मांगी। उनका प्रस्ताव इस आशय का था—"किसान अपना यह फर्ज स्वीकार करते हैं कि जब कोई राज-कर्मचारी उनके गांव में आयेगा तो वे उचित कीमत पर उसे तरकारी, मजदूर और सामान जुटायेंगे।" चौधरीजी ने "फर्ज" की जगह 'सामाजिक धर्म' रखा। राज-कर्मचारी शब्द उड़ा दिया, 'जुटा देंगे' के स्थान पर "जुटाने की भरसक कोशिश करेंगे" और वाक्य के अंत में यह अंश जोड़ दिया कि "कीमत का निर्णय सरपंच करेगा और जबरदस्ती किसी हालत में न की जायेगी। साहब बोले—"जाहिरा ढांचे को बहुत न छेड़कर भी आपने तो भीतर से मेरी तजवीज की काया ही पलट दी।" हालैण्ड साहब की आलोचना ठीक थी। चौधरीजी के संशोधन ने प्रस्ताव को बिलकुल स्वेच्छामूलक कर डाला था और सरकार द्वारा मनोनीत पटेल की हस्ती मिटाकर पचायत के चुने हुए सरपच को आसन पर बिठा दिया था और एक तरह से पचायत की सत्ता पर सरकारी स्वीकृति की मुहर लगवा दी थी। इतना होने पर भी बेगार के खिलाफ सार्वजनिक रोष की तीव्रता

प्रस्तुत रेखाचित्र में सरकार और किसानों में हुई समझौता-वार्ता में भाग लेने वाले ब्रिटिश-सरकार की ओर से ए. जी. जी. हॉलेण्ड इनके सेक्रेटरी ओगल्वी, मेवाड़ के रेजीडेण्ट विल्किनसन, मेवाड़ रियासत की ओर से प्रभाचन्द्र चटर्जी दीवान, ठिकाने की ओर से बिहारीलाल डांड-अधिकारी आदि तथा किसानों की ओर से श्री रामनारायण चौधरी, साधू सीतारामदास, माणिक्यलाल वर्मा एवं पंचायत के सरपंच मोतीचन्द [टेबिल के चारों ओर कुर्सियों पर] बैठे दिखलाई दे रहे हैं।

को देखते हुए साहब को शक था कि किसानों को संशोधित प्रस्ताव भी शायद मंजूर न हो। साहब ने चौधरीजी को अपनी आशंका बताई भी चौधरीजी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उनकी तजवीज ज्यों की त्यों मान ली जाये तो किसान रजामंद हो जायेंगे। साहब ने अपनी मंजूरी की घोषणा की। किसानों ने स्वीकृति दी और जनता ने वन्देमात्रम के गगनभेदी नारे के साथ उसका समर्थन किया। इस अवसर पर ए० जी० जी० ने दीवान चटर्जी से ये शब्द कहे—"देहाती भेस में यह चौधरी बड़ा तेज और माकूल आदमी मालूम होता है। १० हजार रुपया देकर भी किसानों को इतना अच्छा वकील नहीं मिल सकता था।" इस समझौते के अनुसार किसानों से जो ८४ टैक्स (कर) जागीरदार लेता था माफ हुए।

बिजौलिया का सत्याग्रह इस तरह जानदार जीत के साथ खत्म हुआ। जिन-जिन क्षेत्र में आन्दोलन चल रहे थे सभी की पीड़ित जनता को काफी प्रोत्साहन और प्रत्यक्ष लाभ मिला। जागीरदारों ने हर जगह किसानों की मांगें थोड़ी या बहुत मंजूर कर ली। इन अन्नदाताओं के भावी-जीवन में सुख की सास लेने की आशा बंधी और सत्ताधारियों में दमन की व्यर्थता का अहसास पैदा हुआ। पथिकजी को अपने साथियों के कार्य विभाजन के सही होने का सन्तोष हुआ। उन्होंने चौधरीजी को प्रचार और अधिकारियों से बातचीत का कार्य सौंपा था, माणिकलालजी को जनता में सीधे प्रवेश का काम दिया था, सीतारामदासजी को रचनात्मक प्रवृत्तियां चलाने की जिम्मेदारी दी थी और अंजनादेवी को महिला विभाग सुपुर्द किया था।

उधर ब्रिटिश-सरकार अपनी कूटनीति चला रही थी। बिजौलिया के सत्याग्रह का असर मेवाड़ और राजपूताने में ही नहीं, ब्रिटिश इलाके में भी फैलता नजर आया तो वायसराय ने महाराणा फतहसिंहजी पर यह आरोप लगाकर कि वे कारगर उपाय नहीं कर पाये और अपने यहा के संक्रामक जन-आक्रोश को न सम्भाल पाने के कारण सीधा ही महाराणा को गद्दी छोड़ देने का प्रस्ताव भेज दिया। फतहसिंहजी स्वाभिमानी तो थे ही, उन्होंने उस प्रस्ताव को न मानकर जन-आन्दोलन के नेताओं से अप्रत्यक्ष रूप में सहायता मांगी। वायसराय के उस पत्र की नकल चौधरीजी के पास पहुंची तो उन्होंने

अपने नेता को दिखायी। पथिकजी पर उस समय उदयपुर में राजद्रोह का केस चल रहा था। परन्तु उस उदारमना महापुरुष ने राजस्थान सेवासंघ की नीति का अनुसरण करने के अपने मंत्री को आदेश दे दिये। वह नीति थी सर्वत्र अन्याय का विरोध करने की। तदनुसार जागीरदार प्रजा पर जुल्म करता तो संघ प्रजा की मदद करता था, जागीरदार पर राजा अन्याय करता तो संघ जागीरदार की बांह थाम लेता था और ब्रिटिश सरकार किसी राजा पर अनुचित दबाव डालती तो संघ राजा की हिमायत करता। इस नीति के अनुसार पथिकजी ने चौधरीजी को अपना प्रचार कार्य तेज करने के साथ ही वायसराय के उस पत्र की नकलें भारत के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित कराने और ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में प्रश्न कराने की हिदायत दी। मेवाड़ में उस पत्र के विरोध में सार्वजनिक सभाओं द्वारा प्रस्ताव पास कराने हेतु चौधरीजी को मेवाड़ के प्रमुख नगरों में भेजा। पहला प्रस्ताव ऊपरमाल की पंचायत ने ही पास किया। प्रस्ताव इस आशय का था कि मेवाड़ की जनता अपने कष्ट निवारण के लिये अपने राजा से अपने ढंग पर लड़ लेगी और लड़ रही है, मगर अपने स्वाभिमानी राजा को विदेशी हुकूमत के हाथों अपमानित होते नहीं देख सकती। इस आन्दोलन का यह असर हुआ कि कुछ ही दिनों में दिल्ली की एक छोटी सी खबर छपी कि महाराणा ने अपनी वृद्धावस्था के कारण महाराज कुमार को कुछ अधिकार सौंप दिये है। इस प्रकार वायसराय की झेंप मिटाई गई।

बिजोलिया सत्याग्रह की सफलता से उत्पन्न जनशक्ति को रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा पुष्ट और स्थिर करने के लिये पथिकजी के आदेशानुसार किसानों ने कई कदम उठाये। कई गांवों में पंचायत की ओर से पाठशालायें खोली गईं। जेठालाल नामक गुजराती कार्यकर्ता के द्वारा खादी के स्वावलम्बन आधार पर काम शुरू किया गया। समाज सुधार के लिये जोरदार प्रचार तेजी से चलाया गया और सेवा समिति द्वारा दैवी विपत्तियों के समय कष्ट निवारण की मुहिम चलाई गई। किसानों को व्यापारियों के शोषण से बचाने के लिये कस्बे में स्वदेशी भण्डार खोलकर कपड़ा आदि दैनिक आवश्यकताओं की चीजों की बिक्री की व्यवस्था की गई। नशाबन्दी और छूआछूत निषेध का कार्य तो सत्याग्रह के दौरान ही पूर्ण हो चुका था।

लेकिन १९२६ में ठिकाने ने समझौते की शर्तें तोड़ना शुरू कर दिया। १९२७ में पथिकजी पांच वर्ष की जेल यात्रा के बाद निर्दोष करार दिये जाकर रिहा कर दिये गये। बिजोलिया में माणिकलालजी ही रह गये। साधूजी तो जेठालाल भाई के साथ खादी कार्य में लग चुके थे। माणिकलालजी को आर्थिक कठिनाई होने लगी तो उन्होंने सेठ जमनालालजी से सहायता मांगी और बिजोलिया-पंचायत का मार्ग-दर्शन करने का अनुरोध किया। सेठजी ने शर्त रखी कि पथिकजी और चौधरीजी से त्यागपत्र मिले तब वे बिजोलिया की बागडोर संभालें। माणिकलालजी ने पथिकजी के सामने प्रस्ताव रखा तो उन्होंने निःसंकोच उसे मान लिया। तब माणिकलालजी, चौधरीजी के पास पहुंचे तो उन्होंने भी पथिकजी का अनुसरण किया। इस प्रकार सेठजी का नेतृत्व कायम हुआ। परन्तु वे तो मध्यप्रदेश में रहते थे, इसलिये उन्होंने हरिभाऊजी उपाध्याय को अपना प्रतिनिधित्व दिया। अब इन दोनों ने काम संभाल लिया। परन्तु दोनों ही कभी क्षेत्र में नहीं जा सके। पथिकजी गुप्त रूप में ही सही, किसानों के बीच में रहते थे, इसलिये उनकी मौजूदगी का पचायत को प्रत्यक्ष लाभ मिलता था। फिर भी सेठजी और उपाध्यायजी से जो कुछ संभव हुआ उन्होंने किसानों की मदद की परन्तु बात बनी नहीं और बिजोलिया फिर संघर्ष की रंगस्थली बन गया। सत्याग्रह फिर शुरू हुआ और वह इस रूप में कि किसानों ने अपनी जमीनों से इस्तीफे दे दिये।

अन्त में सन् १९३१ में इस संघर्ष में अजमेर से भी श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने कई कार्यकर्त्ता बिजोलिया भेजे मगर बूंदी से बुलाये गये एक उज्जड कोतवाल गजानन्द ने कार्यकर्त्ताओं के साथ इतना नृशस व्यवहार किया जिसकी पहले कोई मिसाल नहीं थी।

जब श्री साधू सीतारामदास एवं श्री माणिक्यलाल वर्मा आदि प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये तब श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी एवं श्री प्यारचद विष्णोई को आन्दोलन का संचालन करने हेतु बिजोलिया भिजवाया गया। श्री विष्णोई ने सादा वेश एवं श्री चौधरी ने राजपूती वेश—धोती, कोट, साफा, तलवार, बन्दूक, तमंचा एवं कटार धारण की। दोनों ही अजमेर से ट्रेन द्वारा बिजोलिया के लिए रवाना हुए।

इस यात्रा का विवरण श्री चौधरी के शब्दों में निम्न प्रकार है—

"हम दोनों अजमेर से चल कर नीमच उतरे और वहाँ से बस द्वारा सिगोली पहुंचे। रात्रि हो जाने के कारण गांव के बाहर घाटे के नीचे एक चट्टान पर रात्रि विश्राम किया। प्रातः उठे तब चट्टान के पास से शेर के गुजरने के पैरों के निशान देखे। भगवान ने ही हमारी रक्षा की। प्रातः ऊंट पर सवार होकर बिजौलियां सीमा में पहुंचे। यहाँ श्री माणिकलालजी वर्मा की धर्मपत्नी ने हमारा स्वागत-सत्कार किया। ज्यों ही आन्दोलनकारियों को हमारे पहुंचने की सूचना मिली उन में जोश आ गया।

यहाँ हम लोग प्रतिदिन अपना स्थान बदलते रहते और रात्रि में किसानों की सभा को सम्बोधित करते। हमारे भाषणों से किसानों में उत्तरोत्तर उत्साह बढ़ने लगा। संयोग की बात है कि श्री प्यारचन्द बिश्णोई ठिकाने द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये और वहाँ के उद्दण्ड कामदार ने उन पर भयंकर अत्याचार किये। मुझे भी गिरफ्तार करने की बहुत कोशिश की गई मगर मैं ठिकाने की गिरफ्त में अन्त तक नहीं आया।

मैं प्रतिदिन के सम्बोधन में किसानों से कहता रहता कि जागरूक रहो, डरो मत, हिम्मत रखो, अपनी मांगों पर डटे रहो, संगठित रहो और अपना अहिंसात्मक आन्दोलन पूरे जोश के साथ चालू रखो। तुम्हारे नेता श्री विजयसिंह पथिक तुम्हें अवश्य ही विजय दिलायेंगे—जीत तुम्हारी ही होगी। मैंने १५ दिन तक आन्दोलन का संचालन किया और जब श्री लादूराम जोशी एवं उनकी धर्मपत्नी रमादेवी आन्दोलन के संचालन हेतु बिजौलिया पहुंच गये तब मैं अजमेर लौट आया यहाँ आजादी की लड़ाई का स्वाधीनता प्राप्ति तक कप्तान के रूप में संचालन करता रहा।"

काफी संघर्ष के बाद अन्त में किसानों को जमीनें लौटाई गईं और मेवाड़-राज्य के डा. मोहनसिंह मेहता मालमंत्री के सिर यह सेहरा बंधा। असल में किसानों से जमीनों का अस्तीफा दिलवाना ही भारी भूल थी। उन्हें पुनः प्राप्त करने के लिये किसानों के सामने जो असाधारण कठिनाइयां पेश आईं उनके दौरान उन्हें अपने असली नेता पथिकजी की बार-बार याद आती रहीं।

जब पथिकजी ५ वर्ष के कारावास के बाद छूटकर अजमेर आये तो चूंकि मेवाड़ में प्रवेश निषिद्ध था इसलिये किसानों ने अपने प्रिय नेता का स्वागत-सत्कार करने के लिये बिजौलिया व ग्वालियर राज्य की सरहद पर गांव फूंसरिया (सिंगोली के पास) में हजारों स्त्री-पुरुष आये और उनके पांव छूकर रुपये भेंट किये और लगभग १५० नौजवानों ने पथिकजी के छूटने तक के लिये जो बाल बढ़ा रखे थे, उन्होंने उनके सम्मुख बाल उतरवाये।

१६३१-३२ में अजमेर में जो अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी गई उसमें बिजौलिया के करीब २० नवयुवकों ने भाग लिया व जेल गये।

बेगूं, धागणमऊ, बोराव, लीमड़ी, बस्सी, पारसोली, बरड आदि ठिकानो में भी आन्दोलन हुये, क्रूर दमन हुये जिनका किसानों ने बहादुरी से सामना किया फलस्वरूप उन्हें काफी राहतें मिलीं। आन्दोलन के दौरान बिजौलिया की किसान-पंचायत ने "ऊपरमाल को डंको" नामक साप्ताहिक हस्तलिखित पत्र निकाला जिसके सम्पादक साधू सीतारामदास थे।

बिजौलिया आन्दोलन मे विजयसिंह पथिक के नेतृत्व में जिन्होंने मुख्य रूप से भाग लिया उनके शुभ नाम निम्न प्रकार हैं—

साधू सीतारामदास, माणिकलाल वर्मा, रामनारायण चौधरी, ब्रह्मदेव दाधीच, फतेहकरण, राजमल सुनार, नाथूलाल कामदार, गोकुललाल पुरोहित, नाथूलाल बोहरा, माणिक्यलाल वर्मा की माताजी तथा धर्मपत्नी नारायणदेवी, अंजनादेवी चौधरी, मन्नाजी पटेल, हरिभाई किंकर, नैनूराम, भंवरलाल स्वर्णकार प्रज्ञाचक्षु, जयसिंह धाकड़, रामसिंह भाटी, रमादेवी शर्मा, प्रेमचन्द भील, नारायण पटेल, शोभालाल गुप्त, कजोड़ जोशी, मोतीचन्द सेठी, हीरालाल जावदा, कल्याणपुरा के श्री कालू, घीसालाल चित्तौड़ा, लक्ष्मण धाकड़, घनश्याम शर्मा, प्यारचन्द विश्नोई, अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, भंवरलाल शर्मा, लादूराम जोशी, थड़ोदा के नारायण सूतल्या, नारायण सुखवाड़िया, धन्ना, रामा, कालू सुखवाड़िया, मोतीचन्द, दौलतराम, नौलाजी अमृतपुरिया, कालूजी ओलाण के, सुखलाल, किशनाजी,

बालूजी, जैचन्द, धन्नाजी, रूपाजी, खेमाजी, लालाजी, खमाणजी, अमरचन्द, खेमाजी, उमाजीकाखेडा; खेमाजी गोविन्दपुरा, सालगजी, लालूरामजी, गोपालजी, हरिरामजी, लछमणजी, नारायण, अमरचन्द रोडिया, धोला धकड़ोलिया, तुलसीराम पटेल, गोकुल पटेल आदि ।

विजौलिया किसान-आन्दोलन और श्रद्धेय पथिकजी के विभिन्न देशभक्ति पूर्ण कार्यों में जहां अजमेर के जनसेवी डा. अम्बालाल शर्मा का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पूरा-पूरा सहयोग रहा वहां पथिकजी के देहावसान के पूर्व डा. अम्बालाल शर्मा और उनके अनुज डा. बालमुकन्द शर्मा ने बड़ी श्रद्धा के साथ उनकी चिकित्सा-सेवा की ।

राजस्थान सेवा संघ

वैसे तो राजस्थान सेवा संघ का उल्लेख पिछले पृष्ठों में हुआ है लेकिन उसका संक्षिप्त विवरण दिये बिना उसके साथ न्याय नही होगा। अतः संघ के आजीवन सदस्य एवं पुराने पत्रकार भाई शोभालालजी गुप्त ने हमारे विशेष अनुरोध पर संघ के बारे में जो जानकारी भिजवाई है वह उन्ही के शब्दों में निम्न प्रकार है—

"सन् १९२० और १९३० के मध्य राजस्थान की रियासतों मे जन-आन्दोलनों को प्रभावित करने और उनका नेतृत्व करने मे राजस्थान सेवा संघ ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। संघ की कल्पना विजयसिंह पथिक के मस्तिष्क में उत्पन्न हुई। पथिकजी प्रारम्भ में गुप्त क्रांतिकारी हलचलों के साथ सम्बंधित रहे और बाद में उन्होने मेवाड़ राज्य को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वह एक किसान नेता के रूप में सामने आए। बिजौलिया, मेवाड़ रियासत की एक जागीर थी और यहाँ के किसान लम्बे समय से सामन्ती शोषण और उत्पीड़न के शिकार थे। पथिकजी ने बिजौलिया के किसानो को सगठित किया और उनके मुक्ति आन्दोलन का संचालन किया। इसी अरसे में उन्होने अनुभव किया कि राजस्थान मे जन-सेवा का व्रत लेने वाले सेवकों की कोई संस्था बननी चाहिए। पथिकजी, सेठ जमनालालजी बजाज के निमंत्रण पर वर्धा गए और उन्होंने सेठजी की सहायता से रियासती जनता की आवाज बुलन्द करने के लिए "राजस्थान केसरी" नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। सेठ जमनालालजी के कारण उस समय वर्धा राजस्थान के नेताओं का केन्द्र बन गया था। पं. अर्जुनलालजी सेठी और ठाकुर केसरीसिंहजी बारहठ भी उस समय वर्धा पहुंचे हुए थे। राजस्थान सेवा संघ की स्थापना के बारे में इन नेताओं में विचार-विमर्श हुआ और सन् १९२१ के प्रारम्भ में उसकी बाकायदा स्थापना कर दी गई।

गोखलेजी ने भारत सेवक समिति की स्थापना की थी जिसमें देश की आजीवन सेवा करने वाले देश-सेवकों को भरती किया जाता था। राजस्थान सेवा संघ भी उसीसे मिलती-जुलती संस्था थी। उसके सदस्यों की दो श्रेणियाँ निर्धारित की गईं। पहली श्रेणी में वे कार्यकर्त्ता थे जो जीवन भर राजस्थान की सेवा करने की प्रतिज्ञा लेते थे और दूसरी श्रेणी में वे लोग जो अल्प अवधि के लिए अपनी सेवायें देते थे। आजीवन सदस्यों की शर्तें काफी कड़ी थीं। आजीवन सदस्यों को अपनी निजी सम्पत्ति संस्था को दे देनी पड़ती थी और स्वेच्छा से गरीबी को अंगीकार करना होता था। उसके बाद वे कोई निजी सम्पत्ति नहीं बना सकते थे और उन्हें अपना सारा समय और शक्ति संस्था के उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए समर्पित कर देनी पड़ती थी। प्रारम्भ में पथिकजी, रामनारायणजी चौधरी और हरिभाई किंकर संघ के आजीवन सदस्य बने। पथिकजी उसके अध्यक्ष थे और चौधरीजी मंत्री। यद्यपि राजस्थान सेवा संघ की स्थापना वर्धा में हुई थी, किन्तु उसका मुख्य कार्य-क्षेत्र राजस्थान था। इसलिए उसके संचालक उसे जल्दी ही अजमेर ले आए। ब्रिटिश शासित होने के कारण अजमेर में रियासतों की अपेक्षा राजनीतिक गतिविधियों के लिए अधिक स्वतंत्रता उपलब्ध थी और वह राजस्थान के मध्य में स्थित होने के कारण भी सेवा-कार्य के लिए अधिक सुविधाजनक स्थान था। अजमेर आ जाने के बाद संघ के सेवकों की संख्या और शक्ति बढ़ती गई। श्री माणिक्यलाल वर्मा, पथिकजी की प्रेरणा पर राज्य की नौकरी से त्यागपत्र देकर बिजौलिया के किसान-आन्दोलन में कूद पड़े थे। वह भी संघ में उसके आजीवन सदस्य के रूप में शामिल हुए। बिजौलिया के पुराने जनसेवी सीतारामदासजी साधू ने सहयोगी सदस्य के रूप में संघ को अपना सहयोग दिया। कोटा रियासत में संघ की शाखा स्थापित हुई, जिसका संचालन संघ के आजीवन सदस्य पं. नयनूरामजी शर्मा ने किया। शर्माजी पुलिस इंस्पेक्टर की नौकरी छोड़कर सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में उतरे थे और रियासती क्षेत्र में रहने वाले पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने रियासती जनता के अभाव-अभियोगों के बारे में समाचार-पत्रों में अपने नाम से लिखना शुरू किया। उस समय रियासतों में इतना आतंक था कि कोई बिरला ही अन्याय की आवाज मुखर करने के लिए प्रकाश में लाने का साहस कर सकता था। अतएव लोग गुमनाम समाचार पत्रों में समाचार भेजते थे। पं. नयनूरामजी शर्मा

रियासत में लम्बे समय तक जेल में बन्द रहना पड़ा। उन्होंने कोटा रियासत में हाड़ौती शिक्षा मण्डल के द्वारा शिक्षा-प्रसार का अच्छा काम किया। राजस्थान सेवा संघ के आजीवन सदस्यों में करौली के कुंवर मदनसिंहजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह राजघराने से सम्बन्धित थे, किन्तु रियासती जनता के कष्टों से द्रवित होकर वह सार्वजनिक क्षेत्र में कूद पड़े। उन्होंने भी रियासत के भीतर बैठकर आन्दोलन चलाए और खुले रूप से समाचार पत्रों में रियासत की जनता के अभाव-अभियोगों के बारे में लिखा। इन पंक्तियों के लेखक ने पथिकजी से देश-भक्ति की दीक्षा प्राप्त की और वह संघ में उसके आजीवन सदस्य के रूप में शामिल हो गया। पं. लादूरामजी जोशी ने शेखावटी में विधवा-विवाह करके उस समय सामाजिक क्रांति की दिशा में एक साहसपूर्ण कदम उठाया। संघ को उनकी सेवायें और सहयोग भी प्राप्त हुआ।

इस प्रकार संघ का परिवार बढ़ता गया। सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने उसके माध्यम से राजस्थान की पीड़ित जनता की सेवा की। संघ के कार्यकर्त्ताओं में गहरी कौटुम्बिक भावना विकसित हुई। कार्यकर्त्ता रूखा-सूखा खाकर भी रात-दिन संघ की प्रवृत्तियों में जुटे रहते थे। उन्हें अपनी अपेक्षा अपने ध्येय की अधिक चिन्ता रहती थी। कार्यकर्त्ताओं का कष्टमय जीवन हर किसी की सहानुभूति खींच लेता था। कार्यकर्त्ता भी हर प्रकार के कष्टों और आपत्तियों का सामना करने के लिए खुशी-खुशी प्रस्तुत रहते थे।

राजस्थान की जनता उस समय राजाओं और उनके सामन्तों के स्वेच्छाचार और दमन से सर्वाधिक पीड़ित थी और उससे मुक्ति प्राप्त करना ही उसकी प्रमुख समस्या थी।

राजस्थान सेवा संघ के अजमेर में आ जाने के बाद सबसे पहले *बिजौलिया की समस्या पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ा। बिजौलिया में* सामन्ती शोषण के विरुद्ध जो विद्रोह की अग्नि सुलगी, वह आस-पास के क्षेत्रों में भी फैलती जा रही थी। जनता अपने कष्ट-निवारण के लिए संघ के कार्यकर्त्ताओं से पथ-प्रदर्शन की माँग कर रही थी। ब्रिटिश-सरकार की नींद में भी खलल पैदा हुई और उसने रियासती शासकों को बिजौलिया-समस्या को हल करने के लिए प्रेरित किया। किसानों

और अधिकारियों के बीच जो समझौता वार्त्ता चली, उसमें संघ के कार्यकर्त्ता श्री रामनारायणजी चौधरी और माणिक्यलालजी वर्मा ने मध्यस्थता की और सन् १९२२ में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार नाना प्रकार के टैक्स खत्म हुए। वेगार प्रथा उठा दी गई और किसान पंचायत को मान्यता दी गई। वर्षों के संघर्ष, सत्याग्रह और सामूहिक आन्दोलन के फलस्वरूप जन-पक्ष की शानदार विजय हुई। बिजौलिया के समझौते ने रियासती जनता में आत्म-विश्वास की एक नई भावना को जागृत किया।

मेवाड़ रियासत में जन-असन्तोष के जो लक्षण प्रकट हुए, उससे ब्रिटिश-सत्ता चिंतित हुई। यद्यपि उसके प्रवक्ता यह कहते थे कि वह रियासतों के भीतरी मामलो में हस्तक्षेप नही करती, किन्तु जरूरत पड़ने पर वह अपने कथन के विपरीत आचरण करने में संकोच न करती थी। उसने मेवाड़ के वयोवृद्ध महाराणा फतहसिंह पर दबाव डाला कि वह राज्याधिकार अपने पुत्र को सौंपकर शासन की जिम्मेदारी से अलग हो जाएं। इस सम्बन्ध में राजपूताना में गवर्नर जनरल के तत्कालीन एजेण्ट मि० हालैण्ड ने महाराणा को एक गोपनीय पत्र लिखा। उसकी प्रतिलिपि किसी तरह संघ के हाथों में आ गई और उसने रियासत में ब्रिटिश-हस्तक्षेप का सार्वजनिक रूप से विरोध किया। संघ की यह मान्यता थी कि ब्रिटिश-हस्तक्षेप जनता के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकता। उसका कहना था कि राजा-प्रजा अपने विवाद आपस में निपटा लेंगे, किन्तु बाहरी शक्ति को अपना प्रभाव बढाने का अवसर न देंगे। महाराणा फतहसिंह के हक में यह बात भी थी कि वह स्वतंत्रचेता नरेश थे और ब्रिटिश-सत्ता ऐसे राजाओं को सहन नहीं करती थी। संघ के आन्दोलन का यह परिणाम आया कि ब्रिटिश-सत्ता को कुछ समय तक मेवाड़ मे अपना हाथ रोक देना पड़ा और वह महाराणा के अधिकार पूरी तरह नही छीन पाई।

संघ की हमदर्दी अन्याय-पीड़ितों के साथ रही, फिर चाहे वह कोई भी क्यों न रहे हों। वस्तुतः तो रियासती जनता ही मुख्य रूप से अन्याय और उत्पीड़न का शिकार थी और इसलिए संघ को मुख्य रूप से उसी की लड़ाई लड़नी पड़ी। किन्तु एक ऐसा भी प्रसंग आया कि धौलपुर रियासत ने जब झिरी के ठाकुर के खिलाफ फौजकशी की तो संघ ने

जागरीदार के पक्ष को उचित समझते हुए उसका साथ दिया। संघ यह चाहता था कि न राजा जागीरदारों पर जुल्म करें और न जागीरदार अपनी रियाया को सतायें।

संघ ने राजस्थान में बेगार-प्रथा के विरुद्ध जबरदस्त मुहिम शुरू की। रियासती जनता को बेगार का भारी कष्ट था और उसके नाम पर शासक मनमाने अत्याचार करते थे और लूट खसोट चलाते थे। संघ के कार्यकर्त्ताओं ने बेगार के सम्बन्ध में जगह-जगह से तथ्य एकत्र किये और भारत-भक्त दीनबन्धु एण्ड्रूज को इस सम्बन्ध में राजस्थान की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया। मि० एण्ड्रूज किन्हीं परिस्थितियों वश राजस्थान के दौरे पर न आए, किन्तु संघ के बेगार-विरोधी आन्दोलन के फलस्वरूप कुछ रियासतों में बेगार की सख्तियों मे कमी हुई।

मेवाड़ रियासत ने जहाँ बिजोलिया में समझौते का रुख लिया, वहाँ अन्य स्थानों में दमन किया। संघ के आजीवन सदस्य श्री हरिभाई किंकर बसी इलाके में किसानों की एक आम सभा में अनेक किसानों के साथ गिरफ्तार किये गये और उन्हें राजद्रोह के अपराध में छ: महीने के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। जेल की अवधि समाप्त होने पर उन्हें रियासत से निर्वासित कर दिया गया और यह निर्वासन आज्ञा वर्षों तक बनी रही। जेल और निर्वासन रियासती शासकों के हाथों में दमन के सहज अस्त्र थे। उधर धांगडमऊ बोराव में संघ के मंत्री श्री रामनारायण चौधरी और उनके दो सहयोगी साधू सीतारामदासजी एवं प्रेमचन्दजी भील भी उदयपुर रियासत द्वारा गिरफ्तार किये गये और उन पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया। यह मामला कई महीने चला और अन्त में तीनों देशभक्तों को रिहा कर दिया गया।

मेवाड में किसानों के आन्दोलन के साथ-साथ भीलों में भी असन्तोष फैला। भीलो का नेतृत्व श्री मोतीलाल तेजावत ने किया। भील आन्दोलन केवल एक राज्य की सीमा में ही सीमित नही रहा। सिरोही, दांता, पालनपुर, ईडर, जोधपुर आदि रियासतें भी उसकी चपेट में आई। लाखो भील, मध्ययुगी सामन्ती शोषण के विरुद्ध उठ खड़े हुए। उनके असन्तोष को दबाने के लिए मेवाड और सिरोही रियासतों में हत्या काण्ड हुए। सैकड़ों भील मारे गये। संघ के

कार्यकर्त्ताओं को भील-आन्दोलन में हस्तक्षेप करना पड़ा। उस समय पं० मदनमोहन मालवीय के सुपुत्र पं० रमाकान्त मालवीय सिरोही के दीवान थे। उन्होंने संघ से मध्यस्थता की याचना की थी, किन्तु समस्या का समाधान नहीं हो पाया और शासकों ने बल-प्रयोग द्वारा भील-आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की। संघ ने सिरोही के भील हत्या-काण्ड की अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में जांच-पड़ताल की और हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री रामनारायण चौधरी और श्री सत्यभक्त के हस्ताक्षरों से प्रामाणिक जांच-रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसने देश-विदेश में तहलका मचा दिया। संघ ने पीड़ितों के लिए सहायता का भी प्रबन्ध किया और संघ के सहयोगी सदस्य श्री कन्हैयालाल कलयंत्री ने इस कार्य के निमित्त धन-संग्रह का उल्लेखनीय प्रयास किया। कुछ काल बाद भील-नेता श्री तेजावत ईडर के अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार करके मेवाड़ रियासत के हवाले कर दिये गये, जहां उन्हें अनेक वर्षो तक जेल में बन्द रखा गया।

मेवाड़ के अलावा बून्दी रियासत भी किसान-आन्दोलन से प्रभावित हुई। बून्दी राजस्थान की एक अत्यन्त पिछड़ी हुई रियासत थी। बून्दी के किसान-आन्दोलन में पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी बहादुरी के साथ हिस्सा लिया और उन्हें मारपीट का शिकार बनना पड़ा। संघ ने बून्दी रियासत में स्त्रियों के साथ हुए अत्याचारों की प्रामाणिक जांच रिपोर्ट प्रकाशित कराई। मेवाड़ और बून्दी रियासत में जन-जागृति उत्पन्न करने में बिजौलिया के अंध-कवि श्री भंवरलाल स्वर्णकार ने उल्लेखनीय हिस्सा लिया और बून्दी रियासत ने उन्हें कई वर्षो तक बून्दी और अजमेर की जेलों में बन्द रखा।

बिजौलिया के निकटवर्ती बेगूं जागीर में भी सामन्ती शोषण और उत्पीड़न का वैसा ही चक्र चलता था। आन्दोलन से घबरा कर बेगूं के जागीरदार संघ की मध्यस्थता के अधीन किसानों के साथ उदार समझौता करने को उद्यत हो गये। किन्तु अंग्रेज-सरकार के प्रतिनिधियों ने यह समझौता नहीं होने दिया। रियासत के द्वारा किसानों पर मनमाना फैसला थोपने की कोशिश की गई। किसानों ने इसका विरोध किया तो रियासत ने गोली-काण्ड किया और सैकड़ों किसान गिरफ्तार कर लिये गये। पथिकजी किसानों की सहायता करने के लिए

वेगूं के समीप गये हुए थे। उन्हें बीमारी की अवस्था में गिरफ्तार कर लिया गया। यह सन् १६२३ की बात है। पथिकजी पर एक विशेष न्यायलय के सामने राजद्रोह का अभियोग चलाया गया जो वर्षों चलता रहा। इस मुकद्दमें की समाचार पत्रों में बड़ी चर्चा हुई। पथिकजी ने न्यायलय के सामने विस्तृत बयान दिया, जो ऐतिहासिक महत्व रखता है। उसमें ब्रिटिश सरकार और रियासतों के सम्बन्धों की चर्चा के अलावा मेवाड़ के जन-आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया था। पथिकजी को रियासत के बाहर के किसी वकील की सहायता नहीं लेने दी गई। पथिकजी के विरुद्ध अपराध सिद्ध नहीं हुआ, किन्तु राज्य की सर्वोच्च सत्ता ने न्यायलयों के फैसलों के विरुद्ध उन्हें लम्बी सजा दे दी। पथिकजी गिरफ्तारी के पांच वर्ष बाद सन् १६२८ में उदयपुर जेल से रिहा हुए तो उन्हें मेवाड़ रियासत से निर्वासित कर दिया गया। पथिकजी कानूनी लड़ाई में जीतकर भी रियासती तानाशाही के प्रकोप से नहीं बच सके। किन्तु उनके और उनके जैसे देशभक्तों के कष्ट-सहन, रियासती तानाशाही के अन्त को निकट लाने में सहायक हुए, इसमें कोई सदेह नहीं है।

राजस्थान सेवक संघ और उसके कार्यकर्त्ताओं को रियासती शासकों के अलावा अंग्रेज शासकों का बराबर कोप-भाजन रहना पड़ा। अजमेर पुलिस ने एक बार राजस्थान सेवा संघ के प्रेस और कार्यालय की जबरदस्त तलाशी ली और सारा रिकार्ड उठा कर ले गई जो कई गाड़ियों में भरा गया। इस रिकार्ड को महीनों वापस नहीं लौटाया गया। अजमेर सरकार ने विभिन्न रियासतो के प्रतिनिधियों को उसकी जाँच-पड़ताल में शामिल किया। उद्देश्य यह था कि रियासती हुकूमतों को उन संवाददाताओं के नाम-पते मालूम हो जाएं जो सघ को रियासती जनता के अभाव-अभियोगों को लिखकर भेजा करते थे। यह अंग्रेज नौकरशाही और रियासती नौकरशाही की मिलीभगत का ज्वलन्त उदाहरण था। रियासती नौकरशाही इन सवाददाताओ को सहज परेशान कर सकती थी और वह ऐसा करने में पीछे न रही।

एक ओर उदयपुर रियासत ने पथिकजी को गिरफ्तार किया तो दूसरी ओर अजमेर सरकार ने संघ के मुखपत्र 'तरुण राजस्थान' में प्रकाशित दो लेखों के सम्बन्ध में राजद्रोह का अभियोग लगाकर इन

पंक्तियों के लेखक और रामनारायणजी चौधरी को गिरफ्तार कर लिया। 'तरुण राजस्थान' में प्रकाशित सामग्री के लिए कानूनी दायित्व मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक के रूप में इन पंक्तियों के लेखक पर ही था, किन्तु उसके साथ संघ के मंत्री रामनारायणजी चौधरी को भी फांसने की चेष्टा की गई, जो अन्ततः सफल नहीं हुई। अजमेर सरकार को इन पंक्तियों के लेखक को एक वर्ष कठोर कारावास का दण्ड देकर ही संतुष्ट हो जाना पड़ा। संघ ने शुरू में 'नवीन राजस्थान' के नाम से हिन्दी का साप्ताहिक पत्र अजमेर से प्रकाशित करना आरम्भ किया, किन्तु थोड़े समय वाद ही उदयपुर रियासत ने अपनी सीमाओं के भीतर उसका प्रवेश बन्द कर दिया। डाक विभाग ने जो ब्रिटिश सरकार के हाथ में था, रियासत के भीतर उसका वितरण बन्द कर दिया। तब पत्र का नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' कर दिया गया। किन्तु इस नये पत्र को भी उदयपुर रियासत का कोप-भाजन बनना पड़ा। उदयपुर रियासत की नकल पर आगे चलकर बूंदी और बीकानेर रियासतों ने भी इस पत्र के दाखिले पर रोक लगाई, किन्तु ये रियासतें उसका गला घोटने में असफल रहीं। पत्र रियासती जनता का प्रीति-भाजन बना रहा। रेलवे की सीमा में जाकर लोग निषिद्ध अखबार को पढा करते थे।

अलवर में सन् १९२५ में नीमूचाणा हत्याकाण्ड हुआ। अलवर रियासत की फौजों ने इस गाँव को घेर लिया और लोगों को मशीनगन से भून दिया। नीमूचाणा और आसपास के किसान बढ़े हुए लगान और परम्परागत अधिकारों के छिने जाने के खिलाफ विरोध प्रकट कर रहे थे। गांधीजी ने नीमूचाणा की घटना की डायर शाही से तुलना की थी। नीमूचाणा हत्याकाण्ड की जाच में राजस्थान सेवा सघ ने योग दिया और देश के भीतर और बाहर पीड़ितों का पक्ष उपस्थित किया एवं उनकी यथा सम्भव सहायता की।

इधर जयपुर रियासत के प्रमुख ठिकाने सीकर के किसानों में लाग-बेगार के विरुद्ध असन्तोष भड़का। सीकर ठिकाने के किसानों ने राजस्थान सेवा संघ की सहायता प्राप्त की। उसने बीच-बचाव की कोशिश की, किन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला। जयपुर रियासत ने सीकर के किसान-आन्दोलन के सिलसिले में पहले तो संघ के

आजीवन सदस्य श्री हरिभाई किंकर और बाद में संघ के मंत्री श्री रामनारायण चौधरी को निर्वासित कर दिया। चौधरीजी ने बाद में इस निर्वासन का उल्लंघन किया और कारावास का दण्ड भुगता।

राजस्थान सेवा संघ ने राजस्थान की विभिन्न रियासतों में निरंकुशता के विरुद्ध डट कर मोर्चा लिया। रियासती शासक उससे बेहद चौंकते थे और उसकी हलचलों का दमन करने के लिए सदैव खड्ग-हस्त रहते थे। किन्तु न तो दमन और न ही प्रलोभन ही उसे अपने स्वीकृत मार्ग से विचलित कर सके। जब संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता जेलों मे बन्द कर दिए गए तो श्री क्षेमानन्द राहत और बाबा नृसिहदास ने उसकी प्रवृत्तियों को बन्द नही होने दिया। सेठ जमनालालजी बजाज यद्यपि सघ की रीति-नीति से पूरी तरह सहमत नहीं थे, किन्तु कठिनाई के समय उन्होने संघ को सहायता देने में संकोच नहीं किया। इसके अलावा सघ के अनन्य सहायकों मे दो-तीन नामों का उल्लेख किये बिना नही रहा जा सकता। एक थे श्री मणिलाल कोठारी जो सरदार पटेल के प्रमुख सहयोगी थे। स्वयं काठियावाड़ की एक रियासत के निवासी होने के कारण रियासती समस्याओं मे वह सजीव दिलचस्पी लेते थे और राजस्थान सेवा संघ के साथ उनका घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित हो गया था। भील-आन्दोलन चला अथवा पथिकजी गिरफ्तार हुए या नीमूचाणा में हत्याकाण्ड हुआ, वह हर बार सहायता के लिए दौड़े आए। अंग्रेज उच्चाधिकारियो और रियासती प्रधानों को प्रभावित करने की उनमें बड़ी क्षमता थी। संघ के कार्यकर्त्ताओं को उन्होंने एक कुटुम्बी की तरह अपना स्नेह और आशीर्वाद दिया और यथा सम्भव मार्ग प्रशस्त किया। संघ की भाति रियासतों में ब्रिटिश हस्तक्षेप को वह भी नापसन्द करते थे। दूसरे महानुभाव थे कानपुर से प्रकाशित होने वाले हिन्दी साप्ताहिक 'प्रताप' के यशस्वी सम्पादक श्री गणेशशकर विद्यार्थी। जब पथिकजी ने बिजौलिया मे किसान-आन्दोलन शुरू किया तो विद्यार्थीजी ने उसे अपने पत्र के माध्यम से पूरा प्रकाशन दिया और सारे देश का ध्यान इस आन्दोलन की ओर खीचा। सेवा संघ की प्रवृत्तियों मे उन्होंने सजीव दिलचस्पी ली और संघ को जब भी राजकीय-कोप का शिकार होना पड़ा, उन्होने निःस्वार्थ भाव से उसकी मदद की। इसी प्रकार रियासती जनता के अन्यतम नेता और 'सौराष्ट्र' पत्र के सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ

श्रौर उनके साथियों ने समय-समय पर प्रचार और प्रकाशन द्वारा संघ को अपने उद्देश्यों की पूर्ति में भरपूर सहयोग दिया और जरूरत पड़ने पर आर्थिक सहायता का भी प्रबंध किया।

राजस्थान सेवा संघ ने अपने कार्यक्रम में रियासतों के भीतर जागृति उत्पन्न करने और जनता के अभाव-अभियोगों को दूर कराने के काम को प्रधानता दी। कांग्रेस रियासतों के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति पर चल रही थी। जहाँ तक अंग्रेजी-सत्ता को हटाने का प्रश्न था, संघ के कार्यकर्ता पूरी तरह कांग्रेस के साथ थे किन्तु साथ ही उनकी मान्यता थी कि रियासती जनता की मुक्ति का कार्य राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रयासों का पूरक होगा। रियासतों के उस समय के वातावरण में ब्रिटिश भारत की भांति कार्यकर्त्ता अगर खुले रूप में काम करने की स्थिति में न होते तो वह प्रच्छन्न रूप में भी अपना काम करते थे।

देश की केन्द्रीय असेम्बली में देशी राज्यों सम्बन्धी मामलों पर चर्चा नहीं हो सकती थी। अतः संघ ने रियासती प्रजा की आवाज को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में उठाने का प्रबन्ध किया। इस कार्य में उसे इंग्लैण्ड की एक महिला कार्यकर्त्ता कुमारी हडसन से बड़ी सहायता मिली। संघ द्वारा प्रेषित सामग्री के आधार पर मजदूर दल के अनेक सदस्य ब्रिटिश ससद में रियासती घटनाओं के बारे में प्रश्नादि पूछते थे। उनमें पैथिक लारेंस का नाम भी लिया जा सकता है जो बाद में मजदूर सरकार में भारत सचिव के पद पर नियुक्त हुए थे।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि राजस्थान सेवा संघ सन् १९२८ के लगभग उसके प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में मतभेद पैदा हो जाने के कारण छिन्न-भिन्न हो गया। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने इन मतभेदों को दूर करने की कोशिश की थी, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। संघ के संचालकों ने आखिरी उपाय के रूप में संघ और उसके मुखपत्र 'तरुण राजस्थान' को श्री मणिलाल कोठारी को सौंप दिया था। उनकी ओर से 'तरुण राजस्थान' को शुरू में जयनारायणजी व्यास ने और बाद में श्री ऋषिदत्तजी महता ने कई वर्षों तक चलाया, किन्तु संघ तो समाप्त ही हो गया।

संघ के पुराने कार्यकर्त्ता अपने ढंग से रियासती जनता की सेवा का काम फिर भी करते रहे। यदि राजस्थान सेवा संघ जैसी निष्ठावान और तेजस्वी संस्था जीवित रहती तो उसने राजस्थान के अगले घटनाक्रम में निश्चय ही और भी महत्वपूर्ण योग दिया होता। किन्तु प्रगति का रथ किसी की प्रतीक्षा नही करता। नई शक्तियाँ रिक्त स्थान को भरती रहती है। राजस्थान सेवा संघ को इस बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने आधुनिक इतिहास के एक कठिन काल में रियासती जनता की आकांक्षाओं और अभिलाषाओ को शक्तिशाली अभिव्यक्ति दी और उसकी मुक्ति के लिए तेजस्वी नेतृत्व सुलभ किया। वह अपने पीछे कार्यकर्त्ताओं के समर्पित जीवन की एक अविस्मरणीय कहानी शेष छोड़ गया है। जब राजस्थान अनेक छोटी-बड़ी रियासतो में विभक्त था तब उसने समग्र और संयुक्त राजस्थान की कल्पना की थी और उसके मच पर विभिन्न रियासतों के कार्यकर्त्ता समान उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए एकत्र हुए थे। आज का लोकतंत्री और संयुक्त राजस्थान उन्ही सपनों की पूर्त्ति है। आज उसके सामने नई समस्याए है जो नए हल मांगती है। पुराने युग की त्याग-भावना और कर्त्तव्यनिष्ठा को अगर आज लौटाया जा सके तो निश्चय ही राजस्थान का भविष्य और उज्जवल हो सकता है।"

पीड़ितों का पंछीड़ा

•

यह श्री माणिक्यलाल वर्मा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक गीत है जो उस समय लिखा गया था जब पथिकजी बिजौलिया के किसानों का संगठन कर रहे थे। हजारों किसानों में जब वर्माजी ने उसे गाया तो किसान आत्म-विभोर हो गए। आगे चलकर यह गीत बहुत लोक-प्रिय हुआ। ऊपरमाल के किसान इसे प्रत्येक सभा में गाते थे:—

मर्दा ओरे काली तो भादूड़ारी रातां सोवे छा।
तन का कपड़ा भी खोवे छा, हाय पड़्या-पड़्या थे रोवे छा।
आंसू सूं डीलड़ो धोवे छा।
मर्दा ओरे———
ढाडा थानें जाए सिपाही कूटे छा, धन-माल कमाई लूटे छा,
दूजां के खूंटे-खूंटे कूदे छा आपस में भाई फूटे छा,

मर्दा ओरे———
बेगारां का जूता थांकै सिर पर लागै छा ।
पहरा में नितका जागै छा, थे देख सिपाही भागै छा ।
बेगारी नाम सूं वागै छा, पहरा में नितका जागै छा ।
मर्दा ओरे———
सहणा को वो खाट तोडवो उठयो छा ।
लोहू को गुटको छूट्यो छो, लुण्या को हांडो फूट्यो छो ।
यो नार आंक सूं खूट्यो छो ।
मर्दा ओरे———
पड़क दड़क रुपया को छन-छन निठगी छी ।
कठती वत्ती सब कटगो छी ।
घिसा ओर गाडयां मिटगी छी, परणा की कीमत घटगी छी ।
मर्दा ओरे———
दौड दौड़ कर घूटयो नजराणो देवै छा ।
छानै छानै रिश्वत लेवै छा ।
वो पागल उल्लू कहवै छा, बल्दां ज्यूं रात दिन वहवै छा ।
मर्दा ओरे
एकठ थां की देख सभा ने रोकै छा ।
वन्दे की बोली टोकै छा । झूठां भूता ने धोकै छा,
बिन वादल मोर्‌या कूकै छा ।
मर्दा ओरे———
थां का वालक हाथ कवारा रैवै छा ।
पण नूत वराड़ो देवै छा, घर भूखा रहवी सहवै छा ।
थे हाय निसासी लेवै छा ।
मर्दा ओरे———
हाकम हाकम करना हास्या छा ।
कूंतां में पूरा मास्या छा, घर मे नही बचता खास्या छा ।

थांने घबराबा सटकै छै ।
सत देख्यां पाछा भ्रटके छै ।।
मर्दां श्रोरे———

थाको सत को काम कालजै सालै छै ।
अब पसली-पसली हाले छै ।।
वैं झूठ अडंगा घाले छैं ।
पण अपनी चालां चाले छै ।।
मर्दां श्रोरे———

वै भी मिलकर एकठ करबा लाग्या छै ।
अब अठी-उठी ने भाग्या छै ।।
रुपया करसां का खाग्या छै ।
भांडा खाली अब वाग्या छै ।।
मर्दां श्रोरे———

देखी थांकी चोटी हाकम पकड़ेगा, दोई हाथ बांध वैं जकड़ेगा ।
तब रुपया थांका निकलैगा, मजबूती सूं पाछा सकड़ेगा ।
मर्दां श्रोरे———

हाथ जोडबो छोड़ श्राख्या-राती करल्यो, ई खुसामद ने धर दो, दूरी ।
झूठो मत पीवो जड़दो, यो मरद नसो डील में भरदो ।
मर्दां श्रोरे———
करज्यो ललकारी

वैरी अन्त में धूजैगा, खरला मे भी जस गू जैगा
हो रोग अन्यायी सूजैगा, पग थांका पाछा पूजैगा ।
मर्दां श्रोरे काली तो भादूडारी रातां सोवे छा ।

किसानों का झंडा

लहरावेगो, लहरावेगो, झंडो यो करसाणां को।
घर महलां पर, मींदारापे, कोट किलांपर भडारोपे॥
गांव गलीमें बाजारांपे, पुर द्वारांपे, दीवारापे।
यो हल मंडित ध्वज निशान है, करसा का अरमानां को॥ लह०॥

घणा सो चुक्या जाग उठ्या हां, आलस निद्रा त्याग उठ्या हां।
घणी सह चुक्या अब न महांगा, लेकर गाँव स्वराज्य रहांगा।
देखलिया मह्या का लक्खण, स्वार्थ धरम धनवाना को॥ लह०॥

घड़ी घड़ी धोको दे दे कर, वोट किसानां का ले ले कर।
म्हां पर ही था छुरी चलाई, सेवा वढिया था की भाई।
अब न चलेगो म्हां पर जादू, था शहरी सैताना को॥ लह०॥

गांधीजी की छाप लगाकर, चरखा को झंडो फहराकर।
खूब दुकान चलाई थांने, लूट प्रजा सब खाई थांने।
अब यो ब्लैक नहीं चलवा को, धोखा की दुकान्यां को॥ लह०॥

अब न कणी की साख भरांगा, म्हा को परबंध म्हई करांगा।
पंच बोर्ड कौंसिल सब ही में, वोट किसानों ने म्हां दांगा।
अब न मिलेगो ठेको थांने, जगलात को खाण्यां को॥ लह०॥

छूत अछूत किसान बलाई, सब मिल एकट करलो भाई।
सब मिल कर पंचायत थापो, एकट कर सारो दुःख कांटो।
मत गांवां में जमवा दो अब, पजो फिर श्रीमानाँ को॥ लह०॥

गृह उद्योग चलावांगा म्हें, पक्को माल बनावांगा म्हे।
घर घर अलख जगावांगा म्हे, सबने ज्ञान सिखावांगा म्हें।
बली बनांगा क्यूं कि जगत में, सब कुछ है बलवानां को॥ लह०॥
लहरावेगो, लहरावेगो, झंडो यो करसाणां को॥

—विजयसिंह 'पथिक'

किसानां का दुःख सभी मिट जाय

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुःख सभी मिट जाय ॥

था नेना विन भटक रया हां छूजा दारा पटक रया हां ।
विजयसिंहजी ठीक वखत पर वाग सम्हाली श्राय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुःख सभी मिट जाय ॥

जागीरदार सेठियां दोई, करसां का ऐ सगा न कोई ।
दोन्यू लूट लूट करसांनें तू दा रहा फुलाय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुख सभी मिट जाय ॥

थाका फदा सू बचवाने, गावा को स्वराज्य रचवाने ।
कमर बांध करसाणा सभा को झंडा दो फहराय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुख सभी मिट जाय ॥

गाव गांव पंचायत थापो, एकट कर या कूट उचापो ।
न्याय नीति को राज्य बणाग्रो ग्रन्यायी थर्राय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुःख सभी मिट जाय ॥

ग्रपने झगड़े ग्राप निवेटो, शुद्ध न्याय, हो, चाहे बेटो ।
ऐसी करदो, रिस्वत खोरा पास न कोई जाय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओं ! थांका दुःख सभी मिट जाय ॥

शिक्षा, शासन, चौकीदारी, सब पर हो थांकी मुखत्यारी ।
तब तक झगड़ो करसांणा को कोई सूं न रुकाय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओ ! थाका दुःख सभी मिट जाय ॥

सौ में नव्वे हैं करसाण, सब सूं ज्यादा भरा लगाण ।
फिर कुण है जो म्हाका जीतां म्हा को हक खा जाय ।

गाढ़ा रीजो रे मर्दाओ ! थांका दुःख सभी मिट जाय ॥

—'राजस्थानी'

तर्ज बगड़ावत

गुरू गणपति सरस्वती ने ध्याऊँ रे सुजाण
राजस्थान का गुण गाऊँ रे सुजाण
झुकाव—नित करो प्रभू ने याद, मरदां वैकुण्ठां जो जावणो !
भइ तजो नरक को पन्थ, मरदां नर तन फिर नहिं पावणो !
ई भवसागर के मांय, मरदां फिर क्यूं गोता खावणो !
आखिर मरणो निश्चय वात, मरदां रहां चार दिनां का पावणा !!
घुमाव—तूं लख चौरासी में भमतो आयो रे सुजाण !
नीठां नीठां मिनख जमारो पायो रे सुजाण !
भइ बोलो सदा सच वात, मर्दां झूठी गप नहिं हाँकणी !
भइ तज दो कडुवा बोल, सब सूं मीठी वाणी भाखणी !
या सतपुरुषां की कैण, मरदां हिरदा मांही धारणी !
थां ने कहबो वारम्बार, मरदाँ खोटी आदत त्यागणी !!
घुमाव—नहितो ई दुनिया में ज्यूं आयो ज्यूंही जावेलो सुजाण !
ना कई लारै लायो, न ले जावेगो रे सुजाण !
झुकाव-भई संग आशी पुण्य अर पाप, मर्दां और लार नहिं आवशी !
नर तूं करले भलाई का काम, नहि तो परभव गोता खावशी !
मर्दां करै जो खोटा काम, निश्चय जम की जूत्याँ खावशी !
मरदा ई दुनिया के मांय कइ आया कइ जावशी !
घुमाव—खोटा काम करवा थी, खोटी गति में जावै रे सुजान !
अर आछा करम करवासूं सुजस जग मे छावै रे सुजान !
झुकाव—भइ काम क्रोध मद लोभ, मरदां चारयांसूं मुख मोड़लो !
करो सतपुरुषां को संग, मरदां माया बन्धन तोड दो !
भाई राखो सबमे प्रेम, मरदां फूट फजीती छोड दो !
हा चुगली खाबो छोड़, मरदां ममता कंठ मरोड़ दो !
घुमाव—ममता ने मारया सूं घणो सुख पावै रे सुजाण !
जाति सेवा करवा सूं, स्वरग पद पावै रे सुजाण !

भुकाव—भइ रे गांजौ तमाखू भंग मरदां दारू पीवो छोड़ दो !
भई सदा कलाली मांहि मरदां लोग हंसावो छोड़ दो !
मत तको पराई नार, मरदां परणी ने हि निभावजो !
भई बाल वृद्ध बेजोड मरदां बेटी मत परणावजो !
ले बेटी पर धन माल मरदां नर कुण्डां मत जावजो !
घुमाव—बेटी को पीशो खावा वालो घोर नरक पावै रे सुजाण !
झगड़ा का नाम पै लुगाई बेचै तो कीड़ा पड़ै रे सुजाण !
झुकाव—भई रे वखत वदल गी देख छोरा छोरया ने पढ़ावणा !
भइ रे दोरा कमाया माल हिडक्या गंडका ने न खवावणां !
भइ रे पढा गुणा भरपूर वां ने रक्षा जोग वखावणा !
भइ रे लोभ काम को छोड़ द्यो, यो गयो समय नहीं आवणा !
घुमाव—ई जमाना मे जो कौम भणेगी वाही बढेगी रे सुजाण !
जो मूरख रहेगा वां ने दुनिया ठगेगी रे सुजाण !
झुकाव—भई बड़ा बड़ा गणराज, मरदां बीर भूमि में होगया !
भई लाखों बांका वीर लड़ लड ई भूमि में सो गया !
भई पंचायत को राज साचो मालव, गूजर, भोगियो !
भइ गोदारो गणराज, मरदा मारवाड़ में खोगयो !
घुमाव—वै मर गया पर राजां ने सिर न झुकायो रे सुजाण !
जब तक जीता रया पचायती झंडो न झुकायो रे सुजाण !
भई ढलती फिरती छांव मरदां, ई दुनिया में जानणी !
भई घडी फेर करसाण उठजा थारी भी है आवणी !
भई ऊंचो हो जा जाग मरदां है फिर मूंछा तानणी !
भई खोई सारी चीज मरदां है अब फिर सूं खानणी !
घुमाव—फेर करसाँको राज होवाको आज मौको आग्यो रे सुजाण !
थूं चेत जाय तो फेर थांरो भाग जाग्यो रे सुजाण !

—※—

ऊपरमाल

धन्य धन्य है ऊपरमाल।
अजब हो गया तेरा हाल॥

बहुत दिनों से तू सोती थी, सिसक सिसक कर तू रोती थी।
कैसा सुख, कैसा दुःख,
कैसा चोर ठगों का जाल।
जाता कहां कमाया माल॥ धन्य०॥ १॥

आंख खोल कर अब जागी है, धर्म कर्म में अब लागी है।
काम निहार, रह तैयार,
जननी! निज शिर केश सम्हाल।
चलदे आज अनोखी चाल॥ धन्य०॥ २॥

सुन कर तेरी भारी हांक, चहुं दिशि लोग रहे हैं झांक।
तेरे पूत, हैं मजबूत,
सत्याग्रह की लेकर ढाल।
दूर किया परवशता जाल॥ धन्य०॥ ३॥

दुनियां को बल दिखला देना, सत पर मरना सिखला देना।
करना काम, होगा नाम,
होगा फिर से उन्नत भाल।
रक्षक होंगे श्रीगोपाल॥ धन्य०॥ ४॥

भावना

पथिक की महिमा भारी जी ।
गुण गावे मेवाड़ देश सारा नर नारी जी ॥
अणी देश ने दुःख घणो हो, म्हा की कोई नहीं सुणे हो,
सू क दिया मूं काम बणे हो, लूट लूट खावे छा सारा ।
ओहदा धारी जी ॥ १ ॥

कमा कमा यूं ही रह जाता, भूखा मरता चणा चबाता ।
घास बेचकर लाग चुकाता, ई पर फिर भी पड़ता म्हा के
जूता भारी जी ॥ २ ॥

बाण्या नूंद तोलणे जाता, रजपूता सूं पहरो दिलाता ।
ब्राह्मण रोटी करबा आता, गाड़ी बैल कसां का लाता ॥
कियो दुखारीजी ॥ ३ ॥

अणी दुखा सूं दुखी होय कर, मनुष्य जन्म ने पूरो खो कर ।
अन्यायां के आगे रोकर, शरण लई जगदीश ।
लाज राखो भयहारी जी ॥ ४ ॥

राणे दुःख दियो अति भारी, स्वतन्त्रता की बाड़ उजाड़ी ।
ईश्वर बेग सुणो है म्हारी, कृपा-करी भगवान ॥
पथिक भेज्यो अवतारी जी ॥ ५ ॥

आता हि ज्ञान यही प्रगटायो, सत्याग्रह करणो सिखलायो ।
वन्दे मातरम् मन्त्र पढ़ायो, दुःख सूं लिया उबार ॥
महात्मा है तपधारी जी ॥ ६ ॥

—भंवरलाल स्वर्णकार

श्रीमती जानकीदेवी "पथिक"

श्रीमती जानकीदेवी, बिजौलिया आन्दोलन के प्रणेता श्री विजयसिंह "पथिक" की धर्मपत्नी हैं। २४ फरवरी १९३० को पथिकजी से विवाहोपरान्त ही श्रीमती जानकीदेवी का संघर्षमय जीवन आरम्भ हो गया था। अपने पति से निरन्तर साहस और धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा पाकर आप भी उनके साथ स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़ी और स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौरान दमन और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने एवं जन-मानस जागृत करने के कार्य में लगी रहीं। आजकल आप मथुरा में निवास कर रही है। तथा पथिकजी के रचनात्मक कार्यों को आगे बढाने में तल्लीन है।

••

श्री शोभालाल गुप्त का जन्म ८ सितम्बर १९०४ को मेवाड़ क्षेत्र के माडलगढ़ कस्बे में हुआ तथा प्रारम्भिक शिक्षा बिजौलिया में हुई। बिजौलिया किसान-आन्दोलन के प्रणेता श्री विजयसिंह पथिक से प्रेरित होकर आपने देश-सेवा का सकल्प लिया। आप राजस्थान सेवासंघ के आजीवन सदस्य रहे और आन्दोलन की सफलता के लिए 'तरुण-राजस्थान' का सम्पादन करते हुए आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया। सन् १९२३ में जेल गए। आप स्वाधीनता-आन्दोलन में भाग लेते हुए भी अनेक बार जेल गए। आप वर्षों दैनिक 'हिन्दुस्तान', नई दिल्ली के सहायक सम्पादक रहे। आप एक सुपरिचित पत्रकार और लेखक है।

श्री शोभालाल गुप्त
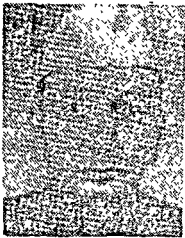
श्री रामनारायण चौधरी

श्री रामनारायण चौधरी का जन्म सन् १८९६ मे तत्कालीन जयपुर रियासत के नीमकाथाना कस्बे मे हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा तंवरावाटी अंचल में हुई। सन् १९१४ मे आप क्रातिकारी दल के सदस्य बन गए। सन् १९२० मे आप राजस्थान सेवासंघ मे शामिल हो गए और बिजौलिया के किसान-आन्दोलन तथा स्वतंत्रता-संग्राम मे अग्रणी नेता के रूप मे भाग लिया। आप १० वर्ष तक श्री नेहरू के साथ रहे। आप कई बार जेल भी गये। आपने नेहरू व गाधी पर पुस्तके लिखी और गांधी-साहित्य का अनुवाद भी किया। आप राजस्थान के वयोवृद्ध गाधीवादी नेता एवं प्रमुख पत्रकार हैं।

●●

श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी

श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी का जन्म १८ दिसम्बर १९०६ को सीकर जिले के नीमकाथाना कस्बे मे हुआ जहाँ आपने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। श्री चौधरी स्वतन्त्रता-सग्राम सेनानी, पत्रकार, गाधीवादी किसान-नेता हैं। सन् १९३० से १९४५ तक आप लगातार महात्मा गाधी के बताये मार्ग पर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सघर्षशील रहे। सन् १९३० से १९४७ तक आपने काग्रेस सेवा दल के 'कमान' के रूप मे आजादी के आन्दोलन का अजमेर मे नेतृत्व किया। रियासती-आन्दोलनो व किसान-आन्दोलनो मे भी भाग लिया। स्वतन्त्रता-सग्राम मे कई बार जेल गए। राजस्थान सेवा सघ के साथ रहकर आपने बिजौलिया किसान-आन्दोलन की सफलता मे योगदान दिया। आपने डूंगरपुर के भीलो मे भी रचनात्मक काम किया। सन् १९३६ मे "नवज्योति" साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन अजमेर मे शुरू हुआ जो वर्षों से दैनिक के रूप मे अजमेर, जयपुर एवं कोटा से एक साथ नियमित आपके प्रधान सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहा है।

श्री हरिभाई किंकर

श्री हरिभाई किंकर यद्यपि अधिक पढ़े-लिखे नही थे लेकिन अच्छे गायक थे। आपने शुरू से आखिर तक बिजौलिया किसान-सत्याग्रह मे, सत्याग्रह के प्रणेता किसान-नेता श्री विजयसिंह पथिक के साथ बराबर भाग लिया। बाद मे ब्यावर रहते हुए आजादी के आन्दोलन में भी कई बार भाग लिया और जेल गये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् श्री किंकर सोजत (पाली) में रहने लगे तथा आर्थिक तंगी से परेशान होकर एक दिन अपने शरीर पर घासलेट छिड़क कर आग लगा ली और अपनी इहि लीला समाप्त करली। लेकिन कांग्रेस और कांग्रेस-सरकार ने उनकी न तो कभी सुध ली और न कोई मदद की।

••

श्री जयसिंह धाकड राजस्थान मे पहिले किसान के बेटे थे जिन्होने आजादी के आन्दोलन मे भाग लेना शुरू किया और बिजौलिया किसान-सत्याग्रह मे भी आप शुरू से आखिर तक श्रद्धेय पथिकजी के निष्ठावान कार्यकर्त्ता बने रहे।

आप नारेली आश्रम मे भी रहे।

श्री जयसिंह धाकड़

श्रीमती अंजनादेवी (धर्मपत्नी श्री राम नारायण चौधरी) ने बिजौलिया किसान-सत्याग्रह मे प्रमुख रूप मे भाग लिया तथा आजादी के आन्दोलन मे भी भाग लिया और जेल गईं।
आप समाज सुधार के कार्यों मे भी सदा अग्रणीय रही।

श्रीमती अंजनादेवी चौधरी

●●

श्री लादूराम जोशी

श्री लादूराम जोशी, गाधीवादी पीढी के तपोनिष्ठ वयोवृद्ध नेता हैं। श्री जोशी का जन्म सीकर के समीप सूडवाड़ा गांव मे सम्वत् १९५२ मे हुआ। श्री जोशी का राजस्थान मे स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी के रूप मे उल्लेखनीय स्थान है। श्री जोशी ने महात्मा गाधी से प्रेरित होकर तत्कालीन सामंती-शासन की नीतियों एवं उत्पीड़न का कडा विरोध किया। सन् १९२० से १९४७ तक आपने गाधीजी के नेतृत्व मे स्वतन्त्रता-सग्राम मे भाग लिया और कई बार गिरफ्तार होकर जेल गये। बिजौलिया आन्दोलन मे भी आपने सपत्नी भाग लिया।

श्री प्यारचन्द विश्नोई

श्री प्यारचन्द विश्नोई ने सन् १९३० मे पहली बार गांधी साहित्य और महापुरुषों की जीवनियां पढ़कर क्रांति का संकल्प लिया। प्रारम्भ में उन्होंने खादी-कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य शुरू किया और फिर सक्रिय रूप से स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े। आपने बिजौलिया किसान-आन्दोलन में भी भाग लिया। आप पर मुकदमा चला और जेल तथा जुर्माने की सजा हुई। सन्१९३२ मे असहयोग आन्दोलन एवं १९३३ में विदेशी कपड़ों के बहिष्कार-आन्दोलन आदि में भी हिस्सा लिया। आपने मेवाड़ में प्रजा मण्डल मे भी भाग लिया।

••

श्री चुन्नीलाल चित्तौड़ा का जन्म सम्वत् १९५७ में हुआ। आप शिक्षा प्राप्ति के बाद सम्वत् १९७० मे स्वतंत्रता-सग्राम में शामिल हो गये। इन्होने बिजौलिया किसान आन्दोलन के पक्ष मे तथा तत्कालीन शासकों के उत्पीडन के विरुद्ध आवाज बुलन्द की और आन्दोलन के दौरान गुप्त सदेश-वाहक के रूप में कार्य करते हुए दूर-दूर तक किसान-आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया। बगावत के आरोप में इन्हे सम्वत् १९७६ मे कठोर कारावास की सजा हुई।

श्री चुन्नीलाल चित्तौड़ा
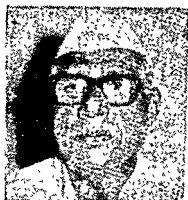
श्री गणपतलाल वर्मा

श्री गणपतलाल वर्मा का जन्म सन् १९१५ में हुआ। स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में इनका कार्य-क्षेत्र बिजौलिया व बेगूं सहित ऊपरमाल क्षेत्र रहा। राजस्थान सेवा संघ मे श्री विजयसिंह पथिक के नेतृत्व मे कार्य करते हुए आपने परिपक्वता अर्जित की। सन् १९३१ में आप तत्कालीन शासन द्वारा बन्दी बना लिये गये और आपको काफी यातनाएं भोगनी पड़ी। सन् १९४२ से १९४७ तक आप स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते रहे।

●●

श्री भंवरलाल शर्मा का जन्म सन् १९०४ में भीलवाड़ा जिले की मांडलगढ़ तहसील के लक्ष्मीनिवास गांव मे हुआ। श्री शर्मा ने अपनी किशोरावस्था से ही स्वाधीनता-संग्राम को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया था। उन्होंने "वार फण्ड के चन्दे" और चौरासी लागतों के विरोध में आवाज उठायी तथा खादी व जमीन-आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लिया। आन्दोलन के दौरान आपको विभिन्न प्रकार की यातनाएं झेलनी पड़ी।

श्री भंवरलाल शर्मा

ऊपरमाल क्षेत्र के छोटे नये गांव में सम्वत् १९६२ में जन्मे श्री घीसीलाल धाकड़ का पैतृक व्यवसाय खेती-बाड़ी का था। श्री धाकड़ किसान-आन्दोलन में सक्रियता से भाग लेते हुए कई बार गिरफ्तार हुए। श्री धाकड़ ने "वन्देमातरम्" नारे को बोलने पर लगी पाबन्दी और किसानों पर हुए जुल्मों का कड़ा विरोध किया।

श्री घीसीलाल धाकड़

••

श्री गंगाराम वह स्वतंत्रता सेनानी है जिन्हे तत्कालीन जेलों में जयलाल के नाम से जाना जाता था। श्री गंगाराम को शादी के लिए तोरण द्वार पर पहुँचने से पहले ही तत्कालीन शासन द्वारा बगावत के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और काफी यातनाएं दी गई। आपने सन् १९२२ मे "डंका" शीर्षक से प्रकाशित समाचार-पत्र का संचालन भी किया।

श्री गंगाराम
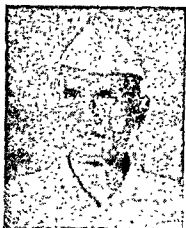
श्री हेमराज धाकड़

थड़ोदा (बिजौलिया) निवासी श्री वृद्धिचन्द धाकड़ के सुपुत्र श्री हेमराज अपने अध्ययन-काल से ही राष्ट्रीयधारा के अनुयायी हैं। आपने किसान-सत्याग्रह में वेगूं, बिजौलिया व अन्य स्थानों पर सक्रिय कार्य किया तथा कई बार तत्कालीन शासन के उत्पीड़न के शिकार हुए। "करो या मरो" आन्दोलन में आपने काफी जोश से भाग लिया। तत्कालीन शासन ने इन्हें गिरफ्तार कर इनकी भूमि व मकान आदि जब्त कर लिये। बाद में आप आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए।

••

श्री किशना भील ने अपनी युवावस्था से ही स्वतन्त्रता-आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया था। श्री माणिक्यलाल वर्मा आपकी प्रेरणा के स्रोत है। बिजौलिया किसान-आन्दोलन की मशाल को आपने दूर-दूर तक पहुँचाया और श्री वर्मा के साथ बरड़ (बूंदी) क्षेत्र के सूतडा, राजपुरा, गुंवार, गरड़दा आदि गांवों में घूम-घूम कर लोगों को रियासती शासन के खिलाफ आवाज उठाने के लिये जागृत किया। डाबी किसान-सम्मेलन के दौरान गोलीकांड में आपके पैर में गोली लगी। आप एक निष्ठावान, देशभक्त आन्दोलनकारी नेता रहे।

श्री किशना भील

श्री अमराजी भड़क बरड़ क्षेत्र के क्रांतिकारी श्री हरलाजी के द्वितीय पुत्र हैं। प्रारम्भ से ही अमराजी स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े थे। पुलिस ने जब उनके पिता एवं भाई देवाजी को गिरफ्तार कर लिया तो भी ये निराश नहीं हुये और जिंदादिली के साथ आगे बढ़ते रहे।

श्री अमराजी भड़क

●●

श्री बिरदीचन्द धाकड़ का जन्म सन् १९०५ में बेगूं तहसील के रायता गांव में हुआ। सन् १९२० में तत्कालीन शासन की ८४ लागतों के विरुद्ध आवाज उठाते हुये आप किसान-आन्दोलन में शामिल हुये। आन्दोलन के दौरान आप कई बार बंदी बनाये गये। आपने खादी कार्यकर्त्ता के रूप में भी कार्य किया।

श्री बिरदीचन्द धाकड़

श्री माणिक्यलाल वर्मा

पथिकजी से प्रेरणा पाकर श्री माणिक्यलाल वर्मा, बिजौलिया ठिकाने की नौकरी छोड़ कर बिजौलिया के किसान-आन्दोलन को सपत्नी समर्पित हुए। श्री वर्मा आजादी के आंदोलन में भी बराबर भाग लेते रहे और कई बार जेल गये। पथिकजी के नेतृत्व में सफल हुए बिजौलिया आन्दोलन के बाद श्री वर्मा की पेशकश पर पथिकजी नेतृत्व से अलग हो गये और बिजौलिया क्षेत्र को जीवन-पर्यन्त श्री वर्मा ने सम्भाला। आप मेवाड़ प्रजा मण्डल आन्दोलन मे कई बार जेल गये व काफी यातनायें सहीं। आप छोटे राजस्थान के मुख्य मंत्री भी रहे।

••

श्री गोकुलचन्द धाकड का जन्म सन् १९०८ में बेगूं तहसील के शादी गांव में हुआ। बेगूं में किसान-आन्दोलन के समय आपने गीत गा-गा कर लोगों मे चेतना जागृत की। आन्दोलन में लगे रहने से पढाई छूट गई। श्री धाकड़ ने प्रजामण्डल पर तत्कालीन शासन द्वारा लगाई गई पाबन्दी का विरोध किया और वे बागी घोषित किये गये। आप कई बार गिरफ्तार हुए। श्री धाकड ने १९४२ मे भारत छोडो आन्दोलन में भी सक्रिय हिस्सा लिया। सन् १९४५ मे आपने एक स्कूल खोला और शिक्षण कार्य में जुट गये।
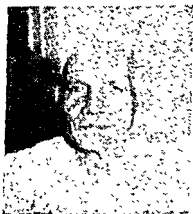
श्री गोकुलचन्द धाकड़
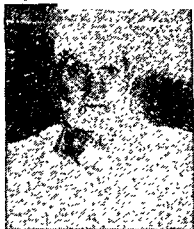
श्री घनश्यामलाल जोशी का जन्म बेंगू क्षेत्र के सूलीमगरा गांव के एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। ८५ वर्षीय अविवाहित श्री जोशी अपनी किशोरावस्था से ही बिजौलिया किसान-आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लग गये थे। बेंगू ठिकाने के तत्कालीन राव को इनके आन्दोलन मे सम्मिलित होने का पता लगा तो इन्हें बन्दी बना लिया गया और काफी यातनाएं दी गईं। इनके परिवार को भी परेशान किया गया।

श्री घनश्यामलाल जोशी

••

बेंगू क्षेत्र के दौलतपुरा गाव के श्री लखमीचन्द धाकड़ ने बिजौलिय आन्दोलन और स्वतंत्रता-संग्राम महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने के दौरान किसानो का सशक्त नेत और रियासती दमनचक्र के खिला बुलन्द की।
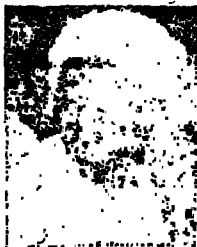
श्री लखमीचन्द धाकड़

भारत की प्रथम सफल किसान-क्रांति के जन्मदाता

श्री विजयसिंह "पथिक"

—आज से लगभग २९ वर्ष पूर्व स्व० श्री जगदीशप्रसाद "दीपक" एवं श्री मोहनराज भण्डारी द्वारा सम्पादित "श्री विजयसिंह पथिक" (संक्षिप्त जीवन-झांकी) पुस्तक के सौजन्य से शेष प्रायः सभी सामग्री।

—अपनी ओर से—

जिस व्यक्ति के नाममात्र से ब्रिटिश-सरकार की छत्रछाया में चलने वाले देशी रजवाड़े थर-थर कांपते हों और जिस व्यक्ति के सिर के लिये इनाम की घोषणा कर रखी हो, उस व्यक्ति के कार्यों की कल्पना कीजिए।

रजवाड़ों और ब्रिटिश-सरकार की दोहरी गुलामी में जकड़ी हुई जनता में क्रान्ति की आग उत्पन्न करना पथिक जैसे लौहपुरुष का ही काम था। भारत की गरम और नरम दोनों ही क्रान्तियों में राजस्थान केसरी स्व. श्री विजयसिंह पथिक का पूरा-पूरा हाथ रहा।

श्री भूपसिंह सन् १९०७ से रासबिहारी बोस के क्रान्ति-यज्ञ के कर्मठ दूत बनकर सन् १९१४ में राव गोपालसिंह से पूर्व टाडगढ़-नजरबन्दी से फरार हुए थे। वह अपने नये विजयसिंह पथिक नाम से सुदूर मेवाड़ के बिजौलिया-क्षेत्र के किसानों का भारत विख्यात संगठन और सत्याग्रह का आयोजन कर अमर नाम हो गये। देश को उनकी तीसरी और सबसे बड़ी देन सन् १९२९ से १९३५ तक गांधीजी और क्रान्तिकारियों के समस्त क्रियाकलापों में भाग लेना था।

पं. जवाहरलाल नेहरू की पहली अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन ने पूर्ण स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा लेने का दिवस २६ जनवरी निश्चित किया तो अजमेर प्रदेश कांग्रेस का सैनिक नेतृत्व करने वाले पथिकजी ही थे। आपका उस दिन के लिए लिखा हुआ "प्राण मित्रों भले ही गंवाना पर न झण्डा यह नीचे झुकाना" वर्षों तक जनता में प्राण फूंकता रहा।

पथिकजी एक सफल संगठनकर्ता, पुरातत्ववेत्ता, सम्पादक, लेखक, कवि और नेता थे। पथिकजी का कार्यकाल वह था जब काम करना तो दूर, राजनीति की चर्चा करना मौत को निमंत्रण देना था।

पथिकजी ने अपने निम्नलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए जो कष्ट झेले और यातनाएं भुगती हैं उनकी हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं—

यश वैभव सुख की चाह नहीं, परवाह नहीं जीवन रहे न रहे।
यदि इच्छा है तो यह है, जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

नेताजी सुभाष बोस से पूर्व ही पथिकजी अपने उद्देश्य के पीछे पागल बने हुए थे। रूस के ट्राट्स्की की भांति पथिकजी ने भी स्वराज्य को देखा। इन पंक्तियों को लिखते समय जब स्वयं हमारी आंखों में आंसू छलछला रहे हैं तब पढ़ने वालों की आंखें डबडबाने लग जाये तो क्या आश्चर्य !

पथिकजी का रेलवे कारखाने के मजदूरों का संगठन भी उनकी बिजोलिया की किसान-क्रान्ति की ऊंचाई को छूने लगा ही था कि इसी बीच कांग्रेस ने अपने नमक-सत्याग्रह के नेतृत्व के लिए उनके मौलिक-चेता संगठनशील व्यक्तित्व का बलिदान लिया और मजदूर संगठन का राष्ट्रव्यापी स्तर बनते-बनते अपनी उसी हालत में पड़ा रह गया।

समाजवादी दृष्टिकोण के पथिकजी ने अपने लिए खुले स्वागतार्थ *गांधीवादी द्वार में प्रवेश नहीं किया सो नहीं किया। स्वयं गांधीजी को अपने* शब्दों में कहना पड़ा कि "पथिक" एक जिद्दी आदमी है।

यदि पथिकजी पूंजीवादी बोझ से सदा गांधीवादी चोला पहन लेते तो गांधीजी को सत्ता के बंटवारे में डा. राजेन्द्र बाबू के लिए किसी नये पद की खोज करनी पड़ती।

प्रस्तुत पुस्तक में पथिकजी के विस्तृत क्रान्तिकारी चरित्र के सम्बन्ध में उपलब्ध सामग्री का अंश मात्र ही उपयोग हो सका है क्योंकि इस साधनहीन प्रान्त ने हमारे पर काट रखे हैं।

आगामी ९ मार्च को पथिकजी का जन्म दिवस है। अतः केवल दो दिन की तैयारी में सामग्री के संकलन से लेकर प्रकाशन तक जो कुछ बन पड़ा वह पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

बन्धु कार्यालय
नया बाजार, अजमेर
फागुण शुक्ला सप्तमी
सं० २०२१

जगदीशप्रसाद "दीपक"
मोहनराज भण्डारी
सम्पादक

पथिकजी के प्रति प्रचलित लोकगीत

दोहरी गुलामी से जकड़ी हुई राजस्थानी जनता में उन दिनों पथिकजी के प्रति कितना प्रेम और श्रद्धा थी इसका अनुमान निम्न-लिखित लोकगीत से सहज ही लगाया जा सकता है जो घर-घर महिलाएं गाया करती थीं—

धन्य-धन्य पथिक महाराज, राजस्थान जगाने वाले।
कभी था यह वीरों का स्थान, आज है मिला धूल में मान।।
आपने आकर रक्खी शान, राष्ट्र के सूत्र कहाने वाले।।धन्य०।।
कृषक जो थे अति दुर्बल-दीन, हो चुके मनुष्यत्व से हीन।
हो रहे बेबस तेरह तीन, उन्हों में एक्य बढ़ाने वाले।।धन्य०।।
प्रथम ले बिजोल्या को साथ, बढ़ाया जग में अपना हाथ।
कराया फिर कांग्रेस का साथ, देश में शक्ति जगाने वाले।।धन्य०।।

इतना ही नहीं, ग्रामीण नारियां कुलदेवी की पूजा करते समय झूम-झूम कर पथिकजी के सम्बन्ध में गाया करती थीं—

म्हानें विजेसिंह आय जगायो, ए मायं थारो गुण नहीं भूलां।
मांने जूत्या सू पिटता बचायो, ए माय थारो गुण मैं नहीं भूलां।।
मांका टाबराने वीर बणाया, ए मांय थारो गुण०।
मांकी डूबती जाति ने बचाई, ए मांय थारो गुण०।।
मांने देश-प्रेम सिखलायो, ए मांय थारो गुण०।
मांने सारो सांचो ज्ञान करायो, ए मांय थारो गुण०।।
मांने सत्याग्रह को पाठ पढ़ायो, ए मांय थारो गुण०।
राजवाला ने नीचो दिखायो, ए मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां।।

—:o:—

★ मैं, "पथिक" के बारे में कुछ बतला सकता हूं। पथिक एक सिपाही आदमी है, बहादुर है, जोशीला है और तेज मिजाज है लेकिन जिद्दी है। जब महादेव बिजौलिया गये तब पथिक उनके निर्भ्रान्त साथी थे। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बिजौलिया की जनता का उन पर पूरा-पूरा विश्वास है।

—महात्मा गांधी

●

★ मैं दावे के साथ कहता हूं कि गांधीजी के आश्रम से पथिकजी का राजस्थान सेवा संघ कई दृष्टियों से बहुत आगे था।

—रामनारायण चौधरी
[वयोवृद्ध गांधीवादी नेता]

●

★ पथिकजी की सेवाएं इतनी विस्तृत और व्यापक हैं कि उन पर जितना प्रकाश डाला जाय थोड़ा है।

पथिकजी सच्चे अर्थों में तपस्वी और त्यागी नेता थे। नव राजस्थान और नव जागरण के श्री विजयसिंह पथिक निर्माता हैं। उनका नाम इतिहास में सदैव स्वर्ण-अक्षरों से लिखा जायेगा।

—मुकुटबिहारीलाल भार्गव
एम पी
[अध्यक्ष—प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, अजमेर राज्य]

●

★ पथिकजी ने उन दिनों राजस्थान की रियासतों में राजनीतिक-जागृति और आन्दोलन शुरू किए जब कि रियासतों में लोग राजनीतिक शब्द से भी भय खाते थे। उस समय पथिकजी जागृति के एकमात्र नेता माने जाते थे। प्रसिद्ध बिजौलिया-आन्दोलन के वह संचालक रहे हैं। उनकी अध्यक्षता में राजस्थान सेवा संघ और उनके सम्पादकत्व में "राजस्थान केसरी", "तरुण राजस्थान" आदि पत्रों ने इस जागृति को फैलाने का बहुत काम किया।

नमक-सत्याग्रह में प्रांन्तीय काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष की हैसियत से भी पथिकजी जेल गये थे। वह एक अच्छे विचारक, लेखक, सम्पादक और संगठनकर्ता थे। उनकी सेवाएं राजस्थान के इतिहास में एक विशेष स्थान रखती हैं। वह त्याग और कष्ट सहन की शक्ति में बढ़चढ़ कर थे।

—हरिभाऊ उपाध्याय
[मुख्यमंत्री—अजमेर राज्य]

●

★ राजस्थान में यदि मैं किसी से प्रभावित हुआ तो श्री विजयसिंह पथिक से। पथिक जैसे देशभक्त का अन्तिम समय जिस प्रकार व्यतीत हुआ वह कांग्रेसी शासन के लिए शर्म की बात है।

—स्वामी कुमारानन्द

[राजस्थान के वयोवृद्ध कम्युनिस्ट नेता]

•

★ राजपूताने में जिस प्रकार के नेता और कार्यकर्ता पैदा हुए हैं उस तरह के दुनिया के किसी भी कोने में पैदा नहीं हुए।

निस्सन्देह बंगाल में क्रान्तिकारियों का पलडा कुछ भारी रहा है। लेकिन चहुँमुखी सेवाओं मे बराबरी की टक्कर के नेता प्राय: कहीं नहीं मिलते हैं।

त्याग और सेवा में राजस्थान सदैव इतिहास में अपना प्रमुख स्थान बनाता आ रहा है।

पथिकजी के कार्य इतने महान हैं कि हम उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

—दुर्गाप्रसाद चौधरी

(सम्पादक—दैनिक "नवज्योति")

•

★ मोमबत्ती एक तरफ से जलती है लेकिन पथिकजी की जीवन-रूपी मोमबत्ती दोनों तरफ से जलती थी।

अजमेर में गिब्सन पर श्री रामचन्द्र बापट ने जो गोली चलाई थी, वह रिवाल्वर हमें पथिकजी के द्वारा ही प्राप्त हुआ था। यदि पथिकजी से रिवाल्वर प्राप्त न होता तो हमारे अरमान हमारे मन में ही रह जाते।

पथिकजी एक महान् व्यक्ति थे।

—ज्वालाप्रसाद शर्मा

एम.पी.

[अध्यक्ष—नगर कांग्रेस कमेटी अजमेर]

•

★ श्री विजयसिंहजी पथिक से मेरा जो सम्पर्क आया, उसमें मैंने उन्हें एक जीवित आत्मा पाया।

— ब्रिजलाल बियाणी

[वित्तमंत्री— मध्य प्रदेश]

•

★ पथिकजी के कार्यो से मैं चमत्कृत था।

—डा. धीनार्थसिंह

[सुप्रसिद्ध साहित्यकार]

•

★ पथिकजी का स्तर महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू के मुकाबले का था।

—काका तिलोकचंद

[सम्पादक—' हिन्दू" (सिंधी) दैनिक अजमेर]

•

★ देश की विशेषकर राजस्थान की पथिकजी ने जो सेवाएं की हैं वे भुलाई नहीं जा सकती हैं। त्याग और कष्ट-सहन में पथिकजी अजोड़ व्यक्ति थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी पूर्व की भांति उनकी शक्ति का उपयोग लिया जाता तो राष्ट्र-निर्माण के कार्यों को चेतना और गति मिलती।

— सुखसम्पत्तिराय भण्डारी

[वयोवृद्ध साहित्यकार]

•

★ यह वह प्रदेश है, जहां बिजोलिया का विजयी नेता, सरदार पटेल की टक्कर का योद्धा वीर श्री विजयसिंह "पथिक" अपनों और बेगानों से उपेक्षित होकर निर्वासित सा, मथुरा, मन्दसौर और मेवाड़ में कृषि-जीवन बिताने को विवश किया जा सकता है।

—श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

•

★ एक बार गांधीजी को किसी ने सत्याग्रह के सम्बन्ध की जानकारी के लिए लिखा तो गांधीजी ने उस व्यक्ति को उत्तर में लिखा कि सत्याग्रह की जानकारी करना चाहते हो तो पथिकजी से कीजिए।

पथिकजी एक महान् व्यक्ति थे। उनका सारा जीवन मुसीबतों और कष्टों के बीच व्यतीत हुआ। यदि पथिकजी आज के अवसरवादी राजनीतिज्ञों की भाँति तोड़फोड़ और सांठगांठ के हत्थकण्डों का प्रयोग करते तो वे अपने जीवन में बहुत बड़े सत्ताधीश होते।

—पं० जियालाल आर्य

[आर्यसमाजी नेता]

•

श्री पथिक को कौन नहीं जानता !

राजस्थान में श्री विजयसिंह "पथिक" को कौन नहीं जानता! सच बात तो यह है कि पथिकजी ही राजस्थान के नवजीवन और नव जागरण के जन्मदाता हैं।

भारत में सबसे पहिले श्री पथिक ने ही बिजोलिया में सत्याग्रह का सूत्रपात किया था, सत्याग्रह के प्रवर्तक महात्मा गांधी ने उसके पश्चात् चम्पारन में सत्याग्रह का चमत्कार दिखाया था। उन दिनों पथिक के नाम से देशी रजवाड़े थर-थर कांपते थे। उनके लिए पथिक क्या था मानो एक भयंकर हौवा था। पथिक को जिन्दा पकड़ लाने अथवा मारकर उसकी लाश लाने वाले व्यक्ति को कई रजवाड़ों ने इनाम देने की घोषणा कर रखी थी।

महात्मा गांधी ने एण्ड्रूज साहब को पथिकजी का परिचय देते हुए कहा था कि राजपूताने में काम करने वाला तो बस एक पथिक है, बाकी सब बात बनाने वाले हैं।

उन दिनों राजपूताने में राजनीति की चर्चा करना मानो तलवार की धार पर चलना था। जिन लोगों ने पथिक के चरणों के पास बैठकर देश-सेवा की शिक्षा पाई थी उनमें से कई तो मिनिस्टर तक हो गये और सत्ता एवं प्रभुता के मद मे उन्होंने पथिक को प्रतिक्रियावादी तक कह कर अच्छी गुरु-दक्षिणा चुकाई है।

—स्वामी भवानीदयाल सन्यासी

[साहित्य वाचस्पति]
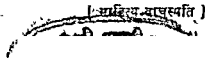
★ राजस्थान की (सामान्तवादी) सरकारें श्री विजयसिंह पथिक के नाम से कांपती थी और अंग्रेज उनके नाम से डरते थे। वे एक बड़े कूटनीतिज्ञ और अद्भुत व्यक्ति थे। उनकी एक कविता "प्राण मित्रों भले ही गंवाना पर न झण्डा नीचे झुकाना", हम जेल-यात्री रोज प्रार्थना के समय गाते थे।

किसानों मे राजनैतिक दृष्टि से काम करने वाले पथिकजी पहले आदमी थे जिन्होंने किसानों के आन्दोलन को हाथ में लिया और सफल किया। वे *बिजोलिया-आन्दोलन के आदि प्रवर्तक थे।*

—जयनारायण व्यास

[भू. पू. मुख्यमंत्री-राजस्थान सरकार]

•

★ राजस्थान की जागृति मे पथिकजी का प्रबल हाथ रहा है। पथिकजी केवल नेता, कार्यकर्ता, वीर, त्यागी, तेजस्वी क्रांतिकारी ही नहीं थे, वे सुकवि, गीतकार, सशक्त लेखक, सफल पत्रकार और राजस्थान के साहित्य के मर्मज्ञ भी थे।

बहुत कम लोगों को पता होगा कि वे बहुत बड़े मौलिक विचारक और चिन्तक भी थे। *इतिहास की अनेक गुत्थियों को उन्होंने अपनी* प्रचण्ड प्रज्ञा और सतत अध्ययन शीलता से सुलझाया था। आर्यों के आगमन, सृष्टि के प्रारम्भ, प्रलय के काल पर पुराणों और इतिहास-ग्रंथों से बड़े ही मौलिक तथ्यों का अन्वेषण किया था। उन्होंने सैकड़ों पृष्ठ इस सस्कृतिक अध्ययन अन्वेषण पर लिखे है जो वास्तव में अत्यन्त महत्व के हैं।

—श्री सूर्यनारायण व्यास

[प्रसिद्ध साहित्यकार एव पत्रकार]

•

★ समाचार-पत्रों में जहां कही राजस्थान का नाम आता, वही *पथिकजी का नाम दीख पड़ता।*

देशी रियासतों की अत्याचार-पीड़ित मूक जनता का जब कभी जिक्र आता, लोग पथिकजी का नाम लेते। मित्रों से जब कभी बातचीत होती, वे कहते "भाई! काम करने वाला तो एक ही है—पथिक।"

—बनारसीदास चतुर्वेदी

[प्रसिद्ध वयोवृद्ध लेखक एवं पत्रकार]

•

★ मैं पथिकजी को देखकर निराशा के घेरे से बाहर आ जाता था। उनसे मुझे सदैव प्रेरणा और उत्साह प्राप्त होता था।

—बाबा नृसिंहदास अग्रवाल
(क्रान्तिकारी विचारक)

●

★ राजस्थान केसरी श्री विजयसिंह "पथिक" सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न एक ऐसे महापुरूष थे जैसे सहस्त्रों वर्षो में एकाध ही होते हैं। यह महान् आत्मा जहां लैनिन की टक्कर की जन-क्रान्तिकारी साबित हुई वहां महाकवि और मौलिक मेधा सम्पन्न महान् साहित्यकार एवं कुशल पत्रकार भी अपने युग की एक ही थी। क्रान्ति के तीन दौर का नेतृत्व इस महापुरूष ने दस-दस बरस करके तीन बार किया।

—जगदीशप्रसाद "दीपक"
(प्रसिद्ध पत्रकार)

●

★ मेवाड़ में जिस तरह हल्दीघाटी के नाम के साथ प्रताप का नाम जुड़ा हुआ है उसी प्रकार पथिकजी के नाम के साथ बिजौलिया अपने आप याद आ जाता है।

हल्दीघाटी में जाते ही चेतक घोड़े की टापें सुनाई देती है, इसे मनोवैज्ञानिक कहिये अथवा भावात्मक किन्तु यह सत्य है कि वहां और विचार उठता ही नही। उसी तरह बिजौलिया क्षेत्र में जाने पर पथिकजी की गूंज सुनाई देती है।

—कुम्भाराम आर्य
(किसान-नेता)
एवं भू. पू. मन्त्री–राजस्थान सरकार

●

★ श्री विजयसिंहजी पथिक राजस्थान के लाखों शोषित, पीड़ित और पद-दलित किसानों के त्राता के रूप में सदैव स्मरण किये जायेंगे और इस पिछड़े प्रदेश की, जन-जागृति के आप जनक रहे हैं, इस को कोई भी अन्यथा सिद्ध नही कर सकता।

—युगलकिशोर चतुर्वेदी
(पुराने पत्रकार एवं भू. पू. मंत्री–राजस्थान सरकार)

●

★ पथिकजी नि.सन्देह युग-पुरुष थे। उनके अदम्य साहस, शक्ति और विलक्षण बुद्धि से मैं सदैव अत्यन्त प्रभावित रहा। राजस्थान जैसे पिछड़े हुए प्रान्त में सन् १९१३ में किसानों की दशा अत्यन्त चिन्ता-जनक थी। उन पर हो रहे जुल्म अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुके थे। ऐसे विकट समय में श्री विजयसिंह पथिक किसानों के उत्थान के कार्य में इस तरह व्यस्त थे मानो किसी कुटुम्ब पर भयंकर आपत्ति आने पर उस कुटुम्ब का मुखिया होता है।

सन् १९१५ के बाद पथिकजी ने एक ऐसा अद्‌भुत संगठन स्थापित किया कि जिसकी मिसाल इतिहास में ढूंढे नहीं मिलती है। मेवाड़ जैसे पिछड़े प्रान्त में और महाराणा फतेहसिंह जैसे कठोर और सतर्क शासक के राज्य में पथिकजी ने किसान-क्रांति का जो नेतृत्व किया है वह स्वयं प्रमाणित करता है कि पथिकजी की नेतृत्व-शक्ति कितनी महान् और ठोस थी। उनका साहस नापा नहीं जा सकता, उनकी बुद्धि का तोल नहीं किया जा सकता है।

महाराणा फतेहसिंह को उनके एक अत्यन्त शुभचिंतक, और जिम्मेदार अंग्रेज मित्र ने कहा था कि पथिक बड़ा खतरनाक व्यक्ति है, वह एक ऐसी आग पैदा कर रहा है जो सम्पूर्ण राजस्थान में बिजली की तरह फैल जायगी। और वास्तव में हुआ भी यही।

पथिकजी का सम्पूर्ण जीवन मुसीबतों और कष्टों से लड़ते-लड़ते व्यतीत हुआ है। इस आदमी ने जीवन में कभी विश्राम नही किया। पथिकजी युग-प्रवर्तक थे।

—डा० अम्बालाल शर्मा
एम.एल ए.
[प्रसिद्ध जन सेवी]

★ राजस्थान में जन-जागृति के अग्रदूत श्री विजयसिंह पथिक एक असाधारण कोटि के पुरुष थे। उनके हृदय में देश की स्वतंत्रता और राजस्थान की मूक और पीड़ित जनता के उद्धार की एक प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित हुई थी, जिसने बहुतों को इस पथ का पथिक बनाया।

बिजोलिया के किसान स्त्री-पुरुष पथिकजी को अपना उद्धारक मानते थे और उन्हें "महात्मा" कहकर पुकारते थे।

मनुष्य के जीवन में उतार-चढाव आते है। एक समय पथिकजी की लोकप्रियता चरमसीमा पर पहुँच गई थी। किन्तु जीवन के अन्तिम वर्षों में वह अज्ञात लोक में चले गए थे। स्वराज्य आया। ब्रिटिश-भारत और देशी रियासतों का भेद मिट गया। रियासती जनता ने स्वतत्रता की वायु में सांस लिया। पथिकजी ने देश की मुक्ति का जो स्वप्न देखा था वह साकार हुआ। यह आशा थी कि स्वतन्त्र भारत में पथिकजी जैसे लोगों की प्रतिभा और शक्ति का नव-भारत के निर्माण में उपयोग होगा। किन्तु स्वराज्य के साथ आपा-धापी का युग आया है। पुरानों को धक्का देकर, नीचे गिराकर, खुद आगे बढ़ जाने का यह जमाना है। इस आपा-धापी के जमाने में पथिकजी को ७२ वर्ष की अवस्था में अज्ञात सिपाही की मौत मरना पड़ा। यह गनीमत हुई कि उनका अन्तिम संस्कार उनकी शान के अनुरूप हो पाया। आज राजस्थान की राजनीति और सार्वजनिक जीवन में अनेक झूठे-सच्चे हीरे चमक रहे हैं, किन्तु कौन है जो त्याग, कष्ट-सहन और कर्मण्यता में पथिकजी की बराबरी कर सके? नव-राजस्थान के निर्माण में अपनी हड्डी पसली गला देने वाले इस शहीद की स्मृति में मेरा सिर श्रद्धा से नत हो जाता है। काश कि मृत्यु के बाद भी हम उनके प्रति न्याय कर सकें।

—शोभालाल गुप्त
(प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक)

बिजौलिया किसान-आन्दोलन का पटाक्षे

सन् १६२२ में बिजौलिया किसान-आन्दोलन की शानद सफलता के बाद आन्दोलन के प्रणेता श्री विजयसिंह पथिक को नाटक तरीके से जेल की लम्बी सजा दी गई। इधर श्री माणिक्यलाल व किसानो के नेता बन बैठे। सन् १६२६ में ठिकाना पुन: लाग बाग औ ऊची दरो से लगान वसूल करने लगा जब कि अति वृष्टि तथा अनावृ से किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी।

फिर संघर्ष की शुरूआत हुई। इसी बीच पथिकजी जेल व अवधि समाप्त कर छूटे। यद्यपि बिजौलिया की किसान पंचाय पथिकजी के जेल से रिहा होने से पूर्व ही निर्णय ले चुकी थी कि लगा की ऊची दरे निर्धारित करने के विरोध में सभी किसान माल व जमीन का इस्तीफा दे दे। पथिकजी ने किसानों को खूब समझाया वि उन्हें ऐसा तभी करना चाहिए जब कि उन्हें यह पक्का विश्वास हो वि उनकी इस्तीफा दी हुई जमीनों को अन्य लोग नही खरीदेंगे।

किसानों ने पथिकजी की उक्त सलाह पर गहराई औ गम्भीरता से ध्यान नही दिया और यह विश्वास लेकर अपनी जमीनों से मई १६२७ में इस्तीफा दे दिया कि उन्हें अन्य कोई नही खरीदेगा। ठिकाने ने इन जमीनों को नीलाम किया और अन्य लोग जमीनें खरीद गुजरें। किसान बुरी तरह मात खा गये।

सेठ जमनालाल बजाज, हरिभाऊ उपाध्याय और माणिक्यलाल वर्मा के नेतृत्व में किसानों को अपनी जमीनें वापिस प्राप्त करने में भारी मुसीबतों और कष्टों के बीच होकर ५ वर्षो तक गुजरना पड़ा और अन्त में जाकर द्वितीय चरण के इस आन्दोलन का पटाक्षेप सन् १६३१ में हुआ।

—:—

राजस्थान मे राष्ट्रीयता के जन्मदाता पं० अर्जुनलाल सेठी का सम्पूर्ण जीवन देश-सेवा में व्यतीत हुआ। वे राष्ट्रीय स्तर के नेता थे। आजादी के आन्दोलन मे कई बार जेल गये और जबरदस्त यातनाएं सहीं। एक समय ऐसा आया कि प्रान्त की गन्दी राजनीति से क्षुब्ध होकर सेठीजी सक्रिय राजनीति से अलग हो गये।

पं० अर्जुनलाल सेठी

सन् १९३४ मे महात्मा गांधी अजमेर आये तब वे सेठीजी से मिलने उनके घर गये तथा गांधीजी की आज्ञा शिरोधार्य कर पुन प्रान्त की राजनीति मे सेठीजी ने भाग लेना शुरू किया और वे राजपुताना व मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तपति चुने गये। विरोधियो ने किसी तरह यह चुनाव रद्द करवा दिया।

क्रांतिकारी विचारों के सेठीजी प्रान्त की गन्दी राजनीति से कोई समझौता करने को तैयार नहीं हुए और उनका अन्तिम समय बहुत ही दर्दनाक स्थितियो मे बीता। यहां तक कि उनकी मृत्यु की जानकारी भी आम लोगो को तीन दिन बाद हुई।

राजस्थान के केन्द्र नगर अजमेर में [illegible] "[illegible] सत्याग्रह" पुस्तक के प्रथम संस्करण का [illegible] मंत्री शिवचरण माथुर तथा उनके साथ [illegible] मोहनराज भण्डारी।